सो बूझे जिस आप बुझाए
भाग - स (३ दा २)

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

शाहरग : दर्शन देवे घर घर जन भगतां नर हरि उपर शाहरग, नौ दवार डेरा ढाईआ। (१५ भादरो २०२१ बि)
नौ दवारे सारे रहे भज्ज, भज्जण वाहो दाहीआ । कोई चढ़े ना उपर शाहरग, मंज़ल पन्ध मुकाईआ। (३ असू २०२१ बि)

साहिब सच्चा : साहिब सच्चा सो आखीए, आदि जुगादि समाए। साहिब सच्चा सो भाखीए, निरगुण सरगुण रूप वटाए। साहिब सच्चा अलक्खणा लाखीए, लेखा लिख ना सके कोई राए। साहिब सच्चा सगला साथीए, जुगा जुगन्तर वेख वखाए। साहिब सच्चा पुरख समराथीए, एकँकार नाउँ धराए। साहिब सच्चा सुणाए सच्ची गाथीए, सो पुरख निरञ्जण नाउँ उपजाए। साहिब सच्चा इक्क जणाए पूजा पाठीए, हँ ब्रह्म मेल मिलाए। साहिब सच्चा चलाए सच्चा राथीए, हरिजन साचे लए चढ़ाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता इक्क अखवाए।
साहिब सच्चा पाईए, हरि सतिगुर गहर गम्भीर। साहिब सच्चा वेख वखाईए, सांतक करे सति सरीर। साहिब सच्चा घर साचे आप बहाईए, बिरहों विछोड़ा कट्टे पीड़। साहिब सच्चा दरगाह सच्ची दर्शन पाईए, लक्ख चुरासी कट्टे ज़ंजीर। साहिब सच्चा सचखण्ड निवासी इक्क ध्याईए, अमृत बख्शे ठांडा सीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वड दाता दानी गुणी गहीर।
साहिब सच्चा सुलतान, पारब्रह्म अखवाइंदा। साहिब सच्चा मेहरवान, सतिगुर नाउँ धराइंदा। साहिब सच्चा मेहरवान, साचे तख्त आसण लाइंदा। साहिब सच्चा मेहरवान, राज जोग आप कमाइंदा। साहिब सच्चा मेहरवान, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। साहिब सच्चा मेहरवान, तख्त निवासी वेस वटाइंदा। साहिब सच्चा मेहरवान, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। साहिब सच्चा हरि एका काहन, नाम बंसरी इक्क वजाइंदा। साहिब सच्चा हरि एका राम, सीता सुरती सर्ब परणाइंदा। साहिब सच्चा हरि एका जाण, हरिजन साचे मात तराइंदा। साहिब सच्चा

इक्क पछाण, माण निमाणयां आप अखवाइंदा । साहिब सच्चा एका देवे दानी दान, साची वस्त झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वड दाता आप अखवाइंदा। साहिब सच्चा सूरबीर, सो पुरख निरञ्जण वड वडयाईआ। साहिब सच्चा वड पीरन पीर, शहनशाह आप अखवाईआ। साहिब सच्चा दो जहाना घत्ते वहीर, लोआं पुरीआं दए हिलाईआ। साहिब सच्चा लेखा जाणे पीर फकीर, दस्तगीर वेख वखाईआ। साहिब सच्चा आपणे रंग रंगाए शाह हकीर, हक़ हकीकत दए सालाहीआ। साहिब सच्चा बेनज़ीर, लिख सके ना कोई छाईआ। साहिब सच्चा मेटे तकदीर, तदबीर आपणे हत्थ रखवाईआ। साहिब सच्चा आपे जाणे आपणी तकसीर, तस्वीर किसे ना हत्थ फड़ाईआ। साहिब सच्चा कट्टणहार ज़ंजीर, ज़ोरू ज़र रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सुलतान आप अखवाईआ।

साहिब सच्चा मेहरवान, हरि पुरख निरञ्जण आप अखवाइंदा। साहिब सच्चा झुलाए सच निशान, दरगाह साची आप चढ़ाइंदा। साहिब सच्चा एका देवे धुर फ़रमाण, ब्रह्मा विष्न शिव आप समझाइंदा। साहिब सच्चा जन भगतां रक्खे साचा माण, लोकमात वेख वखाइंदा। साहिब सच्चा जाणी जाण, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दरगाह साची सोभा पाइंदा।

साहिब सच्चा गुणी गहीर, पातशाह सिर शाह अखवाईआ। सतिगुर सच्चा हरिजन साचे करे सांत सरीर, अगनी तत्त ना कोई जलाईआ । साहिब सच्चा अमृत जाम प्याए साचा नीर, निर्मल आपणा रूप दरसाईआ। साहिब सच्चा साचा शब्द तन पहनाए बसतर चीर, सच कटार हत्थ फड़ाईआ। साहिब सच्चा कट्टणहारा भीड़, आदि अन्त होए सहाईआ। साहिब सच्चा बंनणहारा बीड़, गुण अवगुण ना कोई जणाईआ। साहिब सच्चा एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना वेख वखाईआ । साहिब सच्चा वसे धाम अनडीठ, थिर घर वासी बैठा आसण लाईआ। साहिब सच्चा गुरमुख मिलाए साचा मीत, घर साचे वज्जे वधाईआ। साहिब सच्चा इक्क सुणाए सुहागी गीत, सोहँ अक्खर वक्खर जगत पढ़ाईआ। साहिब सच्चा करे कराए पतित पुनीत, कोटन कोटी लए तराईआ। साहिब सच्चा हरि सन्तन वसे आपे चीत, चेतन्न रूप आप कराईआ। साहिब सच्चा आदि जुगादि ठंडा सीत, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ।

साहिब सच्चा हरि भगवन्त, भगवन खेल खिलाइंदा। साहिब सच्चा हरि साचा कन्त, गुरमुख नारी आप परनाइंदा। साहिब सच्चा काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, नाम मजीठी रंग रंगाइंदा। साहिब सच्चा हरि बेअन्त, भेव कोई ना पाइंदा। साहिब सच्चा महिमा अगणत, अलक्ख निरञ्जण अलक्ख अलक्खणा आप अखवाइंदा। सच्चा साहिब आदि अन्त, जुग जुग आपणा वेस धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी रचन रचाइंदा। (१४ चेत २०१७ बिक्रमी)

सास गरास : मात गरभ सास गरास दिवावे। (१५ विसाख २००८ बि)
लेखे लाए सास गरास, जो जन मदिरा मास तजाइंदा। (३ अस्सू २०१३ बि)

लहणा देणा चुका दे सास गरास दा, जन भगत गृहसती गृह आपणे लैणे मिलाईआ। (१६ जेठ श सं १)
जिन्हां गुरमुखां जपया स्वास स्वास, सनमुख हो के नज़री आईआ। ओन्हां लेखे ला के सास गरास, घर आपणे दए वसाईआ। (७ कत्तक श सं २) (जीवन ते रोज़ी)

साकी : गुरसिखां होया आप प्रभ साकी, अमृत साचा जाम पिलाया। (१ माघ २००७ बि)

साकी बण के जाम पिआया, नाम खुमारी चाढ़े इक्क कमाल। (२७ भादरों २०२१ बि)

कलिजुग कूड़ा बणया साकी, कूड़ कुड़िआर भर भर प्याले रिहा प्याईआ। (१८ माघ श सं ८) (खुमारी चढ़ाउण वाला)

साख्यात दरस : सच संदेसा सोहँ ढोला, सो पुरख निरञ्जण आप जणाइंदा। आत्म परमात्म बण विचोला, निरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। ना कोई पर्दा ना कोई उहला, साख्यात दरस दरसाइंदा। निज सरूप निज घर निज आत्म परमात्म वसे कोला, विछड़ कदे ना जाइंदा। भाग लगाए काया चोला, घर घर विच्च सोभा पाइंदा। (२४ चेत २०२० बि)

हरिजन साचे संग रक्ख, रक्खया आपणी आप जणाईआ। निरगुण रूप हो प्रतक्ख, साख्यात दरस कराईआ। सृष्ट सबाई नालों कर कर वक्ख, वक्खरा राह आप समझाईआ। हिरदे अन्दर आपे वस वस, आप आपणा मेल मिलाईआ। दिवस रैण अठ्ठे पहर सदा सुहेला गाए जस, जन भगतां आप सालाहीआ। सचखण्ड निवासी लोकमात निरगुण रूप आया नस्स, बण पान्धी पन्ध मुकाईआ। हरिजन देवे साची वत्थ, गुरमुख झोली नाम भराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग जुग उलटी गेड़नहारा लठ, गेड़ा आपणे हत्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन हरि जू आपणे लेखे पाईआ। (३१ हाढ़ २०१६ बि)

साचा समां : सतिगुर समां सभ तों चंगा, सच मिले वड्डिआईआ। लभ्भदा गिआ सिँघ रंगा, तन काया रंग रंगाईआ। बुध सिँघ भुक्खा नंगा, हो के सेव कमाईआ। बहौल सिँघ बण पतंगा, मसत मस्ताना फिरे वाहो दाहीआ। गुरमुख सिँघ चरन कँवल पा के ढंगा, असव भज्जे चाईं चाईंआ। तेजा सिँघ सूरा सर्बंगा, ज़ोरो ज़ोर रिहा वरवाईआ। बिन बन्दगीउँ दर आया कीता बन्दा, बंधन कोई रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा समां रिहा वड्डिआईआ।
साचा समां सिँघ मनी, मन मनसा नाल बणाईआ। साचा समां सतिगुर धनी, सच ख़ज़ाना आप वरताईआ। साचा समां सतिगुर नाल बणी, नाता तुटे जगत लोकाईआ। साचा समां सच वसेरा दिसे छप्पर छन्नी, छहबर अमृत गुर गुर लाईआ। साचा समां जुग चौकड़ी सभ नूं फिरदा भन्नी, अड़या कोई रहण ना पाईआ। धुर दा समां लक्ख चुरासी करे अंन्ही,

पुरख अकाल नज़र किसे ना आईआ। साचा समां मनमुखां रिहा डंनी, डंका आपणा नाम वजाईआ। साचा समां सभ दी ख़ाली करे कन्नी, राज राजानां ख़ाक मिलाईआ। साचा समां साचा नती, घर घर विच्च मेल मिलाईआ। साचा समां हरि हरि हरि संग नाल बणी, बन बनवाली वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा समां रिहा सुहाईआ।

साचा समां साचा मित्र, मीतन मीत अखवाइन्दा। साचा समां खेल खेलया बाज़ तित्तर, त्रैगुण भेव कोई ना पाइन्दा। साचा समां निरगुण निरवैर शब्दी धार आए नितर, पड़दा तत्त ना कोई वखाइन्दा। साचा समां सतिगुर वेखे चढ़ के चोटी सिखर, सिख्या आपणे हत्थ रखाइन्दा। लक्ख चुरासी विच्चों गुरमुख उजल जाए निख़र, कूड़ कुकर्म पड़दा आपे लाइन्दा। साचा समां चार जुग दी मेटे भिटड़, आत्म परमात्म भिटया कदे ना जाइन्दा। साचा समां जन भगतां उतों लाहे पूरब चिकड़, फड़ हत्थीं मैल धवाईआ। साचा समां सतिगुर मिलयां मिल के फेर ना जाए विछड़, अग्गे मेला सद रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

साचा समां सोभावन्त, घर वज्जे नाम वधाईआ। वैरागण पाया हरिजू कन्त, सुहागण ख़ुशी मनाईआ। सच चोली चढ़े रंग बसन्त, तन माटी सोभा पाईआ। घर उपजे मणीआ मंत, रस जिह्वा सिफ्त सालाहीआ। गढ़ तुट्टे हउमें हंगत, हरि चरन मिले सरनाईआ। गुरमुख बणदे रहे मंगत, दर बैठे अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा समां आप वरताईआ।

साचा समां सुहावणा, सोभावन्त सुहाए। पुरख अकाल सभ ने गावणा, गा गा ख़ुशी मनाए। इष्ट गुरदेव इक्को नज़री आवणा, हरिजन साचा सेव कमाए। दर दुआरा इक्क खुलावणा, धुर दरबारी आसण लाए। साचा मन्दर इक्क वड्डिआवणा, भगत वछल बेपरवाहे। साचे अन्दर सोभा पावणा, दीपक दीआ इक्क जगाए। साचा हुक्म इक्क वरतावणा, दो जहानां आप सुणाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा समां आप उपाए।

साचा समां देवे समझ, भेव अभेद खुलाईआ। हरि करता मारे इक्को रमज़, महीना रमज़ान ना कोई वड्डिआईआ। लेखा जाणे शाइत हमज़, आशक माअशूक दोवें कार कमाईआ। चार जुग जो करदा रिहा कफ़ाइत, कलिजुग अन्तम इक्को वार वरताईआ। गुर अवतारां जो करदा रिहा हदाइत, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, सो साहिब बण के आया आप मुसाहिब, मुसलसल आपणी कार कमाईआ।

समां कहे मैं सदा मुतफ़िक, मुतफ़रक कार ना कोई कराईआ। मेरा लेखा बिन लिखिउं देवे लिख, बेपरवाह मेरी तहरीर आप बणाईआ। दाता हो के पावे भिख, दानी झोली आप भराईआ। मेरी करनी आपे लए नजिठ, सिर मेरे हत्थ टिकाईआ। चार युग मैं सभ नूं दे के आया पिठ, मेरी समझ किसे ना पाईआ। अमृत रस करदा रिहा फिक, फिके कौड़े रूप वटाईआ। दीन मज़ूब ज़ात पात आपणे अन्दर वंडौंदा रिहा हिस, हिस्से गुर अवतारां नाल रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म आप वरताईआ।

साचा हुक्म वरताए एक, एकँकार वड्डी वड्डिआईआ। कलिजुग अन्त बख्शे साची टेक, टिक्का मस्तक नाम लगाईआ। कूड़ कुड़ावा टुट्टे हेत, हरि चरन मिले सरनाईआ। गुरसिख गुरमुख निज नेत्र दरसन पेख, रातीं सुत्यां खुशी मनाईआ। समां सुहावणा खेले खेड, जगत खलारी रिहा खिलाईआ। भगत भगवान माणे सेज, सेज सुहञ्जणी आसण लाईआ। जोती धार चमके तेज, तेज धार तलवार आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, समां गुरमुख सख़ीआ नाल सुहाईआ। (७ भादरों २०२० बि)

समां कहे मैं भगतां जोगा, हरि जू सेवा आप लगाईआ। अन्तर देवां अमृत चोगा, हँसां माणक मोती चुंज भराईआ। बाहरों सभ नूं देवां धोखा, साची समझ कोई ना पाईआ। बिन सतिगुर पूरे आदि जुगादि समां औखा, भीड़ी गली औझड़ राह, जम डण्ड ना कोई बचाईआ । जुग जुग देवां सच सलाह, सर्ब जीआं समझाईआ। करता पुरख लउ मना, कीमत आपे पाईआ। हाज़र कोलों बख्शाओ गुनाह, जो गिआ सो गिआ पल्लू छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ।

समां कहे मेरा उलट समाज, समझ कोई ना पाइन्दा। जुग जुग पलटा जगत राज, राजा परजा दोहां वेख वखाइन्दा। नित नवित्त करां नाच, दर दर घर घर डोरू वाइन्दा। खुशी नाल लगावां आंच, अगन अगनी रूप वखाइन्दा। भन्न वखावां कूड़ी माटी कांच, लक्ख चुरासी फोल फुलाइन्दा। नित नित जन भगतां हो के रहां दास, जिन्नां पुरख अकाल दया कमाइन्दा। निरधन हो के वसां पास, बलहीण सेव कमाइन्दा। वेले अन्तम पत लवां राख, पतिपरमेश्वर नाल मिलाइन्दा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा समां आप सुहाइन्दा।

साचा समां सदा सुहञ्जणा, जिस घर वज्जे नाम वधाईआ। सतिगुर धूढ़ी मिले मज़ना, चरन कँवल सरनाईआ। जगत विकारा मिटे हद्दना, गुरू दुआरा इक्को नज़री आईआ। आत्म गाए परमात्म छन्दना, ब्रह्म करे सच पढ़ाईआ। इक्को दुआरे साची बन्दना, बिन बन्दगीउं लेखा लए पाईआ। साची धूढ़ी निर्मल चन्दना, चन्द चांदनी नूर रुशनाईआ । सतिगुर मन्दर इक्को लँघणा, दूजा दर लँघण ना पाईआ। पुरख अकाल इक्को मंगणा, देवणहार सर्ब सुखदाईआ। लक्ख चुरासी तुड़ौणा फंदना, फासी अन्त कोई ना पाईआ। मिले मेल सूरा सर्बंगना, सूरबीर होए सहाईआ। साची गोदी बहणा अंगना, अंगीकार इक्क हो जाईआ। तन माटी चोला रंगणा, साची भट्ठी नाम चढ़ाईआ। सच दुआरिउँ कदे ना संगणा, सतिगुर मिले सहज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। समां कहे मेरा हक़ हकूक, हाकम नज़र कोई ना आईआ। जुग चौकड़ी मैं रिहा मसरूफ़, जुग जुग साची सेव कमाईआ। मेरे अन्दर दर दर घर घर धुखदे धूप, सच सुगंधी काया विच्चों बाहर ना कोई प्रगटाईआ। मेरे अन्दर कूड़ी क्रिया नच्चदी फिरे भूख, जीवां जंतां तृप्त ना कोई कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, समां साचा दए सुहाईआ ।

समां कहे मैं लग्गाँ सोहणा, सोहणी बणत बणाईआ। भगत भगवान इक्को होणा, दूजा भेख

ना कोई वटाईआ। जिन्नां दी चरनी बह के सौणा, सोवत खुशी मनाईआ। लक्ख चुरासी जीव रोणा, नेत्र नीर वहाईआ। खुलड़े केस सभ ने खोहणा, मींढी सीस ना कोई गुंदाईआ। टिल्ले पर्बत सारे टोहणा, डूंघी कवर भवर वेख वखाईआ। राज राजानां शाह सुलतानां बलधारी बल वेख वखौणा, वेला वक्त समझ कोई ना पाईआ। गुरमुख गुरसिख सच प्रीती मोहणा, मोहणी रूप निरगुण धार जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समां समरथ आप जणाईआ।

समें नाल आए समरथ, समरथ धार चलाईआ। जुग चौकड़ी देवे मथ, मथणहार बेपरवाहीआ। रहबर बण चलाए रथ, मार्ग इक्को इक्क दरसाईआ। सच संदेशा देवे हस्स हस्स, ढोला सोहला राग अलाईआ। अमृत आत्म प्रगटाए रस, निझर झिरना आप झिराईआ। सभ दा बस्ता बंन्ह के फेर करे ना बस्स, बग़लगीर किसे नाल नज़र ना आईआ। जो अड़या सो समें अन्दर जाए ढठ्ठ, समें दा मालक बेपरवाहीआ। जिस दा लेख अलखना अलख, ना कोई सके मेट मिटाईआ। कलिजुग अन्तम हो प्रगट, प्रभ आपणा हुक्म मनाईआ। जिस अग्गे समां जोड़ खलोता हत्थ, हत्थ पैर दो दो चार चार चार चार मंगण सरनाईआ। (७ भादरों २०२० बि)

साचा संग : साचा संग प्रभ बणाए। गुरमुख साचे आण तराए। साचा संग तोड़ निभाए। टुट्टी गंढे फिर टुट्ट ना जाए। साचा संग गुर अंग लगाए। मानस जन्म ना भंग कराए। साचा संग गुर सतिसंग रलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान होए सहाए।

साचा संग घर दर दिखावे। पूरा गुर बूझ बुझावे। साचा संग थिर घर निवास रखावे। साचा संग आवण जावण गेड़ चुकावे। साचा संग मानस जन्म सुफल करावे। मात कुक्ख विच्च फेर ना आवे। साचा संग थिर घर निवास रखावे। साचा संग आवण जावण गेड़ कटावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब सुखदाए साचा कर्म कमावे।

साचा संग गुर पूरा करे। चरन लाग गुरसिख तरे। साचा संग आत्म वास करे हरे। सोहँ स्वास स्वास जप जीव कलिजुग पार तरे। साचा संग एका नर हरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरा मूल ना डरे।

साचा संग प्रभ संग संगीत। आत्म देवे चरन प्रीत। साचा संग गुर मानस जन्म जग जीत। साचा संग प्रभ आत्म सदा अतीत। साचा संग साचा प्रभ साचा सति मीत। साचा संग मानस जन्म ना होवे भीत। साचा संग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग लक्ख चुरासी जावे जीत।

साचा संग गुर गुरमुख। आत्म उतरे सारी भुक्ख। साचा संग गुर साजण सुख। साचा संग दर घर आए नेत्र पिख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे साची देवे सिख।

साचा संग सच परीख्या। गुरमुख साचे साचा प्रभ साचा देवे सीख्या। साचा संग कर दरस आत्म मिटे तीख्या। साचा संग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ दान पावे भीख्या।

साचा संग भगत संग। आप निभावे आपणा संग। साचा संग अमृत नीर वहावे गंग। शब्द

नाउँ पार जाए लँघ। साचा प्रभ सच दान दर मंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई अंग संग।
साचा संग सच कर माण। आपणा आप जीव पछाण। साचा संग साचा माण ताण। सतिगुर साचा जाणी जाण। साचा संग वेख वखाण। होए निमाणा जन चरनी डिगे आण। साचा संग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सति सति कर जाण।
साचा संग सतिगुर सति साचा देवे साची मत। साचा संग साचा सति, सतिगुर साचा साची रक्खे पत्त। साचा संग इक्क रखावे साचा सति। साचा संग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेला गिआ ना आवे हत्थ।
साचा संग वक्त संभाल, चरन प्रीती निभे नाल। साचा संग गुरसिख साचे पाल, देवे वड्डिआई दीन दयाल। साचा संग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान।
साचा संग गुरसिख दीआ। अमृत नाम महांरस पीआ। आत्म जोत जगाए प्रभ दीआ। पूरब लहणा प्रभ साचे दीआ। गुरमुख साचे प्रभ दर लीआ। सोहँ साचा बीज आगे बीआ। प्रभ मिलन का आप बणाया साचा हीआ। गुरमुख साचे सचखण्ड रखाई तेरी नीआ। एका जोत एका आत्म जगाया दीआ। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा नाम गुर दर पीआ। (६ जेठ २००६ बि)

साचा कर्म : गुरचरन प्रीती कलिजुग साचा कर्म। (१४ सावण २००८ बि)
साचा कर्म निहकलंक सरनाया। (२३ सावण २००६ बि)
साचा कर्म धीरज सन्तोख। १६ भादरों २००६ बि)
साचा कर्म सच विहारा। (१ माघ २००६ बि)
साचा कर्म सच दी कार। (१४ जेठ २०१० बि)

हरि संगत तेरा सति सच दा धर्म , मानस जाती इक्को नज़री आईआ। प्रेम प्यार प्रीती दा सच्चा कर्म, दूजा कांड ना कोई बणाईआ। आत्म ब्रह्म अगम्मी (वरन), जिस दी जात ना कोई समझाईआ। पुरख अकाल सच्ची सरन, जिस दी ओट ना कोई छुडाईआ। धुर दा ढोला नाम पढ़न, गुर अवतार पैगम्बर गए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिख्या इक्क समझाईआ। (२२ फग्गण श सं १)

साचा घर : तेरा गृह मन्दर ठांडा दरबारा, सचखण्ड सोहे साचा घर बारा, जिस गृह बैठा आपणा आसण लाईआ। (२० भादरोंग्श सं १)
साचा घर जिथ्थे प्रभ वस्सया, गुरसिखा घर साचा मल। (६ चेत २००८ बि)

साचा दान : मानस बुद्धि बुद्ध बबेक कर चरन प्रीती देवे साचा दान, धुर दी रीती नीती आप समझाईआ। (१० सावण श सं २)
महाराज शेर सिँघ निहकलंक अवतार, सोहँ शब्द साचा देवे दान । (१७ हाढ़ २००८ बि)

साचा जीवण : सतिगुर सरनाई साचा जीवण, मिले माण वडयाईआ । चरन प्रीती साचा थीवण, पूरन आस कराईआ। नाम निधान गुरमुख पीवण, सच प्याला हत्थ उठाईआ। दोए जोड़ सदा सद नीवण, हँकार विकार ना कोई रखवाईआ। अमृत बीज इक्को बीवण, फल काया तन लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मार्ग आपे लाईआ। साचा जीवण सतिगुर सरन, सरनगत जणाइंदा। नेत्र खुल्ले हरन फरन, गृह मन्दर नज़री आइंदा। लेखा चुके मरन डरन, लक्ख चुरासी फंद कटाइंदा। मेल मिलावा तरनी तरन, भव सागर पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मार्ग आपे लाइंदा।

साचा जीवण सतिगुर ओट, ओट पुरख अकाल रखवाईआ। जन्म कर्म दा निकले खोट, कूड़ी क्रिया रहण ना पाईआ। नाम भंडार मिले अतोट, ख़ाली झोली दए भराईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ । वरन बरन रहे ना गोत, ज़ात इक्को इक्क जणाईआ। आवण जावण दी मुक्के सोच, लिखवत पढ़त ना कोई रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लोचा पूर कराईआ।

साचा जीवण सतिगुर रंग, सो साहिब आप जणाईआ। गुरमुख मंगे इक्को मंग, देवणहार बेपरवाहीआ। अठ्ठे पहर वज्जे मरदंग, अनहद नादी राग सुणाईआ। सेज सुहञ्जणी सतिगुर लँघ, आत्म परमात्म सोभा पाईआ। सच प्रकाश नूरी चन्द, प्रकाशवान दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच अनन्द इक्क दरसाईआ।

साचा जीवण सतिगुर अन्दर, अन्दरे अन्दर मेल मिलाइंदा । नज़री आए प्रभ का मन्दर, छप्पर छन्न ना कोई छुहाइंदा। भाग लगाए डूंघे खण्डर, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। लेखा चुके सूर्या चन्दर, चन्द चांदना इक्क चमकाइंदा। मन वासना बांधे बन्दर, बन्दना इक्को इक्क जणाइंदा। मस्तक टिक्का लाए चन्दन, चरन धूढ़ी आप छुहाइंदा। देवणहारा परमानंदन, निज आत्म रस वखाइंदा। टुटी हार गोपाल गंढण, गंढ आपणे नाल पवाइंदा। कूड़ी क्रिया कटे फंदन, फासी जम ना कोई लटकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क सुणाए सुहागी छन्दन, साचा राग आप अलाइंदा।

साचा जीवण सतिगुर साथ, हरि साथी इक्क अखवाईआ। साचा ढोला दस्से गाथ, गीत गोबिन्द अलाईआ। होए सहाई अनाथां नाथ, दीनन आपणे अंग लगाईआ। लहणा देणा चुकाए मस्तक माथ, पूरब लेखा आप मुकाईआ। आत्म सेजा सुआए खाट, पावा चूल ना कोई जणाईआ। मेटे रैण अन्धेरी रात, गुर शब्दी चन्द चमकाईआ। चरन कँवल बंधावे नात, साक सज्जण आप अखवाईआ। मात गरभ लवे राख, रक्खक बणे सभनी थाईंआ। लेखा चुके तत्त आठ, नौं दवारे पन्ध मुकाईआ। दसवें मेल पुरख अबिनाश, घर साजण फेरा पाईआ। आत्म सेजा भोग बलास, भसमड़ इक्को रंग वखाईआ। आत्म परमात्म वेखे शाख़, सच शनाख़त दए जणाईआ। सच इक्को वारी दए आख, आख़र आपणा भेव चुकाईआ। नज़री आए अलक्खना लाख, अलक्ख अगोचर वड वडयाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दास, भगत भगवान गंढ पवाईआ। तेरी मेरी इक्को आस, दूजी आस ना कोई तकाईआ। तेरी मेरी इक्क प्यास, मिल जीवत प्यास बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच जीवण दए समझाईआ।

साचा जीवण सतिगुर मीत, सो साहिब सदा सुखदाईआ। लेखा चुकाए हस्त कीट, घर इक्को दए वडयाईआ। पारब्रह्म मिलण दी दस्से रीत, ब्रह्म मेला सहज सुभाईआ। निरगुण हो के बणे नीच, सरगुण देवणहार वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीवण इक्को घर वखाईआ।

साचा जीवण घर एक, एकँकार आप जणाइंदा। दीन दयाल स्वामी पेख, निज नेत्र मेल मिलाइंदा। कर्म विछुंने करे हेत, हितकारी फेरा पाइंदा। नज़री आए नेतन नेत, निज घर बैठा पर्दा लाहिंदा। स्वच्छ सरूपी वेखे भेख, निरगुण नूर जोत धराइंदा। चारों कुण्ट रिहा खेड, दह दिशा राग अलाइंदा। सच संदेसा इक्को भेज, अनभव आपणा भेव खुल्ह़ाइंदा। सच सुहावे इक्को सेज, सति सुहञ्जणी नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच जीवण इक्क वडिआइंदा।

सच जीवण वड्डिआई वड, हरि वड्डा आप समझाइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढु, भगत भगतां संग रखाइंदा। अन्दर बाहर ना कोई हद्द, गुप्त ज़ाहर भेव मुकाइंदा। पिछली कीती देवे रद्द, अग्गे आपणे मार्ग पाइंदा। गढ़ हँकारी जाए भज्ज, निवण सो अक्खर इक्क समझाइंदा। हरि संगत जन बहणा सज, साजण इक्को नज़री आइंदा। सच सिँघासण चढ़ना भज्ज, श्री भगवान आप सुहाइंदा। कथा सिँघ रिहा सद्द, तेरा वेला नेड़े आइंदा। प्रभ दरसन करीए रज्ज रज्ज, फड़ बांहों परे ना कोई हटाइंदा। भगत नगारा रिहा वज्ज, गुरमुख इक्को राग सुणाइंदा। प्रेम प्रीती मिले मदि, मधुर रस इक्क समझाइंदा। आत्म परमात्म गाए साचा जस, जस होर ना कोई सुणाइंदा। नव नौं चार पिच्छों पूरी होए आस, आसा मनसा पूर कराइंदा। एथे कोई ना दिसे उदास, जो आया खुशी मनाइंदा। पुरख अकाल सदा वसे पास, प्रभ विछड़ कदे ना जाइंदा। ज़िमीं असमान ना दिसे आकाश, गगन मण्डल नज़र कोई ना आइंदा। इक्को नूर जोत प्रकाश, दीवा बाती ना कोई जगाइंदा। जीवण विच्चों प्रभ दा जीवण मिल्या ख़ास, गुरमुख ख़ालस रूप वटाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कलिजुग अन्तम बण के दासी दास, कर सेवा गुरमुख आपणे घर लिआइंदा। (१५ जेठ २०२० बि)

साचा दरस :

सतिगुर दरस नित नवित्त, गुरमुखां वंड वंडाईआ। आदि जुगादी करे हित, पारब्रह्म वड्डी वडयाईआ। ना कोई वार ना कोई थित, वेला वक्त ना कोई जणाईआ। दिवस रैण वसे चित, चितवत ठगोरी कोई ना पाईआ। दो जहानां साचा पित, पीत पीतम्बर सीस सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दरस सच्चा शहनशाहीआ।

साचा दरस काया मन्दर, मधुर नैण आप कराइंदा। मेल मिलाए अन्दरे अन्दर, ब्रह्म पारब्रह्म समाइंदा। तोड़नहारा आपणा जंदर, एका खण्डा हत्थ चमकाइंदा। मनुआ बंन्हणहारा बन्दर, नाम डोरी हत्थ रखाइंदा। लेखा जाणे डूंघी कंदर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। साचा दरस काया बंक, बंक दवारी आप कराइंदा। हरिजन लेखा जाणे आदि अन्त, जुग जुग भेव कोई ना पाइंदा। लख चुरासी विचों वेखे साचे सन्त, सन्त सतिगुर मेल मिलाइंदा। नार सुहागण वरे एका कन्त, कन्त कन्तूल सेज

हंढाइंदा। सति सतिवाद बणाए बणत, बसन बनवारी आपणी दया कमाइंदा। गढ़ तोड़े हउमें हंगत, गुरमुख जन जननी आपणी गोद सुहाइंदा। धन्न वड्डिआई हरि हरि संगत, हरि सगला संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दासी दास सेव कमाइंदा।

साचा दरस काया गढ़, गृह मन्दर आप कराईआ। निरगुण सरगुण अन्दर वड़, सच सरूपी रूप धराईआ। सुरती शब्दी आपे फड़, शब्द सुरती मेल मिलाईआ। आपणा अक्खर आपे पढ़, साची सिख्या दए समझाईआ। सच दवार फड़ाए लड़, फड़या लड़ छुट्ट ना जाईआ। चारों कुण्ट वेखे दर, नेत्र आपणा आप उठाईआ। वसणहारा साचे घर, घर सच्चा इक्क सुहाईआ। निरगुण जोती दीपक धर, बिमल करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ।

साचा दरस घर घर, घर सज्जण मेल मिलाइंदा। हरिजन चुकाए जगत डर, भय भयानक वेख वखाइंदा। अमृत नुहाए साचे सर, सर सरोवर इक्क वखाइंदा। करता पुरख आपणी करनी कर, कर किरपा मेल मिलाइंदा। लेखा जाणे नारी नर, नर नरायण भेव कोई ना पाइंदा। साकत निन्दक दुष्ट दुराचार माणस जन्म जाइण हर, हरि का भेव कोई ना पाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन भगत सन्त गुर सरनाई जाइण तर, सतिगुर साचा आप तराइंदा। निरभौ निरवैर निराकार अवरनी वरन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि हरि आपणा लेख लिखाइंदा।

साचा दरस पंज तत्त, त्रैगुण आपणा रंग रंगाईआ। अन्तर आत्म बीज घत, फुल फलवाड़ी आप लगाईआ। वेखणहारा डाली पत, आपणी पंखड़ी आप खुलाईआ। भवरा बणे पुरख समरथ, गूंजणहारा इक्क शहनशाहीआ। आपणी नचोड़े आपे रत, रती रत आप सुकाईआ। गुरसिखां अन्दर बैठा सत्थर घत, जगत सेज ना कोई वछाईआ। भेव ना पाए बुध मत, मनुआ रक्खे ना कोई चतराईआ । गुरमुख विरले मार्ग देवे दस्स, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। आत्म रसया इक्क वखाए साचा रस, रसक रसक आपणी बून्द आप वहाईआ। मेटे रैण अन्धेरी मस, साचा चन्द इक्क चढ़ाईआ। जगत चौकड़ी पैंडा मुकाए नस्स नस्स, गुरसिख तेरा राह तकाईआ । तेरी क्रिया होया वस, आपणी क्रिया ना कोई जणाईआ। आपणा मन्दर वेखे जगत रिहा ढठ्ठ, गुरसिख तेरा मन्दर आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दरस सच्चा शहनशाहीआ।

साचा दरस बहत्तर नाड़, सति पुरख निरञ्जण आप कराइंदा। माया ममता अगनी ना सके साड़, अमृत मेघ आप बरसाइंदा। गुरमुख बणाए साचे लाड़, लक्ख चुरासी फोल फुलाइंदा। निरगुण सरगुण घड़या घाड़न घाड़, घड़न भन्नणहार वेख वखाइंदा। नौं खण्ड पृथ्मी चबाए आपणी दाड़, दाड़ां हेठ सर्ब रखाइंदा। गुरसिख मेल मिलाया सतारां हाढ़, एका साता एका घर बहाइंदा। सृष्ट सबाई वसे डूंघी गार, जगत कन्दर पार ना कोई कराइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुरान खाणी बाणी करे विचार, हरि का भेव कोई ना पाइंदा। गा गा गए गुर अवतार, बेअन्त बेअन्त बेअन्त सर्ब सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, आपणा दरस आपणे विच्च रखाइंदा।

साचा दरस तिन्न सौ सट्ठ, हाडी हाडी आप समाईआ। पारब्रह्म महिमा अकथ्थना अकथ्थ,

लेखा लिख ना सके कोई राईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड कीना वस साढे तिन्न अन्दर हत्थ, हत्थो हत्थ लेखा रिहा चुकाईआ । लख चुरासी जीव जंत आदि अन्त शब्द डोरी पाए नथ, चार कुण्ट द ह दिशा आपे रिहा भवाईआ। निरगुण सरगुण नाम निधान देवे वथ, वस्त अमोलक आपणे हत्थ रखवाईआ। भाणा वरते हरि समरथ, भावी भाणे अग्गे सीस झुकाईआ। गुरमुख सगल विसूरे जाइण लथ्थ, जिस जन आपणा दरस वखाईआ। कोटन कोट उच्चे टिल्ले पर्बत प्रभ दर्शन को रहे तरस, नेत्र नैण नज़र किसे न आईआ। कोटन कोट होए अर्श फर्श कुरा कायनात वेखण मार झात, जगत निजात ना कोई दवाईआ। रैण अन्धेरी दिसे रात, सगला निभाए ना कोई साथ, सगला संग बैठा मुख छुपाईआ। कलिजुग तेरा अन्तम घाट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा हरि, शाह पातशाह आपणा नाउँ धराईआ।

साचा दरस रती रत, रकत आपणी खेल खलाइंदा। करे खेल कमलापत, कँवल नैण आप मटकाइंदा। चरन कँवल कँवल चरन इक्क रखाए साचा तत्त, दूजा जोड़ ना कोई जुड़ाइंदा। वसणहारा घट घट, घट घट अन्दर वेख वखाइंदा। करे सवांग नटूआ नट, भेव कोई ना पाइंदा। चौदां लोक वेखणहारा आपणा हट्ट, वणज वणजारा फेरा पाइंदा। नीर वरोले तीर्थ अठसठ, नाम मधाणा इक्क रखाइंदा। जोत ज्वाला वेखे लट लट, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ आपणा खेल खलाइंदा। पन्ध मुकाए मन्दर मस्जिद गुरदवार मठ, शिवदवाला चरनां हेठ दबाइंदा। गुरसिखां हिरदे अन्दर आपे वस, साचा मन्दर आप सुहाइंदा। करे प्रकाश कोटन कोट रव सस, नूर नूराना नूरो नूर डगमगाइंदा। जुग जुग विछड़े अन्तम पूरी करे आस, जगत निरासा ना कोई वखाइंदा। जन्म जन्म दी बुझे प्यास, जिस जन आपणा दरस दिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा बल आप धराइंदा। बल धारे हरि हरि बावण, बावण भेव कोई ना जाणया। लेखा जाणे हरि हरि रावण, रावण होए बाल अंञाणया । आपे पकड़े कंस दामन, दामनगीर शाह सुलतानया। त्रै जुग जन भगतां बणदा आया ज़ामन, देंदा आया मात सहारया। कलिजुग अन्तम आपणा पूरा करे कामन, चार जुग पन्ध मुका रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखा रिहा।

चार जुग भगत भगवन्त प्यारा, लोकमात आप रखाइंदा। निरगुण सरगुण बण बण देंदा रिहा सहारा, छिन भंगर रूप धराइंदा। कलिजुग अन्तम खेल करे नयारा, जोती जामा भेख वटाइंदा। अठ्ठे पहर दिवस रैण घड़ी पल गुरमुखां दए सच आधारा, आपणी सेवा आप कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दरस इक्क दीदारा, एका दीआ बाती कर उजिआरा, एका नेत्र लोचण नैण खुलायंदा।

गुरसिख दीदार आत्म अन्तर जगत दीदार हड्ड मास नाड़ी चम्म कराईआ। करे खेल अगम्म अपार, अगम्मड़ी कार आप कराईआ । सरगुण निरगुण दोवें धार, एका वार करे सच्चा शहनशाहीआ। गुरमुखां अन्दर इक्क प्यार, आत्म दृष्टी दृष्ट समाईआ। कलिजुग जीवां खेले खेल विच्च संसार, सरगुण भरम भुलेखा पाईआ। आपणा भेव ना देवे हरि निरँकार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। काया माटी भाण्डा पोचे गिरवर गिरधार, पंज तत्त तत्त हंढाईआ। अन्दर बैठा सिरजणहार, दिस किसे ना आईआ। हरिजन साचे वेख विचार, जगत सोए

लए उठाईआ। दुरमत धोए कर प्यार, आपणा रंग आप चढ़ाईआ। अमृत बरखे ठंडी ठार, निझर झिरना इक्क झिराईआ। सकल कुसल कुसल कर्म किरतम किरत आपणी झोली लए डार, दूसर संग ना कोई रखवाईआ। नौं नौं जन्म पैज दए सवार, माणस मानस आपणे धन्दे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दरस दए वडयाईआ। एका दरस जगत उधारा, जिस जन अन्तर मेल मिलाया। रातीं सुत्यां करे प्यारा, घर घर आपणा फेरा पाया। सो सिख सो सुत दुलारा, पूत सपूत सो अखवाया। सो भगत सो सन्त जिस मिल्या हरि निरँकारा, निरगुण सरगुण खेल खलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा दरस, दूजी वार लोकमात ना फेरा पाया। कलिजुग अन्तम खेल अव्वलड़ा, हरि साचा सच कराइंदा। आपणा मार्ग जन भगतां दस्से राह सुखलड़ा, लेखा लिखत ना कोई जणाइंदा। जिस जन फड़ाया आपणा पलड़ा, दो जहान ना कोई छुडाइंदा। गुरसिखां सराणे आपे खलड़ा, राती सुत्यां पन्ध मुकाइंदा। शब्द सन्देश एका घल्लड़ा, जगत सतार ना कोई रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे मेल मिलाइंदा।

रातीं सुत्यां जिस जन दरसन देवे, दसम दवारा मेल मिलाईआ । पन्ध मुकाए आप अलक्ख अभेवे, गुरसिख घालन घाल ना कोई वखाईआ। जोग अभिआस हठ तप क्रिया कर्म इक्क वखाए वड देवी देवे, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना गाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मार्ग आप चलाईआ।

साचा मार्ग आप चलाया, सतिगुर आपणा हीआ धार। गुरसिखां लभ्भण आपे आया, लोकमात लै अवतार। गुरसिख जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूंघी कन्दर कोई ना फेरा पाया, अठसठ फिरे ना कोई करे विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग करे सच विहार।

कलिजुग करया खेल निराला, सतिगुर पूरे दया कमाईआ। दीना बंधप होया दीन दयाला, दीनन एका रंग रंगाईआ। संग रखाए काल महांकाला, कँवल नैण वड्डी वडयाईआ। निरगुण बण सच दलाला, हरिजन माणक मोती वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

बेपरवाह खेल खलाया, कलिजुग अन्तम वार। शाह पातशाह बण के ग़रीब निमाणे लभ्भण आया, निरगुण निरगुण लै अवतार। लक्ख चुरासी विचों कढ़ुण आया, शब्द उछाला एका मार। आपणे विछड़े आपे सद्दण आया, आप आपणी किरपा धार। आपणा भार आपे लद्दण आया, आपे होया भार बरदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह पातशाह सच्ची सरकार।

शाह पातशाह दीन दयाला, आपणी दया कमाईआ। शाह पातशाह सदा होए रखवाला, जुग जुग आपणी सेव कमाईआ। गुरमुख गुरसिख गुर गुर होए किरपाला, किरपानिध वड्डी वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा दरस, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा रूप आप धराईआ। (१८ फगण २०१७ बिक्रमी)

किरपा करे पुरख सुलतान, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ । सति पुरख निरञ्जण

मेहरवान, दीन दयाल दया कमाईआ। दरस दीदार भगत भगवान, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाईआ। गृह सुहाए सचखण्ड मकान, महल्ल अट्टल करे रुशनाईआ। दीआ बाती जगे महान, जोती जोत जोत रुशनाईआ। शब्दी नाद सच्ची धुन कान, अगम्मी राग सुणाईआ। किरपा कर नौजवान, मर्द मरदाना होए सहाईआ। लेखा जाण जीव नादान, जगत रीती दए दृढ़ाईआ। अन्तर आत्म ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाईआ। रस अमृत पीण खाण, निझर झिरना इक्क झिराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वेखण मार ध्यान, नेत्र लोचण नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

साचा खेल श्री भगवन्त, हरि करता आप कराइंदा। मेल मिलावा हरिजन साचे सन्त, साहिब सतिगुर गोद उठाइंदा। नाता जोड़ धुर दा नार कन्त, सेज सुहञ्जणी सोभा पाइंदा। अन्तर दे के आपणा मंत, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। बोध अगाधा बण के पंडत, भेव अभेदा आप खुल्ह़ाइंदा। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म समझाइंदा। लेख चुका के जेरज अंडज, उत्भुज सेतज पन्ध मुकाइंदा । सच दवार बणा के बणत, घड़ण भन्नणहार वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाइंदा।

साची सिख्या शब्द प्यार, हरि सतिगुर आप जणाईआ। निज नेत्र गुरमुख कर दीदार, दोए लोचण कम्म किसे ना आईआ। काया माटी खोल्ह़ किवाड़, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। राग सुणाए अगम्मी धार, ताल तलवाड़ा इक्क जणाईआ। कर प्रकाश बहत्तर नाड़, नूर ज़हूर दए दरसाईआ। भाग लगा जंगल जूह उजाड़ पहाड़, टिल्ले पर्बत खोज खुजाईआ। खुशीआं नाल तक्कण गुरू अवतार, पीर पैगम्बर वेख वखाईआ। निउँ निउँ सयदे करन सच्ची सरकार, दोए जोड़ जोड़ सरनाईआ। उच्ची बोलण सति जैकार, तूं ही तूं राग अलाहीआ। दो जहानां करन ख़बरदार, ब्रह्मण्ड खण्ड रहे हलाईआ। करोड़ तेतीसा दए हुलार, सुरपत इन्द बूझ बुझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग उतरया विच्च संसार, लोकमात फेरा पाईआ। भगत वछल गिरवर गिरधार, गहर गम्भीर वड्डी वडयाईआ। सच सन्देसा देवे आण, धुर दा राग जणाईआ । नर नरेशा नौजवान, रूप रंग रेख ना कोई वखाईआ। जिस दा शास्त्र सिमरत वेद पुरान करन ज्ञान, खाणी बाणी ढोला रही गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो भगतन देवे आप पहचान, जिस पहचान विच्चों आपणा दरस दए दिखाईआ। भगत भगवान धुर दा दरस, अनडिठड़ी धार जणाइंदा। जन्म जन्म दी मेट हरस, दूई द्वैती पन्ध मुकाइंदा। लैणा चुका अर्श फर्श , साचा मन्दर इक्क सुहाइंदा। जन्म कर्म दी मेट हरस, मेहर नज़र इक्क टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आपणा खेल दसे असचरज, अचरज लीला आप जणाइंदा।

साचा दरस पुरख समरथ, दीदार इक्को नज़री आईआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरले मिले अक्ख, जिस नेत्र इक्क खुल्ह़ाईआ। नज़री आए साहिब प्रतक्ख, साख्यात बेपरवाहीआ। घर मन्दर खुल्ह़े हट्ट, गृह वज्जे नाम वधाईआ। दीआ बाती जगे लट लट, जोती जोत जोत रुशनाईआ। शब्द अगम्मी वज्जे सट्ट, सोई सुरती दए उठाईआ। दुरमत मैल देवे कट्ट, उजल मुख आप वखाईआ। लेखे लाए रती रत, रुत्त रुतड़ी आप महकाईआ। साची दे के ब्रह्म मत, चौदां विद्या पन्ध मुकाईआ। झोली पाए धुर दा हक, सच हकीकत दए समझाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी बदल आप करवट, सनमुख हो के नज़री आईआ। दूर दुराडा

नेरन नेरा आवे नट्ठ, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। जन भगत सुहेला इक्को देवे अन्तर रस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ।

सच दीदार गुर शब्दी दीद, निरगुण निरवैर नज़री आईआ। मन्दर मण्डल साचे काअबे इक्को ईद, महराब महल्ल अट्टल इक्क सुहाइंदा। नगमा नाम निधान पैग़ाम सच्चा गीत, रहबर हो के आप जणाइंदा। सति स्वामी सच अतीत, त्रै गुण लेखा पन्ध मुकाइंदा। भगत भगवान दी वक्खरी रीत, मन मत बुद्ध समझ ना कोई रखाइंदा। वेखणहारा ऊँच नीच, राओ रंक खोज खुजाइंदा। बिन साचे सन्त किसे अन्दर लंघे ना कोई दहलीज़, नौ दवार पन्ध ना कोई मुकाइंदा। जन भगतां जुग जुग कराए रीझ, समरथ पुरख महिमा अकथ्थ आप दृढ़ांइंदा। साचा कलमा दस्से इक्क हदीस, नाम इक्को इक्क समझाइंदा। छत्तर वखावे साचे सीस, दूजा इष्ट ना कोई दृढ़ांइंदा। परम पुरख परमात्म आत्म नाल ला के प्रीत, प्रीतीवान वेख वखाइंदा। जन भगतां काया मन्दर वखाए सच मसीत, गुरूदवारा इक्को इक्क वडिआइंदा। जिस घर स्वामी बैठा रहे बीठलो बीठ, दिवस रैण अठ्ठे पहर घड़ी पल वंड ना कोई वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे आप जगाइंदा।

सच दीदार आत्म अन्तर, जन भगत भगवान आप कराईआ। कूड़ी क्रिया बुझा बसन्तर, अगनी तत्त गुआईआ। नाउँ निरँकारा दस्स के इक्को मंत्र, मंतव साचा हल कराईआ। जोत जगा के ब्रह्म निरंतर, निरवैर खुशी जणाईआ। पन्ध मुका के गगन गगनंतर, पुरी लोअ आकाश चरनां हेठ रखाईआ। सच दवारे चाढ़ आपणी मंज़ल, बंक दवारा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नित नवित्त जन भगतां दए वडयाईआ।

जन भगत दीदार सतिगुर सति, सो पुरख निरञ्जण आप कराइंदा । हरि पुरख निरञ्जण हो के वस, एकँकार रंग चढ़ाइंदा। आदि निरञ्जण जोत प्रकाश, जोत निरञ्जण डगमगाइंदा। अबिनाशी करता हो के साथ, दो जहानां संग वखाइंदा। श्री भगवान चलाए राथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। पारब्रह्म प्रभ कमलापात, पतिपरमेश्वर वेख वखाइंदा। ब्रह्म लेखा जाणे आपणी ज़ात, अजाति रूप ना कोई वटाइंदा। निरगुण सतिगुर वेखे खेल तमाश, ख़ालक आपणा फेरा पाइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों भगत लभ्भे सच जमात, जिनां अक्खर इक्क पढ़ाइंदा। लेखा चुक्के कलम दवात, काग़ज़ शाही ना वंड वंडाइंदा । अन्तर आत्म दे के दात, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। सच सुनेहड़ा जाए आख, निरगुण आपणा हुक्म वरताइंदा। साचा मंत्र दस्से पाठ, पूजा सिमरन इक्को वार समझाइंदा। सच सरोवर तीर्थ नुहाए ताट, जल धारा इक्क वहाइंदा। बोध अगाध शब्द अनाद धुन आत्मक सुणाए राग, राग रागणी नैण शरमाइंदा। कूड़ी क्रिया माया ममता हउमे हंगता करे त्याग, नाता सच सुच्च आप बधाइंदा। जूठ झूठ कूड़ी बुद्धि रहे ना काग, काग हँस रूप वटाइंदा। त्रैगुण माया डस्से ना डस्सणी नाग, शब्द खण्डा हत्थ फड़ाइंदा। बिरहो विछोड़े अन्दर उपजे इक्क वैराग, गुरमुख वैरागी सच्चा नज़री आइंदा। जिस दी सोई सुरती गई जाग, सो जागरत दिशा भगवन आपणे दर्शन पाइंदा। दुरमत मैल धोवे दाग़, कूड़ी क्रिया परे हटाइंदा। लेखे लाए काया माटी पंज तत्त काया हाट, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मीता दरस कराइंदा।

भगत दीदार करे घर साचे, सच मिले वडयाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर राते, रंग रतड़ा मिले माहीआ। जिस दी ब्रह्म उपजया ज़ाते, सो पारब्रह्म मिलाईआ। थिर घर वेखे सारे गाथे, गहर गम्भीर करे पढ़ाईआ। साचा नाम गुरमुख विरला वाचे, हिरदे हरि वसाईआ। लक्ख चुरासी भाण्डे काचे, तत्तव तत्त करे लड़ाईआ। सन्त सुहेला गुरू गुर चेला विरला वड़े सतिगुर हाते, चार दिवारी नज़र कोई ना आईआ। कर बन्दना तूं मेरा मैं तेरा साचा शब्द इक्को आखे, आखर आपणा आप तजाईआ। पतिपरमेश्वर साहिब सतिगुर पत आप राखे, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जन्म जन्म दे पूरे करे घाटे, वस्त अमोलक नाम झोली पाईआ। अन्तम मंज़ल रहे ना अद्धवाटे, राह विच्च ना कोई अटकाईआ। जन भगत विष्न ब्रह्मा शिव टेकण माथे, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहण तेरी खेल पुरख समराथे, तेरे हत्थ वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क दीदार दए जणाईआ।

प्रभ दीदार सच्चा दर्द, हरि दर्दीआ दर्द वंडाइंदा। सो गुरमुख जोधा सूरबीर मरद, मर्द मरदाना आपणे नाल मिलाइंदा। कूड़ी क्रिया कलिजुग देवे वरज, माया ममता मोह चुकाइंदा। माणस जन्म पुठ्ठी कदे ना पवे नरद, हार जित्त विच्च प्रगटाइंदा। जन भगतां पिच्छे पूरा करे फ़र्ज़, निरगुण सरगुण हो के फेरा पाइंदा। एहो खेल सदा असचरज, जग नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सनमुख आपणा रूप दरसाइंदा। जन भगत दीदार करे प्रभ एका, पुरख अकाल इक्को नज़री आईआ । जुग चौकड़ी जिस दी टेका, दो जहान सीस निवाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी जिस दा लेखा, कलम शाही मिली वडयाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा बण के आउँदे रहे नेता, निज नेत्र दर्शन पाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी जन भगतां पिच्छे जुग जुग धारे भेखा, निरगुण सरगुण भेस वटाईआ। कलिजुग अन्त पूरब भुल्लया अजे ना चेता, चेतन्न हो के रिहा जगाईआ। सन्त सुहेला साचा बेटा, पिता पूत गोद उठाईआ। सतिगुर बण के खेवट खेटा, बेड़ा आपणे कंध टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दीदार जिन्नां दरसाईआ।

सच दीदार जिन्नां जग पाया, अन्तर वज्जी नाम वधाईआ। त्रैगुण माया पड़दा लाहया, पंज तत्त ना करे लड़ाईआ हउमे हंगता रोग गवाया, माया ममता परे हटाईआ। साचा मंगता बण के दर ते आया, ख़ाली झोली लए भराईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी सर्ब स्वामी अन्तरजामी साची बणता दए बणाया, घड़न भन्नणहार इक्क अखवाईआ। सुरत सवाणी शब्द हाणी धुर दा कन्ता दए मिलाया, आत्म सेजा सोभा पाईआ। मंगल गीत राग अगम्मी इक्क सुणाया, काया ठांडी सीत कराईआ। त्रैगुण अगनी तत्त ना कोई जलाया, एथे ओथे होए सहाईआ। लक्ख चुरासी पन्ध मुकाया, जम की फांसी दए तुड़ाईआ। मात गरभ ना डेरा लाया, दस दस मास ना अगन तपाईआ। कुंभी नरक ना कोई भवाया, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। राए धर्म ना दए सज़ाया, लाड़ी मौत ना अन्त परनाईआ। जिन्नां साहिब सतिगुर सच्चे दर्शन पाया, एथे ओथे दो जहान सचखण्ड दवारे वज्जे इक्क वधाईआ। दीदार कीता जिस पुरख अगम्म, अगम्मड़ी खेल कराइंदा। लेखे लावे पवण स्वासी दम, साह साह खोज खुजाइंदा। लहणा देणा चुकाए काया माटी चंम, चम्म दृष्टी ढेरा ढाइंदा। साचा बेड़ा

देवे बंनू, शौह दरया ना कोई रुड़ाइंदा। भगत भगवान चाढ़े चन्न, चन्द चांदना मुख शरमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दीदार इक्को इक्क कराइंदा।

सच दीदार जगत जुग करना, सतिगुर देवणहार वडयाईआ। गुरमुख खुल्हे हरना फरना, घर बैठयां दो जहान वाली नज़री आईआ। अन्तम चुक्के मरना डरना, आवण जावण रहण ना पाईआ। लेखा मुक्के वरनां बरनां, चार अठारां ना कोई लड़ाईआ। परम पुरख दी साची सरना, सरनगत इक्क समझाईआ। पल्लू परमात्म इक्को फड़ना, जो तुटी गंढ बंधाईआ। साची मंज़ल पौड़े चढ़ना, अद्ध विचकार ना कोई अटकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला इक्को पढ़ना, सोहँ राग अलाईआ। सच दवारे साचे वड़ना, जिस घर बैठा बेपरवाहीआ। नेत्र लोचण नैण बिना दर्शन करना, जोती जोत जोत डगमगाईआ। उस साहिब दी सरनी पड़ना, जिस दी आदि जुगादि जुग चौकड़ी समझ किसे ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरस दीदार दए वखाईआ।

दरस दीदार जो जन करदा, सच दवारे सीस निवाईआ। आदि जुगादि कदे ना मरदा, जुग चौकड़ी देवे ना कोई सज़ाईआ। निरभौ हो कदे ना डरदा, भउ सीस ना कोई रखाईआ। दूजे दर ना होवे बरदा, पुरख अकाल मन्ने इक्को बेपरवाहीआ। लक्ख चुरासी कोलों कदे ना हरदा, जित्त आपणी गंढ बंधाईआ। मंज़ल इक्क अगम्मी चढ़दा, जिस दा रहबर नूर खुदाईआ। कलमा महबूब इक्को पढ़दा, मुहब्बत जिस दे नाल रखाईआ। दरगाह साची वड़दा, मुकामे हक सोभा पाईआ। जिथ्थे नूर प्रकाश इक्को करदा, तख़त बतख़त नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दीदार दए वखाईआ।

सच दीदार तेरा प्रभ यार, इक्को इक्क नज़री आईआ। जिस दे नाल अगम्मी करीए गुफ़तार, बातन वेख खुशी मनाईआ। ना कोई तबला तन्द दिसे सतार, सारंग हत्थ ना कोई उठाईआ। ना कोई रसना जिह्वा बत्ती दन्द बोले जैकार, राग रागनी ना कोई वडयाईआ। सच महराबे वड नवाबे तेरा दरस अपार, जल्वागर तेरी रुशनाईआ। तूं परवरदिगार, मेहरवान बेपरवाहीआ। मैं तेरे करके दरस दीदार, तेरा हुजरा दिता सुहाईआ। पीर पैगम्बर देखण नज़र उठल, ईसा मूसा मुहम्मद ध्यान लगाईआ। चौदां तबक होए हैरान, हैरानी सभ दे उत्ते छाईआ। एह की खेल करे भगवान, जन भगतां दए वडयाईआ। कलिजुग सिध्धा मिल्या आण, साडी लोड़ रहे ना राईआ। मसला पढ़या ना कोई कुरान, काया काअबा खोज खुजाईआ। नज़री आया इक्क अमाम, जो पैग़ाम रिहा सुणाईआ। उसदा वेख के सच निशान, मुशर्द मुरीद दोवें खुशी मनाईआ। साची मंज़ल होई आसान, पान्धी बणके पन्ध मुकाईआ। अलफ़ ये रिहा ना कोई गान, बिन हरफ़ो करे पढ़ाईआ। तुआरफ़ दस्से ना कोई जहान, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। भगतां मिल्या भगवन आण, भाण्डा भरम भाउ भन्नाईआ। दाता दानी गुण निधान, दयावन्त सहज सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दीदार दए कराईआ।

कर दीदार होवे जन खुश, खुशीआं नाल सुणाईआ। सुन समाधी अन्दर हो के चुप, आपणा आप गवाईआ। सुख लए पिता दी गोदी बहके पुत्त, दुःख नज़र कोई ना आईआ। जननी सोहे साची कुक्ख, लोकमात वज्जे वधाईआ। मेहरवान अबिनाशी अचुत, चेतन्न सुरती आप

कराईआ। तन सुहञ्जणी मौले रुत्त, रुत्त रुतड़ी नाल महकाईआ। जन भगतां भगवन लए पुच्छ, नित नवित्त वेस वटाईआ। जे किसे दे कोल नहीं कुछ, नाम पदार्थ झोली पाईआ। निरगुण हो के अन्दरों पए उठ, शब्दी डंक वजाईआ। जोती जाता हो के जाए तुद्ध, जोत निरञ्जण करे रुशनाईआ। उजल करके मात कुरव, मुरवड़ा दए सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेरवणहारा चाईं चाईंआ।

भगत सुहेला ठांडा मीता, भगवन इक्को इक्क अरववाइंदा। आदि जुगादी जुग चौकड़ी जिस दी उडीका, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा । शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी जिस दी साची दिसे हदीसा, हज़रत हो के आप पढ़ाइंदा। लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त जो परखणहारा नीता, घट घट अन्दर वेख वखाइंदा। राज राजानां शाह सुलतानां जो खाली करनहारा खीसा, शाहो ख़ाक बणाइंदा। जो देवणहारा माण ऊँचां नीचां, ग़रीब निमाणयां गले लगाइंदा। सो जुग जुग जन भगतां अन्दर लंघे दहिलीज़ा, दलीलां विच्च हत्थ किसे ना आइंदा । वेखण वाला नीकन नीका, नेरन नेरा खेल खिलाइंदा। भेव अभेद जाणे जीव जी का, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाइंदा।

प्रभ दीदार करे बेहाल, सुरती जगत सुरत रहण ना पाईआ। जन भगत आपणा आप ना सके संभाल, मन मत बुध चले ना कोई चतराईआ। आपणी छड्ड के पिछली घाल, अगला लेखा सतिगुर हत्थ फड़ाईआ। तूं निरगुण दाता चलणा मेरे नाल, सोहणा संग बणाईआ। मैं वेखां तेरी धर्मसाल, जिस घर बैठा डेरा लाईआ। जिथ्थे पोह ना सके काल, महांकाल ना कोई चतराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा संग निभाईआ। कर दीदार होए बेहोश, होश जगत रहण ना पाईआ। उथे समझ ना कोई सोच, सोच समझ सके कोई ना राईआ। कम्म करे ना नेत्र लोच, अक्खीआं अक्ख ना कोई मिलाईआ। दीवारां दिसे ना किल्ला कोट, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। इक्को दीप जले निर्मल जोत, तेल बाती ना कोई टिकाईआ। शब्द नाद धुन वजे अगम्मी चोट, डंका डौरू नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दरस दए कराईआ। जन भगत दरस दीदार करे विच्चों पड़दा, पड़दा उहला आप उठाईआ। सतिगुर ठंडा ठार करे सड़दा, सड़दा अगनी अग्ग लए बचाईआ। भेव खुल्लाए आपणे घर दा, घर विच्च घर दए समझाईआ । जिथ्थे दीप इक्को बलदा, इक्को नूर होवे रुशनाईआ। ओथे खेल अछल छल दा, दूजा रहण कोई ना पाईआ। जो आत्म सेजा मल्लदा, परमात्म हो के वेख वखाईआ। जो जोती धार रलदा, शब्दी डंक शनवाईआ। जो खेल खेले महल्ल अट्टल दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए जणाईआ।

करया दीदार हरि सतिगुर ठाकर, जिस ठोकर नाम लगाईआ। लेखा चुक्कया काया गागर, गहर गम्भीर नज़री आईआ। सच दवारे मिल्या आदर, हरि जू आ दर्शन इक्को दिता वखाईआ। जन्म कर्म दा होया आदल, अदली इक्को बेपरवाहीआ। अन्दरों बाहरों दिता बदल, बदला पिछला दिता चुकाईआ। सच वखाई उह मंज़ल, जो कबीर गिआ सालाहीआ। नेत्र पा के नाम कज्जल, कजीआ कूड़ा दिता मिटाईआ। अन्तम नेड़ ना आवे अज़ल, लेखा लेखे लिआ पाईआ। रहमत कर के करे फ़ज़ल, फ़ैसला इक्को हक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीद ईद चन्द रुशनाईआ।

कर दीदार होया घर चानण, चमकीला नूर अलाईआ। पड़दा लाहया साचे रामन, रमईआ मिल्या बेपरवाहीआ। दरस पाया धुर दे काहनण, जिस बंसरी नाम सुणाईआ। कलमा सुणया सच अमामण, जिस कायनात दिती वडयाईआ। नाम सति जाणया गानण, नानक निरगुण सरगुण राग अलाहीआ। गोबिन्द डंका सुणया दो जहानण, ब्रह्मण्ड खण्ड सीस निवाईआ। जन भगतां आ के मिलण श्री भगवानण, जुग जुग आपणा फेरा पाईआ। कलिजुग अन्तम खेल कीता महानण, महिमा कथ सके ना कोई दृढ़ाईआ। किरपा कर गुण निधानण, जगत निधाने लए जगाईआ। शब्द निराला मार के बानण, तीर अणयाला इक्क वखाईआ। नाम सुणा के साचे कानण, कूड़ी क्रिया दिती गवाईआ। दामनगीर हो के पकड़या दामन, दस्त आपणे नाल मिलाईआ। घर साचे आ के बणया ज़ामन, धुर दी ज़ामनी दए जणाईआ। भगत भगवान दरस करन आहमणो साहमण, पड़दा नज़र कोई ना आईआ। जिस दा भेव कोई ना पावे शूद्र वैश शत्तरी ब्राह्मण, पारब्रह्म प्रभ आपणा खेल वखाईआ। सति धर्म झुला निशानण, निशाना इक्को इक्क दृढ़ाईआ। चार वरन जिस नूं मानण, गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे सीस निवाईआ। सो खेल करे नौजवानण, बिरध बाल ना रूप जणाईआ। जन भगतां आया आप पहचानण, निराकार वेस वटाईआ। गुरमुखां विच्चों गुरमुख लालण, लाल रंगीला मोहण माधो आपणे रंग रंगाईआ। जिस नूं जूहां जंगलां उजाड़ां विच्च चढ़दे भालण, टिल्ले पर्बत समुन्द सागर डूंघी खारी देखण चाईं चाईंआ । सो साहिब करता दीन दयाल आया आनन फ़ानन, निरवैर निराकार आपणा फेरा पाईआ। गुरमुख बणाए चतर सुघड़ सुजानण, मूर्ख मूढ़े लए तराईआ। सच दवारे सुख सच्चा मानण, सचखण्ड मिले माण वडयाईआ। अठ्ठे पहर दिवस रैण घड़ी पल वार थित दरस करन भगवानण, दूजा इष्ट नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा दर इक्क वखाईआ। कर दीदार घर सच वसेरा, वसल इक्को इक्क जणाइंदा । महबूब मिल्या होए चाउ घनेरा, अरूज साचा सोभा पाइंदा। कूड़ी क्रिया रहे कोई ना डेरा, झगड़ा दीन मज़ूब ना कोई जणाइंदा । भगत भगवान दा खुल्ला वेहड़ा, ज़ात पात विच्च कदे ना आइंदा। इक्को नाता जोड़ के तेरा मेरा, आदि जुगादि सदा सद सोहँ रूप समाइंदा। गुरमुख वसे काया खेड़ा, काया खिड़की आप खुलाइंदा। दूर दुराडा नज़री आए नेरन नेरा, निज घर आपणा फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरस दीदार इक्क वखाइंदा। दरस दीदार दए वखाल, विआख्या आपणी नाल जणाईआ। किरपा कर दीन दयाल, दीनन लए उठाईआ। कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। साचा मन्दर सच्ची धर्मसाल, काया काअबा दए प्रगटाईआ। आ के पुच्छे मुरीदां हाल, मुशर्द आपणा फेरा पाईआ। नव नौ चार दा पूरा करे सवाल, मेहरवान दया कमाईआ। सन्त सुहेले सज्जण भाल, गुरमुख लए उठाईआ । उन्नां विच्चों सोहणा लाल, लाल सिँघ लाल नज़री आईआ । जिस दी देवत सुर करदे भाल, मुनी मुनीशर खोजण जाईआ। जिस दा खाणी बाणी दए अहिवाल, रागाँ नादां विच्च सुणाईआ। सो खेल करे पुरख अकाल, करता बेपरवाहीआ। जन भगत लए उठाल, सुत्यां अक्ख खुलाईआ । उठो गुरमुखो मेरे चलो नाल, बण के सचखण्ड दे पान्धी राहीआ। तुहाढ्ढा मेला ओस श्री भगवान, जिस दे भाणे अन्दर डरदा गुर अवतार पीर पैगम्बर सेव कमाईआ। ओस दा झुल्ले सदा निशान, सच निशाना इक्क वखाईआ।

सो मेहरवान हो के हरिजन साचे मिले आण, मिलणी आपणे नाल कराईआ। दरस दीदार दे के दो जहान, जीवत जीवत जीवण दए बदलाईआ। अन्दर वड़ के दए पछाण, आपणा नूर समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मीता इक्क अखवाईआ। भगतन मीता धुर दा मित्र, हरि करता आप अखवाइंदा। साचे घर विच्चों आए निकल, काया पड़दा परे उठाइंदा। चोटी चढ़ के बैठा सिखर, सच सिँघासण डेरा लाइंदा। पूरब लहणा वेख के मिसल, जन्म कर्म फोल फोलाइंदा। भगत भगवान आदि जुगादि साची नसल, वखरी धार बंधाइंदा। जिन्नां विच्चों लभ्भे असल, असलीअत वंड वंडाइंदा। ओनां नाल मिल के करे वसल, वास्ता आपणे नाल जुड़ाइंदा। साचे भगत जगत की कुछ दस्सण, दस्सण वाला भेत समझ किसे ना आइंदा। उह जानण जो साहिब नाल वसण, जिन्नां मिल के खुशी मनाइंदा। दरस दीदार दे के पुरख समरथन, समस्सया आपणी फेर समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत जगत आए रक्खण, राखा हो के सेव कमाइंदा। (२२ हाढ़ २०२१ बि)

साची सिक्खी साचा दरस, हरि हरि आप रखाया। आप आपणा कीता वस, आप आपणा मोह चुकाया। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपणा पन्थ रचाइंदा।। (२५ अस्सू २०१५ बि)

साचा धर्म : प्रभ पूरा भय दिखावे। कर कर्म गुरसिख तेरी जै करावे । साचा धर्म गुरसिख कर्म, प्रभ चरन प्रीती लावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल वरतावे। (४ अस्सू २००८ बि)

साचा धर्म धर्म प्यार, पारब्रह्म सरनाईआ। साचा कर्म कर्म विचार, आप आपणी बूझ बुझाईआ। साचा नादि धुन अपार, आत्मक धुन उपजाईआ। साचा धर्म कर परवान, तन मन्दर अन्दर वज्जे वधाईआ। साचा धर्म एका बाण, एका एक हरि लिव लाईआ। साचा धर्म कर पछाण, निरगुण जोती वेख वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सन्तन देवे इक्क वर, सच धर्म करे कुड़माईआ । (१४ फग्गण २०१४ बि)

सतिगुर जुग कहे मैं की करां तारीफ़, तुआरफ़ भगतां नाल कराईआ । कलिजुग बुढ्ढा वेख ज़ईफ, मेरा नैण शरमाईआ। सृष्ट सबाई होई शरीक, लाशरीक बैठे भुलाईआ। कूड़ी क्रिया कर प्रीत, प्रीतम नालों होई जुदाईआ। झगड़ा पा के ऊँच नीच, दीन मज़ब करन लड़ाईआ। साचा धर्म किसे ना लम्भया ठीक, ठाकर घर ना कोई मनाईआ। प्रभ लभ्भदे मन्दर मसीत, शिवदवाले मठ गुरूदवार भज्जण वाहो दाहीआ। काया किसे ना होई ठंडी सीत, कलिजुग अगनी तत्त तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा धर्म इक्क समझाईआ। (३ कत्तक २०२१ बि)

सति धर्म कहे मैं बदल देणी रीत, अबिनाशी करता हुक्म सुणाईआ । पुरख अकाल करनी इक्क प्रीत, धुर दा हुक्म इक्क जणाईआ। झगड़ा चुकणा मन्दर मसीत, काया काअबा खुशी वखाईआ। आत्म परमात्म गौणा गीत, ढोला नूर खुदाईआ। भगत सन्त कर अतीत, त्रैगुण लेखा देणा मुकाईआ। झगड़ा मुकाए ऊँच नीच, राओ रंकां इक्को घर बहाईआ। भरम मिटे

हस्त कीट, वडा छोटा ना कोई अखवाईआ। अबिनाशी करता करवट लै बदल लए पीठ, सनमुख गुरमुखां नज़री आईआ। दूर दुराडा वसे सदा नज़दीक, घर पिता खुशी मनाईआ। जिस दी गुर अवतार पीर पैगम्बर करदे गए उडीक, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणी अक्ख खुल्ह़ाईआ। जो सचखण्ड निवासी सदा वसनीक, वसल असल इक्को दए कराईआ। सो गुरमुखां दी काया अन्दर लँघ दहलीज़, दिलबर हो के जोड़ जुड़ाईआ। अठ्ठे पहर वसे चीत, मन चित ठगोरी रहण कोई ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा धर्म इक्क जणाईआ।

साचा धर्म सति सति, दूसर वंड ना कोई वंडाईआ। साचा धर्म सतिगुर सति, गुरमख हरि गुण गाईआ। साचा धर्म ब्रह्म मति, पंज तत्त ना कोई लड़ाईआ। साचा धर्म निज नेत्र अक्ख, दोए लोचन झगड़ा दए चुकाईआ। सति धर्म अन्तर अन्त बीज बीजे साचे वत, नाम निधाना इक्क जणाईआ। सच धर्म धुर दा राग सुणाए अनहद, अनुरागी आपणा नाद वजाईआ। सति धर्म अन्तर अमृत आत्म दए झट्ट, बूंद स्वांती मुख चवाईआ। सति धर्म निरगुण नूर जोत करे प्रकाश, अन्ध अन्धेर रहण कोई ना पाईआ। सति धर्म आत्म करे मिलाप, जुग जन्म विछोड़ा दए कटाईआ। सति धर्म पुरख अबिनाशी मेले साख्यात, घर सज्जण सहज सुभाईआ। सति धर्म साचे चरन कँवल बख्शे सच निवास, भूमिका धुर दी इक्क सुहाईआ। सति धर्म प्रभ की सरन लेखा चुकाए मरन डरन आवण जावण मुके वाट, लक्ख चुरासी गेड़ ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सति इक्को इक्क समझाईआ। (२१ चेत श सं १)

साचा धन्दा : जेहड़ा तैनूं भुल्लया उह कर्म कांड दा गन्दा, गन्दगी विच्च आपणा रूप बदलाईआ। तेरी चरन प्रीती सभ तों उत्तम धन्दा, धर्म दी धार इक्क दरसाईआ। (६ कत्तक श सं ६)
जिस नूं प्रभू मिलण दा नहीं वेहल, तिस दा धन्दा कम्म किसे ना आया। (२६ चेत २०२० बि)
हरि संगत प्यार सच्चा धन्दा, आपणे धन्दे वक्त विहाईआ। (२० फग्गण २०१७ बि)
साचा धन्दा जुग जुग कार, जन भगतां आप जणाईआ। अठ्ठे पहर इक्क ध्यान, एका गुर समझाईआ। एका देवे धुर फ़रमाण, शब्द शब्दी आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त भगत भगवन्त आपणी सेवा लाईआ। (१३ जेठ २०१८ बि)
सच्चा धन्दा हरि की सेवा, दूजी अवर ना कोई चतुराईआ। अमृत आत्म मिले मेवा, अंमिउँ रस आप चवाईआ। प्रगट होया वड देवी देवा, कोटन कोट देवत सुर ढह पए सरनाईआ। आदि जुगादि अलक्ख अभेवा, अगम्म अगोचर बेपरवाह बेअन्त सच्चा शहनशाहीआ। सदा सुहेला सद निहकेवा, निहचल बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। (१६ माघ २०१६ बि)

साचा नाम : साचा नाम सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै, आदि अन्त समझ किसे ना आईआ। नौ सौ चुरानवे जुग चौकड़ी पिछों पुरख अकाल आपे लए, आपणे हत्थ

रक्खे वडयाईआ। जन भगतां अन्दर वड़ के बहे, निरगुण आपणा आसण लाईआ। गढ़ हँकारी तोड़ के मैं, ममता कूड़ी दए मिटाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर करके लै, लहणा देणा दए चुकाईआ। इक्को नाम आदि जुगादी रहे, जो अबिनाशी करता आपणा आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखे सभ दे दए मुकाईआ। (७ मध्घर २०२१ बि)

साचा नाम सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जैकार, चार जुग समझ किसे ना आईआ। औंदे रहे गुरू अवतार, पैगम्बर फेरा पाईआ। आपणा हुक्म बदलदा रिहा विच्च संसार, राम कृष्न ईसा मूसा मुहम्मद नानक गोबिन्द नाउँ प्रगटाईआ। पड़दा खोल् के अन्त दस्सया ना पारावार, बेअन्त कह के सारे शुकर मनाईआ। दो जहानां विच्च करदा रिहा इज़हार, थोड़ा थोड़ा नाम झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आपणे हत्थ रखवाईआ।
साचा नाम पुरख अकाल सो, सो साहिब आप दृढ़ाईआ। हँ ब्रह्म आपे हो, लक्ख चुरासी डेरा लाईआ। महाराज शहनशाह दूजा अवर ना जाणे को, पातशाह बेपरवाहीआ। शेर सिँघ बब्बर हो के शब्दी किसे नाल ना करे धरोह, बलधारी वड वडयाईआ। विष्नूं हो के सेवा नाल करे मोह, हुक्म प्रभ दा मन्न मनाईआ। भगवान हो के घट घट अन्तर देवे लो, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां वेख वखाईआ। आत्म परमात्म नाल जावे छोह, मेला मेले सहज सुभाईआ। जन भगतो पुरख अकाल सतिगुर शब्द इक्को बड़ा गुरूआं दा चाहीए नहीं गरोह, बहुते गुरू कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि हुक्म इक्क समझाईआ। (१८ हाढ़ श सं २)

सति धर्म, सतिजुग साचा नाम सोहँ सो, सो पुरख निरञ्जण आप जणाईआ। हँ ब्रह्म आपे हो, हरि पुरख निरञ्जण हो के आपे सेव कमाईआ। अवरी धार रहे ना दो, एकँकारा हो के दिआं समझाईआ । सच प्रकाश करां लोअ, आदि निरञ्जण हो के जोती नूर करां रुशनाईआ । अबिनाशी करता हो के कूड़ा तोड़ां मोह, मुहब्बत इक्को नाल बंधाईआ । श्री भगवान हो के किसे नाल ना करां धरोह, धरू प्रहिलाद वांग भगत लवां प्रगटाईआ। पारब्रह्म हो के प्रेम नाल जावां छोह, अन्दर उहला पड़दा ना कोई रखवाईआ। शब्दी धार संसार विच्चों करां निर्मोह, मुहब्बत इक्को घर बणाईआ। पंच विकारा गुरमुखां अन्दर रहण ना देवां गरोह, हुक्में अन्दर बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवां माण वडयाईआ । (११ सावण शहनशाही सम्मत २)

पग तन मुख सीस सुहावा, जिन्नां उपर हरि जू दया कमाईआ । उहनां हँस बणाए फड़ के विच्चों कावां, कागों हँस उडाईआ। गोद उठावे जिउँ पत्रां मावां, बाल अंञाणे वेख वखाईआ। दरगाह साची साचा ला के नावां, बन्दीखाने विच्चों बरी कराईआ। जन्म कर्म दा रहे कोई ना हावा, हौके दए मिटाईआ। जोती नाल जोत मिलौण दा करके दाअवा, अदालत इक्को इक्क दरसाईआ। मेल मिला के नाल कबीर जिहां भरावां, रविदासे नाल जोड़ जुड़ाईआ।

तराज़ू कंडा तोल के आपणे नाल सावां, रंग इक्को इक्क चढ़ाईआ। फड़ के गले लगावे बाहवां, डिगदयां लए उठाईआ। पार करा दए शौह जगत दरयावां, कूड़ी धार ना कोई वहाईआ। बलिहारी उहनां गुरमुखां गुरसिखां जावां, जो बण बण बैठे पान्धी राहीआ। समझ वालयां नूं अगला लेख समझावां, बुद्ध बिबेक कराईआ। सो हरफ़ सो पुरख निरञ्जण दा आपणा नावां, पतिपरमेश्वर आपणी आप करे वडयाईआ। हँ ब्रह्म लक्ख चुरासी जीव जंत सृष्ट सबाई बणावां, निरगुण हो के निरगुण वंड वंडाईआ। राजयां दा राज महाराज अखवावां, सचखण्ड निवासी सच्चा शहनशाहीआ। शेरां दा शेर बलधारी सिँघ आपणा जोर परगाटावां, दूजा सानी नज़र कोई ना आईआ। विष्नूं हो के घर घर दर दर सभ दी सेव कमावां, माण वड्डिआई ना कोई रखवाईआ। भगवान हो के एथे ओथे दो जहानां आदि जुगादि इक्को हुक्म सुणावां, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोलों जै जैकार करावां, बिन जैकार बच्या रहण कोई ना पाईआ। जिस जैकार दा डंका गोबिन्द कोलों वजावां, फतहि इक्को हत्थ रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान आपणी खेल खिलाईआ।

सोहँ अक्खर तूं मेरा मैं तेरा, दूजा नज़र कोई ना आईआ। महाराज सभ तों वड्डा शेरा, सिँघ पुरख अकाल वड्डी वडयाईआ। विष्नूं हो के ब्रह्मा बँधा बेड़ा, आपणे विच्चों लिआ प्रगटाईआ। भगवान हो के सभ नूं पाया घेरा, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल आपणे विच्च छुपाईआ। जै जै जै करा के सभ दा कर दे निबेड़ा, इक्को आपणा हुक्म मनाईआ। पग तन मुख सीस सुहावा, सोहणी वज्जी वधाईआ। कलिजुग जीव पंज तत्त दा पुतला बावा, बउरा होया समझ कोई ना आईआ। बिन सोचिआं समझयां बिन सतिगुर मिलयां ऐवें करदा रहे वाहवा वाहवा, वाहद भेव कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

नानक जपया सोहँ सो, तूं मेरा मैं तेरा तेरा मेरा इक्को नूर नज़री आईआ। आदि अन्त तेरा जावां हो, होका दे के गिआ सुणाईआ । लक्ख चुरासी नालों हो निर्मोह, नाता पुरख अकाल जुड़ाईआ। धुर दा लै के ढोआ ढो, सतिनाम जीवां जंतां गिआ वरताईआ। महाराज कह के उसदी चरनी गिआ छोह, सिँघ शेर मन्न के उसदी ओट तकाईआ। विष्नूं हो के अगली पिछली सुणी सो, सोभा विच्च वडयाईआ। श्री भगवान किसे नाल ना करे धरोह, उच्ची दे के आवाज़ गिआ जणाईआ। जै जैकार करे सभ ब्रह्मण्ड लोअ, देवत सुर गण गंधरब विष्न ब्रह्मा शिव रहे जस गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बेपरवाह बेपरवाही विच्च समाईआ।

सोहँ करे आत्म परमात्म मिलाप, विछोड़ा कोई नज़र ना आईआ। महाराज सभ दे कट्टणहारा पाप, दुरमत मैल धुआईआ। शेर सिँघ सभ दा बणे राखा राख, रक्खक इक्क अखवाईआ। विष्नूं हो के घर घर वेखे मार झात, भुक्खा रहण कोई ना पाईआ। भगवान हो के सभ दे मेटे रोग सन्ताप, सति सतिवादी इक्को घर जणाईआ। जिनां ने जै जैकार कीता उहनां नूं मिल्या साख्यात, सांझा यार हो के आपणा रंग रंगाईआ। नानक गोबिन्द कह के गिआ साफ, सृष्ट दृष्ट आप जणाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद कह के गए उह रसूलां दा रसूल

पाक, परवरदिगार नूर इल्लाहीआ। कवण जाणे किस दे नाल उहदा होवे इतफाक, इतफाकीआं आपणा मेल मिलाईआ। गोबिन्द लिखया इक्क भविख्त वाक, सोहणा बन्द बणाईआ। मेरा परम पुरख पिता पुरख अकाल सभ दी पुच्छे वात, वाहवा आपणा वेस वटाईआ। उह अगम्मी दस्से सांझी सभ नूं गाथ, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। बुद्धिवान कोई ना सके वाच, वाचक ज्ञानी समझ सके ना राईआ। जो नाम प्यार सतिगुर प्रेमी होए मुशताक, नशावर आपणा आप कराईआ। उस दा लहणा नेत्र नैणां देवणहारा करे बेबाक, धुर दा लेखा झोली पाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द करे अक्खरां वाला पाठ, अन्तर आत्म परमात्म आपणी वक्खरी दस्से पढ़ाईआ। जिथ्थे मणकयां वाली माला नहीं कोई साथ, हत्थां वाली चरखड़ी ना कोई भवाईआ। लिखण वाली नहीं कलम दवात कागज शाही रंग ना कोई चढ़ाईआ। जन भगतां बख्श के उह अजप्पा जाप, जगजीवण दाता जीवण विच्चों जीवण दए बदलाईआ। पैर तन मुख सिर सारे उह पाक, पत्तित पुनीत नज़रीं आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त निरगुण सरगुण सद देवणहार वडयाईआ। सो कहे प्रभ सर्ब विआपी, आदि अन्त इक्क अखवाईआ। हँ कहे प्रभ वड परतापी, महाराज अखवाईआ। महाराज कहे मेरे बल दा सर्ब मुहताजी, शेर सिँघ मेरी वडयाईआ। विष्नूं कहे मैं घर घर देवां भाजी, धुर दी वस्त वरताईआ। भगवान कहे मैं जुग चौकड़ी खेलां खेल आपणी अगम्मी बाज़ी, बणके नटूआ धुर दा सवांग वरताईआ। कोटन कोटां विच्चों लोकमात थोड़े गुरमुख करां राज़ी, जिनां आपणे नाल मिलाईआ। मैं वेखां कदे ना कोई शरअ नमाज़ी, तिलकां वालयां ना कोई वडयाईआ। जो अन्तर आत्म मैनूं मंगदे साथी, उहनां दा संग निभाईआ। ऊँचां नीचां बण के कमलापाती, पतिपरमेश्वर हो के वेख वखाईआ। जिनां ने सतिगुर शब्द हुक्म दी मन्न लई आखी, आखर पड़दा दिआं तुड़ाईआ। बजर कपाटी खोलु के ताकी, साचा नूर दिआं चमकाईआ। निरगुण जोत जगा के घर साचा दीवा बाती, अज्ञान अन्धेर दिआं मिटाईआ। आत्म सेजा दा बणके आप निवासी, भूमिका आपणी आप सुहाईआ। अगली दस्सां फेर बाती, बेवतनां हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दए वडयाईआ। (१४ पोह २०२१ बि)

साचा नाम भगत उधारी। साचा नाम जप, देवे जोत प्रभ निरँकारी। साचा नाम साचा जाम, दिवस रैण रहे खुमारी। साचा नाम पूरन काम, गुरमुख साचे रसन उच्चारी। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दर दरबारी।

साचा नाम सच घर पाओ। साचा नाम सच वणज कराओ। साचा नाम गुरमुख साचे आत्म सच वसाओ। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भुल्ल कदे ना जाओ।

साचा नाम साची सूरत। साचा नाम गुरमुख मिलाए अकाल मूरत। साचा नाम आत्म उपजाए साची तूरत। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जन भगतां आसा पूरत।

साचा नाम साचा गुण। साचा नाम साची धुन। साचा नाम गुरमुख साचे दर घर सुण। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे चुण। साचा नाम रंग रंगाए। साचा नाम संग रखवाए। साचा नाम पार लंघाए। साचा नाम रसना जप जीव अंगीकार

आप हो जाए। साचा नाम साचा तप गुरमुख साचे आप कराए। साच नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग वेला अन्त नेड़ ना आए।

साचा नाम आत्म सर। साचा नाम खोल्हे दर। साचा नाम रसन जप जीव, प्रभ साचे आए आत्म साचे घर। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा कर।

साचा नाम साची सार। साचा नाम सच वपार। साचा नाम इक्क सिकदार। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान वेले अन्त पावे सार। साचा नाम साची सीख्या। साचा नाम प्रभ देवे साची भीख्या। साचा नाम साचे प्रभ धुर दरगाहों लीख्या। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख कर आप परीख्या।

साचा नाम जीआ दाना। साचा नाम आत्म ज्ञाना। साचा नाम आत्म रस रस रस उपजाना। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाम दान गुरसिख जगाना।

साचा नाम रसना चीन। साचा नाम देवे वड परबीन। साचा नाम मुख रखाए गुरसिख तृप्ताए जिउँ जल मीन। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली दुनी दीन। साचा नाम साचा राखा। साचा नाम प्रभ साचे भाखा। साचा नाम प्रभ देवे अलख अलाखा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान होए सहाई आपे राखा।

साचा नाम साची सुर। साचा नाम सोहँ गुर। साचा नाम रसना जप जीव दर घर साचे जाए तुर। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाई घनकपुर।

साचा नाम रसना गाओ। साचा नाम प्रभ साचा पाओ। साचा नाउँ रसना पूरन ब्रह्म समाओ। साचा नाम जपाए आपणा आप, जीव कर्म जन लेख लिखाओ। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाई घनकपुर साचा नाम रसना गाओ।

साचा नाउँ सच समाए। साच नाम गुर दर ते पाए। साचा नाउँ हरि हरि ते गाए। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जो जन दर ते आए।

साचा नाम सोहँ राग। साचा नाम आप लगाए आत्म जाग। साचा नाम मेल मिलाए पूरन होए जीव भाग। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अनहद अनाहत आत्म उपजे साचा राग।

साचा नाम साचा रस। साच नाम रसना जप जीव, प्रभ साचा होए वस। साचा नाम प्रभ दर पीव, आत्म दुःखड़े जाइण नस्स। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ तीर चलाया कस।

साचा नाम साचा सोहँ। साचा नाम भेख मिटाए दोअं। साचा नाम एका एक मिलाए ओअं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द मात चलाए। आप वड्डिआए रसना गाए पवण सरूपी विच्च समाए। तीन भवन रिहा फिराए। आपणे गुण आप जणाए। साची धुन विच्च रखाए। साचा शब्द आप लिखाए।

सोहँ साचा शब्द साची धुन। साचा शब्द खोल्हे सुन्न। साचा शब्द प्रभ साचे दर जीव आए सुण। साचा शब्द नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किआ कोई जाणे साचे दे साचे गुण।

साचा नाम सीतल शांत। साचा नाम आप मिलावे एका इकांत। साचा नाम रसना गाए

आत्म होए शांत। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झूठा पिण्ड जीव भरांत। साचा नाम शब्द अधार। साचा नाम आत्म सार। साचा नाम रसना जप जीव जन्म सुधार। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पावे मोख दवार। साचा नाम सूखम सूखा। साचा नाम रसना जप जीव आत्म उतरे भूखा। साचा नाम रसना आत्म सुख देवे सुखीआ सुख साचा सूखा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीव जंतां उतारे सर्ब भूखा।

साचा नाम गुरसिख गाए। साचा नाम रिदे वसाए। साचा नाम नौं निध घर उपजाए। साचा नाम देवे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रभ मिलण दी बिध बणाए। साचा नाम रसना गावणा। साचा नाम रिदे वसावणा। साचा नाम रसना जप जीव प्रभ अबिनाशी विच्चों पावणा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल जिस पार लँघावणा। साचा नाम सच सूरबीरा। साचा नाम सोहँ तीरा। साचा नाम जगत चलाए आप खिचाए जोत नीरा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माण गवाए पीर फ़कीरा। साचा नाम आपे वंडे। साचा नाम प्रभ साचा आप धरे वरभंडे। साचा नाम गुरसिख रसना जप, गुरसिख प्रभ साचा लाए कन्ढे। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चढ़ाए साचे दर साचे डण्डे।

साचा नाम गुर का रंग। साचा नाम सदा संग। साचा नाम अजूनी सै भंग। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना दिसाए रूप रंग।

साचा नाम साचा रूपा। साचा नाम सति सरूपा। साचा नाम जोत जगाए विच्च अन्ध कूपा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जन वड भूपन भूपा। साचा नाम सीतल सन्तोख। साचा नाम अन्तम मोख। साचा नाम मिटाए आत्म दोख। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा मोख।

साचा नाम साचा धाम। साचा नाम रंग करतार। साचा नाम महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कल जामा धार। साचा नाम कारज सिध। साचा नाम आत्म विध। साचा नाम गुरसिख सिख उपजाए कल नव निध। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप खुल्ह़ाए आपणा तिध*।

साचा नाम देवे अखल्ल। साचा नाम एक जगत अट्टल। साचा नाम गुरमुख साचे आप दवाए जोत प्रगटाए कल। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे जल।

साचा नाम बल बलवन्ता। साचा नाम मेल मिलावे साचा कन्ता। साचा नाम कन्न सुणावे प्रभ साचे सन्ता। साचा नाम देवे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए साची बणता। साचा नाम गुर साचे दीआ। साचा नाम गुरमुख साचे निर्मल जीआ। साचा नाम सोहँ आत्म बीज साचा बीआ। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाया दीआ।

साचा नाम थिर घर वास। साचा नाम मेल मिलाए एका जोत प्रकाश। साचा नाम भेव खुल्ह़ाए दरस दिखाए प्रभ अबिनाश। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे रसना जप स्वास स्वास।

साचा नाम हिरदे वास। साचा नाम आप कराए दासन दास। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सद वसे पास।

साचा नाम साचा मीत। साचा नाम आत्म उपजावे गुर चरन प्रीत। साचा नाम रसना जप जीव आत्म रहे सदा अतीत। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना जप मानस जन्म जग जीत।

साचा नाम करे उजिआर। साचा नाम मिटाए अन्ध अंधिआर। साचा नाम देवे आप निरँकार। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख होए भवजल पार।

साचा नाम आप जणाए। साचा नाम आप सुणाए। साचा नाम माण ताण रखाए। साचा नाम गुरमुख साचे विच्च बबाण बिठाए। साचा नाम भगत भगवान आप मेल मिलाए। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां दया कमाए।

साचा नाम एका ओट। साचा नाम एका चोट। साचा नाम आत्म कढ्ढे खोट। साचा नाम आप उतारे पाप कोट। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अतुल्ल भंडार ना आवे कदे तोट।

साचा नाम अतुल भंडारा। साचा नाम वड संसारा । साचा नाम गुर दर लेवे गुरमुख प्यारा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रागन राग राग मझारा।

साचा नाम राग मांझ। साचा नाम आत्म सांझ। साचा नाम गुरमुख साचे भाग लगाए, जो नर नारी रहे बांझ। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत रखाए साची सांझ। साचा नाम गुरमुख सच। साचा नाम गुरमुख हिरदे वच। साचा नाम प्रभ साचा देवे आत्म जाए रच। सच्चा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख बणा कंचन कच।

साचा नाम गुरसिख उधार। साचा नाम प्रभ साचा देवे सच दरबार। साचा नाम प्रभ साचे दा सच वरतार। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां भरे आप भंडार। साचा नाम सच ख़ज़ीना। साचा नाम देवे परबीना। साचा नाम गुरमुख विरले रसना जपीना। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना जप जप जीव शांत कराए सीना।

साचा नाम तृखा मिटाए। साचा नाम साची सिख्या गुर दर दवाए। साचा नाम जिस धुरों लिखवया, प्रगट जोत आप जपाए। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची सिख्या, गुरमुख भुल्ल ना जाए।

साचा नाम धुर दा लेख। साचा नाम आप जपाए, गुरमुख साचे वेख। साचा नाम आप जपाए, जोत सरूपी धारे भेख। साचा नाम रसना गाए, सोहँ शब्द वड वड वसेख। साचा नाम जन विरला पाए, जिन मिटाए विधना लेख। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माण गवाए पीर पैगम्बर औलीए शेख़।

साचा नाम साची बणत। साचा नाम सर्ब तराए जीव जंत। साचा नाम लिखाए जोत सरूपी बैठ इकन्त। साचा नाम मात धराए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन भगवन्त।

साचा नाम पूरन आसा। साचा नाम प्रभ देवे आत्म भरवासा। साचा नाम रसना जप जीव, प्रभ आत्म करे रासा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे

एका किनका एका तिनका ना तोला ना मासा। साचा नाम सद अतोल। साचा नाम सद अडोल। साचा नाम आप सुणाए प्रभ अबिनाशी रसना बोल। साचा नाम जन रसना गाए, प्रभ साचा मेल मिलाए जीव सद रहे कोल। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तेरे आत्म पड़दे खोलू।

साचा नाम मिटे द्वैत। साचा नाम सच शराइत। साचा नाम सच हदैत। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए एक सोहँ साची आइत। साचा नाम इक्क अलाह। साचा नाम प्रभ जगत धराए सर्ब दा तला। साचा नाम साचा प्रभ गुरसिख तेरे अग्गे लै खड़ा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाई शब्द लिखाई गुर संगत मिलाई ना लावे घड़ी पला।

साचा नाम कोटन कोटी। साचा नाम प्रभ साचे दी साची सोटी। साचा नाम गुरमुखां आप रखाए उपर चोटी। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां जिउँ बालक माता रोटी।

साचा नाम दया दान। साचा नाम गुरमुख साचे प्रभ दर ते पाण। साचा नाम मेट मिटाए आवण जाण। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगटाए जोत सुणाए कान। साचा नाम प्रभ साचा बोले। साचा नाम जन पड़दे खोलू। साचा नाम मेल मिलाए, गुरमुख साचे प्रभ साचा विच्च बैठा तेरे ओहले। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख गुर आपणा भेव आपे खोलू।

साचा नाम भउ चुकाए। साचा नाम साचे दाओ जीआं लगाए। साचा नाम साचे थाउँ गुरसिख बहाए। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म मरन भउ चुकाए।

साचा नाम मिटे रोग। साचा नाम चुके सोग। साचा नाम रसना जप जीव प्रभ देवे दरस अमोघ। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आत्म रस साचा भोग।

साचा नाम आत्म रसया। साचा नाम प्रभ साचे दस्सया। साचा नाम गुरमुख साचे तेरे हिरदे वस्सया। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाए कोट रव ससया।

साचा नाम साची कार। साचा नाम गुरसिख प्यार। साचा नाम सद रसन उच्चार। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग ना आवे हार।

साचा नाम अन्त कल। साचा नाम गुरसिख जप ना वेला जाए टल । साचा नाम गुरमुख हिरदे सच समाए अमृत मेघ बरसाए जाइण पप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग खेल वरताए आप कराए जल थल। (२३ सावण २००६ बि)

सच शब्द जगत धन्न। सच शब्द भगत मन्न। सच शब्द रंगत तन। सच शब्द मंगत जन। सच शब्द भाण्डा भउ देवे भन्न। सच शब्द धर्म राए ना देवे डंन। सच शब्द गुरसिख बेड़ा देवे बंनू। सच शब्द एका जोत जगाए तन। सच शब्द साची धुन उपजाए शब्द कन्न। सच शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां बेड़ा देवे बंनू।

सच शब्द संगत वधाई। सच शब्द हरि लिव लाई। सच शब्द हरि पुरन बूझ बुझाई। सच शब्द हरि साचे रंग रंगाई। सच शब्द आत्म नंग कटाई। सच शब्द वरभंड देवे वड्डिआई। सच शब्द नवखण्ड दे विच्च चलाई। सच शब्द ब्रह्मण्ड जैकार कराई। सच शब्द तीन लोक हरि देवे वंड, आपणे हत्थ रक्खे वड्डिआई। सच शब्द बेमुखां देवे डण्ड, सार किसे ना पाई। सच शब्द जो जन देवण कंड, तिन देवे सखत सजाई। सच शब्द चंड प्रचंड, प्रभ साचे हत्थ उठाई। सच शब्द बेमुख झूठे पाइण डण्ड, कोई ना पार लंघाई। सच शब्द आप कराए खण्ड खण्ड, प्रभ साचा रिहा लिखवाई। सच शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हत्थ रक्खी वड्डिआई।

सच शब्द जगत दी धारा। सच शब्द देवे हरि निरँकारा। सच शब्द दूई द्वैत दे निवारा। सच शब्द आपणे रंग रंगे गिरधारा। सच शब्द गुरमुखां भरे भंडारा। सच शब्द देवे देवणहार दातारा। सच शब्द गुरमुखां दिसाए साचा घर बाहरा। सच शब्द गुरमुख विरले कल विचारा। सच शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन पुरख अपारा।

सच शब्द सच्ची धुनकारी। सच शब्द हरि देवे आप निरँकारी। सच शब्द गुरमुख विरला बणे वपारी। सच शब्द एका जोत एका धारी। सच शब्द आत्म करे सर्ब असवारी। सच शब्द नाम निधान देवे जीव अधारी। सच शब्द गुरमुख विरले पाइण आइण चल दवारी। सच शब्द जूठे झूठे रहे झक्ख मारी। सच शब्द आत्म करे कारी। सच शब्द रात दिवस रहे इक्क खुमारी। सच शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन निमस्कारी। सच शब्द नाम निधाना। सच शब्द आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाना । सच शब्द बुध बबेक करे बिध नाना। सच शब्द सोहँ बंधे साचा गाना। सच शब्द सृष्ट सबाई डंन लगाणा। सच शब्द आप चलाए हरि भगवाना। सच शब्द गुरसिख सुणाए काना। सच शब्द इक्क कराए मेल भगत भगवाना। सच शब्द आत्म जोती दीप जगाणा। सच शब्द दर घर साचे काया महल्ल बणाना। सच शब्द गुर साचे दरसाणा। सच शब्द तीन लोक एका रंग रंगाणा। सच शब्द भुलिआं रुलिआं कल मार्ग लाणा। सच शब्द आत्म डुलिआं दे मत आप समझाणा। सच शब्द गुरमुख विरला जाणे चतुर सुजाना। सच शब्द अमृत फल साचा खाणा। सच शब्द चरन कँवल प्रीत निभाणा। सच शब्द तन गुर गुर रंगत आप रंगाणा। सच शब्द आत्म जन सर्ब कढाणा। सच शब्द पारब्रह्म हरि दर्शन पाणा। सच शब्द आपे देवे जीआ दाना। सच शब्द मेल मिलाए हरि निरञ्जण, पहरया हरि दा बाणा। सच शब्द चार कुण्ट इक्क दिखाणा। सच शब्द चार वरन विच्च मात दे गाणा। सच शब्द सतिजुग साचे मिले माणा। सच शब्द सृष्ट सबाई एका आणा। सच शब्द दूसर दिसे ना कोई टिकाणा। सच शब्द रसना गावे, ऊँच नीच राजा राणा। सच शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। सच शब्द साची धार। सच शब्द आत्म सदा असवार। सच शब्द मारे काम क्रोध हँकार। सच शब्द आपे पाए सार। सच शब्द नाम निधान देवे करतार। सच शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां कर प्यार।

सच शब्द गुर मेहरबान। सच शब्द झुल्ले जगत इक्क निशान। सच शब्द हरि आपणे रंग रंगान। सच शब्द एका मात रखाए साची शान। सच शब्द सोहँ देवे साचा दान। सच शब्द नाम निरञ्जण लए पछाण। साचा नाम देवे सोहँ दान। साचा नाम राओ रंक इक्क

कर जाण। साचा नाम साचा डंक विच्च जहान। साचा नाम हरि देवे सच बबान। साचा नाम गुरमुख विरले कल चढ़ जाण। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। साचा नाम सच उडारी। साचा नाम सच घर बाहरी। साचा नाम आत्म देवे नाम खुमारी। साचा नाम कट्टे तनों बिमारी। साचा नाम हरि देवे सूतर धारी। साचा नाम एका रंग सच्चा करतारी। साचा नाम गुरमुख विरला लेवे जीव संसारी। साचा नाम हरि साचा वरतारी। साचा नाम देवणहार इक्क दातारी। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन करे चरन निमस्कारी।

सच नाम सच जगत दी दाता। सच नाम वड जगत करामाता। सच नाम चरन प्रीती साचा नाता। सच नाम आप पुच्छे गुरसिख तेरी वात चार वरन ऊँच नीच दा भेख मिटाता। साचा नाम कलिजुग मिटाए अन्धेरी राता। साचा नाम गुरसिख पढ़ाए इक्क जमाता। साचा नाम आपे देवे साची दाता। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग रंगाता।

साचा नाम सच शब्द आत्म घनघोर। साचा नाम पंजे बंनू चोर। साचा नाम चरन प्रीती देवे जोड़। साचा नाम एका वर लैणा लोड़। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती लए जोड़।

साचा नाम सच कर माना। साचा नाम हरि देवे सच बबाना। साचा नाम राओ रंक विच्च समाना। साचा नाम गुर मत्ती दे समझाणा। साचा नाम अन्तम तत्ती वा ना लाणा। साचा नाम साचा जती आप अखवाणा। साचा नाम एका रत्ती जोत जगाणा। साचा नाम बहे बिध भांती हरि वरताणा। साचा नाम दिवस राती हरि लिखाणा। साचा नाम चरन प्रीती साची रीत दे मत आप समझाणा। साचा नाम गुरमुखां पुच्छे वाती, वेले अन्त आप छुडाणा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना।

साचा नाम खण्डा दो धार। साचा नाम गुरमुखां लाए पार। साचा नाम बेमुखां करे खुआर। साचा नाम ठंडा दरबार। साचा नाम चंड प्रचंड करे जगत खुआर। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार।

साचा नाम साचा रंग। साचा नाम गुरमुख मंगे साची मंग। साचा नाम कदे ना होवे भंग। साचा नाम आत्म तृष्ना मिटाए आप कसाए साचा तंग। साचा नाम अमृत झिरना झिराए गंग। साचा नाम बेमुखां धर्म राए दर देवे टंग। साचा नाम माया नागण ना लाए डंग। साचा नाम रसना गाए होए सहाए अंग संग। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर मंगी साची मंग।

साचा नाम सच्चा गिरधारी। साचा नाम देवे हरि परवरदिगारी। साचा नाम एका सच उडारी। साचा नाम आत्म सच असवारी। साचा नाम पवण सरूपी इक्क हुलारी। साचा नाम आत्म साची बूझ बुझारी। साचा नाम जोत जगाऐ काया अन्ध अंधिआरी। साचा नाम साची देवे इक्क खुमारी। साचा नाम सुन मुन आप खुल्लारी। साचा नाम एका दीप उजिआरी। साचा नाम आपे करे साची कारी। साचा नाम दिवस रैण एका धारी। साचा नाम अनहद धुन सच्ची धुनकारी। साचा नाम दसम दवारी सच खुल्लारी। साचा नाम एका जोत करे उजिआरी। साचा नाम देवे मेल सच गिरधारी। साचा नाम देवणहार इक्क दातारी। साचा

नाम गुरमुखां आत्म भरे भण्डारी। साचा नाम एका करे साची कारी। साचा नाम दिवस रैण रसन उच्चारी। साचा नाम मानस जन्म जाए सवारी। साचा नाम साचा धर्म विच्च संसारी। साचा नाम पूरन कर्म रिहा विचारी। साचा नाम मुकत जुगत दा इक्क सिकदारी। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत आए दवारी।

साचा नाम जगत वरतंत। साचा नाम मेल मिलावा साचे कन्त। साचा नाम आप दवाए, प्रभ साचा भगवन्त। साचा नाम माया पाए जगत बेअन्त। साचा नाम एका आप रखवाए आदि अन्त। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए साची बणत। साचा नाम साची रीत। साचा नाम एका बख्शे चरन प्रीत। साचा नाम गुरमुख काया करे सीत। साचा नाम जप मानस जन्म जाणा जग जीत। साचा नाम एका राखो हरि हरि चीत। साचा नाम आपे परखे साची नीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन करे चरन प्रीत।

चरन प्रीत साची आसा। चरन प्रीत आपे करे बन्द खलासा। चरन प्रीत हरि हिरदे वासा। चरन प्रीत गुरसिख रखवाए जिउँ सोना पासा। साचा नाम झूठी खेड झूठी दुनियां झूठा जगत तमाशा। साचा नाम हरि पाओ शाहो शाबाशा। साचा नाम दुःखां रोगाँ करे नासा। साचा नाम बेमुखां हत्थ फड़ाए झूठा कासा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेला हत्थ ना आए सृष्ट सबाई होए नास। (१३ जेठ २०१० बि)

गोबिन्द कहे सम्बल नगर जाए वड़, साचा मन्दर इक्क सुहावावांगा । दो जहान बणावां आपणा घर, गृह इक्को इक्क वखावांगा। साची चोटी आपे चढ़, आख़र आपणा रंग रंगावांगा। विष्नूं तेरा पल्लू फड़, तेरा पाया वास्ता पूर करावांगा। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त तेरा पूरा करे वर, वर दाता फेर अखवावांगा। निरगुण सरगुण रूप धर, सोहँ सति सति वड्डिआवांगा। महाराज हो निडर, भय भउ ना कोई रखावांगा। शेर हो के लोकमात जूह विच्च वड़, लक्ख चुरासी जीव सर्ब भजावांगा। सिँघ हो के सभ दी छाती जावां चढ़, मूंह दे भार सर्ब सुटावांगा। विष्नूं तूं सेवा करीं घर घर, जन भगतां तेरा मेल मिलावांगा। अन्त भगवान पल्लू लए फड़, फड़या पल्लू आपणे नाल बंधावांगा। औंदा जांदा दो जहानां जै जैकार लैणा कर, हरि करता रूप वखावांगा। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै एहदा कोई घाड़न सके ना घड़, घड़न भन्नणहार आप अखवावांगा। जो एह ढोला लए पढ़, तिस आपणा मेल मिलावांगा । विष्नूं तूं वी डिगणा दड़, तेरा माण मिटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग इक्क दरसावांगा।

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जै जैकारा, हरि का रूप दरसाईआ। जिस दा आदि अन्त नज़र ना आया किनारा, सो साहिब रिहा सुणाईआ। जिस दा गुर अवतार पीर पैगम्बर तक्कदे रहे सहारा, सो सतिगुर करे पढ़ाईआ। जिस दा खाणी बाणी बोध अगाधा सहारा, सो साहिब बेपरवाहीआ। भगत भगवान वखाए इक्क दुआरा, दर दरवाज़ा आप खुलाईआ। काग़द कलम ना लिखणहारा, नेत्र रोवे समुन्द सागर शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जै जैकार इक्क जणाईआ।

जै जैकार भगत भगवान, श्री भगवान आप समझाइंदा। विष्नूं मंगया विश्व दान, वस्तू हरि जी झोली पाइंदा। सिँघ शेर वड बलवान, प्रभ आपणे नाम भबक लगाइंदा। महाराज बण

प्रधान, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। हँ रूप सर्ब जहान, गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस जन आपणा रंग रंगाइंदा। सो पुरख निरञ्जण सभ दी करे कल्याण, करता आपणी कार कमाइंदा। आदि सो अन्त भगवान दोहां दी होवे जै, जै जैकार दो जहान अलाइंदा। दूजा कोई मात ना रहे, जो घड़या भन्न वखाइंदा। सच दुआरे सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी शब्द अनादी सतिगुर पूरा बहे, दूजा आसण कोई ना लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दा सच जैकारा, निरगुण सरगुण करे प्यारा, आत्म परमात्म मेल दुआरा, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा गहर गम्भीर बेनज़ीर बेतस्वीर, लाशरीक शहनशाह इक्को इक्क जणाईआ।

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै, जो नाअरा लए लगाईआ। तिस सिर जम का डण्ड ना रहे, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। लक्ख चुरासी वहण ना वहे, मात गरभ ना फेरा पाईआ । पुरख अकाल दी चरनी बहे, जिस दुआर मिले वडयाईआ। नाता तुट्टे तूं मैं, मैं तूं रहण ना पाईआ। जिस नूं गुर अवतार पीर पैगम्बर कहन्दे गए हैं, हरि जू की खेल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को नाअरा दए वडयाईआ। (२२ विसाख २०२० बि)

साचा मार्ग : साचा मार्ग सोहँ नाउँ, गुर दर पावे माण जिन रसना गाओ, दरगाह होवे परवान जिन रिदे वस्सया। महाराज शेर सिँघ मारे बाण, बेमुख दर ते जाए नस्सया। (२६ फग्गण २००७ बि)

साचा मार्ग सतिजुग सोहँ दस्सया। तरया हरया जिन प्रभ हिरदे वस्सया। भंनया घड़या जोत सरूप विच्चों सभ नस्सया। महाराज शेर सिँघ नाउँ जग धरया, सोहँ शब्द रसना रसया। (१ चेत २००८ बि)

गुरसिखां दस्से राह सुखाला, चरन कँवल सच्ची शरनाईआ। देवे डंन ना मंगे हाला, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। मंगे दान ना शाह कंगाला, शाह पातशाह आप अखवाईआ। हत्थ ना फड़ाए कोई माला, मणका मन का दए भवाईआ। तीर्थ तट्ट ना घाले कोई घाला, चरन धूड़ अशनान कराईआ। पूजा करे ना हवन ज्वाला, घर निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां फन्दन दए कटाईआ।

गुरसिखां मार्ग देवे दस्स, दयानिध दया कमाईआ। हिरदे अन्दर जाए वस, जो जन सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान रसना गाईआ। मिटे रैण अन्धेरी मस, वदी सुदी ना कोई वखाईआ। सदा सुहेला वसे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। नाता तोड़े दस दस मास, मात गरभ फन्द कटाईआ। गुरसिख होए ना कदे निरास, जो जन इक्क वारी दर्शन पाईआ। लेखे लग्गे स्वास स्वास, लेखा आपणे हत्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क दरसाईआ।

साचा मार्ग राह सुखाला, निरगुण आप जणाया। दो जहानां फिरे इक्क इकल्ला, नौं खण्ड फेरा पाया। गुरसिखां फड़ाया आप आपणा पल्ला, गुरसिख लभ्भण किते ना जाया। गुरसिखां पिच्छे फिरे हो हो झल्ला, आपणी मत ना कोई वखाया। गुरमुख जोती आपे रला, आपणी जोत गिआ बुझाया। वसणहारा निहचल धाम अट्टला, गुरमुख तेरा धाम वडिआया। दूई

द्वैती मेटे सल्ला, सिर आपणा हत्थ रखवाया। सृष्ट सबाई भुलाए कर कर वल छला, सिख साचे लए मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग दए वखाया।

साचा मार्ग हरि करतार, सतिजुग साचे आप जणाईआ। बिन सतिगुर पूरे दूजे दर ना कोई निमस्कार, बिन जगदीश सीस भेट ना किसे चढ़ाईआ। राग छतीस गुरसिख तेरी गौंदे वार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। सतिगुर तेरा रहे सदा ख़बरदार, ग़फ़लत विच्च कदे ना आईआ। देवे सदा दरस दीदार, दीन दयाल वड्डी वडयाईआ। करे तरस विच्च संसार, कलिजुग अन्तम वेस वटाईआ । लए परख परखणहार, जगत जौहरी वेस धराईआ। कंगण ठग्ग चोर उतरया पार, लहणा देणा रिहा मुकाईआ। गुरसिखां करया हौला भार, सिर आपणा भार उठाईआ। छोटे बाले कर त्यार, साचा मार्ग लए वखाईआ। पिच्छे औणा वारो वार, भुल्ल कोई ना जाईआ। पाए मुल्ल आप करतार, करता कीमत आप चुकाईआ। सोहँ गाउणा जै जै जैकार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए आप सहाईआ।

होए सहाई सर्ब सुख दाता, दीन बंधप दीन दयाला। एथे ओथे पुच्छे वाता, करे खेल निराला। रल मिल संगत हरि जू नाल करे बाता, जिस मिल्या धुर दलाला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां देवे एका वर, फल लगाए आपणे डाला। गुरसिख डाली पत फुल्ल फलवाड़या, हरि साचा सच महकाइंदा। बूटा लाया पहली हाड़या, हरा सिच आप कराइंदा। आपे होए पिच्छे अगाड़या, दो जहानां सेव कमाइंदा। नेड़ ना आए मौत लाड़या, राए धर्म ना डंन लगाइंदा। गुरसिख सुरती रहे ना कुआरया, जिस जन आपणे लेखे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग एका दस्स, दरगाह साची मेल मिलाइंदा।

साचा मार्ग सतिगुर चरन, अवर ना कोई सुणाईआ। लेखा चुक्के मरन डरन, मरन डरन रहण ना पाईआ। नेत्र लोचण दर्शन हरन फरन, हरन फरन आप खुल्ह़ाईआ। किरपा करे करनी करन, करनहार इक्क अखवाईआ। जो जन दोए जोड़ एका वार सरन पढ़न, मात गरभ फेर ना आईआ। नाता तोड़े ज़ात पात वरन बरन, चार वरन अठारां बरन रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लाए आपणे लड़, आपणे पल्लू आप बंधाईआ।

साचा मार्ग करो ध्यान, हरि सतिगुर आप लगाया। ना कोई कराए तन अशनान, झूठी माटी ना पोच पुचाया। अन्दरे अन्दर बख्शे इक्क ज्ञान, नाम निधाना झोली पाया। सुरती शब्द देवे माण, अभिमाना मोह चुकाया। अमृत बख्शे पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटाया। नारी कन्त मिले हाणी हाण, गुर चेला वेख वखाया। जुग विछड़े आपे मेले आण, आप आपणा मेल मिलाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राह सुखाला इक्क रखाया। राह सुखाला सतिगुर दीना, दीनन उत्ते दया कमाईआ। पंज वार रसना मुख जिस जन चीना, पंच विकारा रहे ना राईआ। काया चोली रंग चाढ़े भीन्ना, भिन्नड़ी रैण दए वडयाईआ। गुरसिखां करे ठांडा सीना, अमृत मेघ बून्द स्वांती मुख चवाईआ। लेखा चुकाए जिउँ जल मीना, पुरख अबिनाशी वड वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे रिहा चलाईआ।

आपणे मार्ग आप चलाए, करे मेहर मेहरवाना। गुरसिख सज्जण कदे भुल्ल ना जाए, जिस बख्शे चरन ध्याना। त्रैगुण माया रुल ना जाए, मेल मिलाए श्री भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग एका देवे जीआ दाना।

जीआ दान जीवण दात, जुगत जगत हरि समझाईआ। निरगुण अक्खर निरगुण पूजा निरगुण पाठ, निरगुण करे पढ़ाईआ। गुरसिख तेरा लेखा लिखे ना कोई हाथ, समरथ हत्थ वडयाईआ। कागद कलम गाए तेरी गाथ, छाही लिख लिख रही शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दरस साचा हरि, गुरसिख साचे आप जगाईआ।

गुरसिख कदे ना डर, केहर रूप किहर सिँघ आप वखाइंदा। जिस ने घाड़न लिआ घड़, कर किरपा पार लंघाइंदा। जिस फड़ाया आपणा लड़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार विच्च ना कदे डुबाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप तरया गुरसिख आपणे नाल तराइंदा।

तारनहारा आ गिआ, निरगुण जोत कर उजिआर। नाउँ निरँकारा आपणा नाउँ रखा लिआ, निरगुण रूप अपर अपार। सतिजुग साचा मार्ग ला लिआ, चार वरनां इक्क आधार। हँ ब्रह्म मेल मिला लिआ, पारब्रह्म करे प्यार। पंज तत्त काया नाउँ ना कोई वड्डिआ लिआ, निरगुण नाउँ होए जैकार। सरगुण तेरा पन्ध मुका लिआ, लेखा चुक्कया गुर अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिखां देवे साचा वर, तरनी तरन आप करतार। तरनी तरन पुरख समरथ, समरथ पुरख वड्डी वडयाईआ। सगल वसूरे जाइण लथ्थ, जो जन दर्शन पाईआ। लहणा देणा चुक्के सीआं साढे तिन्न हत्थ, त्रैगुण जाल ना कोई विछाईआ। गुरसिख विके सतिगुर हट्ट, गुर का हट्ट चरन सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा जीआ दान, जीवण मुकत आप कराईआ। (२६ पोह २०१७ बि)

साचा मार्ग नाउँ हरि हरि, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। सोहँ शब्द अग्गे धर धर, धरत धवल दए सुहाईआ। सतिगुर करनी आपणी कर कर, गुरमुख किरत लेखे पाईआ। निरधन निरवैर आपे वर वर, आपणे अंग लगाईआ। लख चुरासी विचों फड़ फड़, आपणी गोद बहाईआ । आपणा नाउँ आपे पढ़ पढ़, गुरसिखां रिहा सुणाईआ। आपणी अगन आपे सड़ सड़, गुरमुखां अग्ग बुझाईआ। आपणे पौड़े आपे चढ़ चढ़, आपणा रूप दरसाईआ। आपणी हिंमत आपे हरि हरि, गुरमुखां हिंमत रिहा वधाईआ। आपणी किरपा आपे कर कर, गुरसिखां डर भय भउ चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुखाला एका मार्ग संसार सागर दए तराईआ। (१८ फग्गण २०१७ बि)

साचा मार्ग साचा राह, सो पुरख निरञ्जण आप बणाया। बैठा रहे बेपरवाह, हरि पुरख निरञ्जण वेस वटाया। एकँकारा जाणे आपणा साचा थां, दरगाह साची भेव ना राया। आदि निरञ्जण अनुभव प्रकाश बणे मलाह, अबिनाशी करता साचा बेड़ा लए चलाया। श्री भगवान आपणे मन्दर बह बह गाए आपणा नां, नाउँ निरँकारा आप धराया। पारब्रह्म आदि जुगादि जुगा जुगन्तर करे खेल सच्चा मेहरवां, मिहबान आपणा हुक्म चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क वखाया।

साचा मार्ग हरि करतारा, दरगाह साची आप रखवाइंदा । दिस ना आए विच्च संसारा, लोकमात भेव कोई ना पाइंदा। हरि का राह तक्के ब्रह्मा विष्न शिव कर विचारा, नेत्र नैण ना कोई दरसाइंदा। पुरख अबिनाशी करे खेल अपर अपारा, अपरम्पर आपणी धार चलाइंदा। धाम अव्वलड़ा ठांडा दरबारा, चार कुण्ट ना कोई दवारा, दर दरवाजा ना कोई खुलायंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप बणाइंदा।

साचा मार्ग निहचल धाम, असथल दवारे आप उपाईआ। आवे जावे एका राम, दूसर अवर ना कोई चढ़ाईआ। करे कराए साचा काम, करता पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपणा पन्थ आपे वेख वखाईआ।

साचा मार्ग सच महल्ला, हरि साचे सच लगाया। अन्दर बाहर इक्क इकल्ला, निरगुण निरगुण फेरा पाया। थान सुहाए उच्च अट्टला, महल्ल अट्टल आप वडिआया। सच सिँघासण आपे मल्ला, सोभावन्त रिहा सुहाया। आप फड़ाए आपणा पल्ला, पल्लू दूसर हत्थ किसे ना आया। आपणी जोत आपे रल्ला, जोती जोत डगमगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा राह आपे वेख वखाया।

साचा राह सचखण्ड, सति पुरख निरञ्जण आप बणाईआ। आदि पुरख वंडी वंड, वंडणहार आप हो जाईआ। राह तक्कण कोटन ब्रह्मण्ड, दिस किसे ना आईआ। शब्द अगम्मी किल्ला कोट कंध, निरवैर पुरख आप बणाईआ। कोई करे ना प्रकाश, सूरज चन्द, आपणा नूर ज़हूर रुशनाईआ। आपे जाणे आपणा पन्ध, हरि पान्धी सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क रखवाईआ।

साचा मार्ग उच्चे मन्दर, सो पुरख निरञ्जण आप लगाया। आप जाणे अन्दरे अन्दर, आपणी खेल आप रचाया। साचे धाम आप सुहंदड़, सति पुरख निरञ्जण बेपरवाहिआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे राहे आपे पाया।

आपणा राह हरि करतार, हरि दर साचे आप जणाईआ। ना कोई जाणे आर पार किनार, दो जहान वड्डी वडयाईआ। ना कोई बाढी बणाए विच्च संसार, रूप अनूप ना कोई दरसाईआ। ना कोई लेखा लिखे बण लिखार, कातब बैठा मुख शरमाईआ। ना कोई तालब तलब करे परवरदिगार, तुलबा मात ना कोई पढ़ाईआ। ना कोई अक्खर सके विचार, पैंतीस अक्खर देण दुहाईआ। ना कोई गुर खोल सके किवाड़, बैठे ताड़ीआं लाईआ। ना कोई अवतार वखाए किसे संसार, बेअन्त बेअन्त बेअन्त रहे सभ गाईआ। हरि का मन्दर अगम्म अपार, मार्ग अगम्म आपणे विच्च छुपाईआ। जुगा जुगन्तर साची कार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हत्थ रखवाईआ।

साचा राह सर्ब गुणवन्त, दर घर साचे आप लगाइंदा। आवे जावे इक्क भगवन्त, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। राह तक्कण कोटन कोट सन्त, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। वेस अनेका करे अनन्त, अनन्त कल आपणी खेल खलाइंदा। आदि जुगादी महिमा अगणत, लेखा लिखत ना कोई लिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क समझाइंदा।

साचा मार्ग हरि निरँकारा, लोकमात जणाईआ। गुर अवतार वसण थिर घर दवारा, शब्दी शब्द वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी हो उजिआरा, थिर घर आपणा पन्ध मुकाईआ। थिर

घर साचे होए बाहरा, निरगुण निरगुण धार चलाईआ। निरगुण पौड़ा निरगुण चढ़नेहारा, निरगुण डण्डा इक्क वखाईआ। निरगुण गुप्त निरगुण ज़ाहरा, निरगुण अन्दर बाहर वेस वटाईआ। निरगुण जाणे आपणी कारा, करे कार सच्चा पातशाहीआ। सचखण्ड वेखे आपणी धारा, धार धार विच्च प्रगटाईआ। आपणा राह रक्खे नयारा, निरवैर भेव ना आईआ। सचखण्ड साचे हो उजिआरा, जोती नूर नूर दरसाईआ। सच सिँघासण कर त्यारा, पुरख अबिनाशन आसण लाईआ। दर दरवेश बण भिखारा, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह आपणा सीस झुकाईआ। सीस जगदीस सोहे दस्तारा, पंचम पंच पंच वडयाईआ। छत्तर झुलाए अपर अपारा, शहनशाह सच्चा शहनशाहीआ। करे कराए सच विहारा, आदि जुगादि वड्डी वडयाईआ। सचखण्ड तों होए बाहरा, आपणा मार्ग आपे वेखव वखाईआ। रूप रंग रेख ना कोई करे प्यारा, इष्ट ईश ना कोई धराईआ। आपणे अन्तर आपे वसे हरि निरँकारा, किला कोट ना कोई सुहाईआ। आपणा चरन रक्खे विच्च सचखण्ड दवारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपणे विच्च टिकाईआ।

आपणा मार्ग आपणे विच्च रक्खव , आदि पुरख दया कमाइंदा। सचखण्ड दवारिउँ हो वक्खव, आपणा भेव आपणे विच्च छुपाइंदा। आपणे अन्तर आपे हो प्रतक्खव, आपणी खेल खलाइंदा। आपे जाणे आपणा पक्खव, वेला वक्त ना कोई वखाइंदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे राह चलाइंदा। आपे रूप होए पुरख समरथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा मेला आप मिलाइंदा।

आपणा मेल मिलावणहारा, आदि पुरख अखवाया। सो पुरख निरञ्जण रूप धर नयारा, सचखण्ड डेरा लाया। हरि पुरख निरञ्जण कर पसारा, सच सिँघासण सोभा पाया। एकँकारा भेव नयारा, दर दरबाना सीस झुकाया। आदि निरञ्जण कर पसारा, मेटणहारा धूआंधारा, जोती जोत नूर रुशनाया। श्री भगवान साचा लाड़ा, सचखण्ड दवारे लाया पाड़ा, घर घर विच्च लए प्रगटाया । श्री भगवान मीत मुरारा, सेवक सेवा करे अपारा, थिर घर साचा बंक उपाया। पारब्रह्म प्रभ कर पसारा, थिर घर वसे एका धारा, निरगुण निरगुण सच विहारा, नारी कन्त रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग दए समझाया।

थिर घर साचे नारी कन्त, पारब्रह्म खुशी मनाईआ। आपणी चोली आपे रंगे बसन्त, रूप अनूप आप चढ़ाईआ। आपणी बणाए आपे बणत, अन्दर बाहर खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग वेखव वखाईआ।

नारी कन्त सच प्यारा, हरि हरि आपणी सेज हंढाइंदा। जननी जन बणे निरँकारा, साची गोद आप सुहाइंदा। सुत बणाया शब्द दुलारा, आपणी कुखों बाहर कढाइंदा। दाई दाया बण अगम्म अपारा, आपणी खेल खलाइंदा। हरि का मार्ग ना कोई जाणे आपे होए जानणहारा, आपणा राह आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे आपे वड़, पिता पूत माता आपणा नाउँ धराइंदा।

मात पित पुत बालक, हरि साची खेल खलाईआ। निरगुण निरगुण बण बण सालस, साची सालसी इक्क वखाईआ। आपणा रूप धरया खालस, दूसर अवर ना कोई मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

सुत दुलारा हरि हरि जाया, जननी जन सोभा पाइंदा। दाई दाया बण बण सेव कमाया, सेवा आपणे हत्थ रखवाइंदा। आपणा मार्ग दए समझाया, पान्धी आपणा पन्ध वखाइंदा। धुर फ़रमाणा इक्क जणाया, हुक्मी हुक्म आप अलाइंदा। निरगुण निरवैर पुरख अकाल दरस दिखाया, जोती नूर डगमगाइंदा। समरथ हत्थ सिर आप टिकाया, महिमा अकथ्थ आप पढ़ाइंदा। आपणा रूप आप प्रगटाया, आप आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क समझाइंदा।

साचा मार्ग हरि हरि सुत, हरि साचा सच दृढ़ाईआ। किरपा करे अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। आप सुहाए साची रुत्त, रुत्त रुतड़ी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आपे लाईआ।

साचा मार्ग लावणा, हरि साचा सच जणाइंदा। सुत दुलारा इक्क उठावणा, आप आपणा हुक्म सुणाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां रचन रचावणा, सूरज चन्न आप चढ़ाइंदा। मण्डल मंडप आप वसावणा, धरत धवल जल बिंब आपणा खेल खलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क समझाइंदा।

साचा मार्ग कर त्यार, हरि साचा सच जणाईआ । शब्द सुत दए आधार, सीस जगदीस हत्थ टिकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर त्यार, त्रैगुण मेला दए मिलाईआ। पंज तत्त करे प्यार, खेले खेल सच्चा शहनशाहीआ। लख चुरासी घाड़न घड़ संसार, लोकमात दए धराईआ। माणस मनुख कर प्यार, मानव जाती लए वडयाईआ। देवे दाती धुर दी धार, धुर दरबारी आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग लोकमात आप चलाईआ।

लोकमात हरि राह चलाया, लख चुरासी कर विचार। गुरमुख साचे लए जगाया, आत्म अन्तर इक्क आधार। सन्त साजन लए उठाया, देवे अमृत रस ठंडा ठार। भगत भगवन्त मेल मिलाया, राह दस्से इक्क नयार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार।

साचा राह विच्च संसारा, सतिगुर पुरख आप जणाईआ। घर विच्च घर कर त्यारा, बंक दवारा दए वडयाईआ। गृह मन्दर दीपक कर उजिआरा, जोती नूर करे रुशनाईआ। अनहद शब्द नाद सच्ची धुंनकारा, दिवस रैण वजाईआ। घट वेखे धूआंधारा, अन्ध अन्धेरा आपणे हत्थ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग एका एक दए वडयाईआ।

काया अन्दर खेल अव्वला, हरि साचा सच कराइंदा। पंच फड़ाया एका पल्ला, एका धार बंधाइंदा। त्रैगुण माया आपे रल्ला, त्रै त्रै लेखा ना कोई जणाइंदा। दूई द्वैती लाया सल्ला, सांतक सति ना कोई वरताइंदा। पंच विकार करे हल्ला, दिवस रैण उठ उठ धाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आपणे हत्थ रखवाइंदा।

साचा मार्ग हरि निरँकारा, लोकमात आपणे हत्थ रखवाईआ। जुगा जुगन्तर लै अवतारा, आपणा पर्दा आप उठाईआ। जगत जुग मेटे धुंदूकारा, धूआंधार रहण ना पाईआ। साचा नाउँ करे सच जैकारा, शब्दी शब्द आप सुणाईआ। संसार सागर वेखे डूंघी गारा, कवरी भवरी फोल फुलाईआ। गुरमुख विरले बणाए सच सौदागर, वस्त अमोलक एका वणज कराईआ।

लेखा जाणे काया गागर, काची माटी हाटी साचे हट्ट विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क प्रगटाईआ।

साचा मार्ग लोकमात, सतिगुर पूरा आप जणाइंदा। शब्दी शब्द बंधाए साचा नात, जगत नाता इक्क रखवाइंदा। अगम्म अगम्मड़ी सुणाए गाथ, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। सदा सुहेला वसे साथ, सगला संग निभाइंदा। आप चढ़ाए आपणे राथ, रथ रथवाही सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क वडिआइंदा ।

साचा मार्ग गुरचरन कँवल, चार जुग वडिआइंदा। देवे वड्डिआई उपर धरत धवल, जो जन मार्ग एका पाइंदा। आत्म अन्तर खिले कँवल, उलटा कँवल आप भवाइंदा। पवण स्वासी जाए मवल, रुत्त बसन्ती आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मार्ग आपे लाइंदा।

साचे मार्ग आपे ला, गुर गुरसिख आप तराईआ। जुगा जुगन्तर बण मलाह, साचे बेड़े लए चढ़ाईआ। कर किरपा जणाए आपणा नां, नाउँ निरँकार आप धराईआ। मेल मिलाए थाउँ थां, सृष्ट सबाई फोल फुलाईआ। पकड़नहारा आपे बांह, बाज़ू बल ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप उपाईआ।

साचा मार्ग साचा पन्थ, मघ आपणा आप जणाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, बेअन्त बेपरवाहीआ। हरिजन बणाए साची बणत, घड़न भन्नणहार आप अखवाईआ। रसना जिह्वा एका मंत, सो पुरख निरञ्जण करे पढ़ाईआ। हँ हउमे गढ़ तुटे हंगत, हिंसा कोई रहण ना पाईआ। सचखण्ड दवारा साची संगत, सति पुरख निरञ्जण मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन दवारा दस्से साची जनत, घर साचा इक्क वखाईआ।

चरन दवारा राह सुखाला, गुर सतिगुर आप लगाया। नेत्र दरस सच्ची माला, मन का मणका आप भवाया। उधरे पार शाह कंगाला, शहनशाह ना कोई वडिआया। सति पुरख निरञ्जण बण दलाला, जगत दलेरी आप वखाया। नाता तोड़ काल महांकाला, गुरमुख लाल लए उठाया। जगत जुग चली अवल्लड़ी चाला, भेव कोई ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचा वेख वखाया।

राह सुखाला सहज गुणवन्त, गुणी गुण आपणा गुण जणाइंदा। धन्न वड्डिआई गुरमुख गुर गुर सन्त, सतिगुर साजण खेल खलाइंदा। नाम विहूणा जीव जंत, जागरत जोत ना कोई वखाइंदा। माया ममता देव दंत, त्रैगुण भेड़ भड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क वखाइंदा।

वाहवा मार्ग सतिगुर लाया, घर वज्जदी रहे वधाईआ। वाहवा मार्ग सतिगुर लाया, खोजण बन कोई ना जाईआ। वाहवा मार्ग सतिगुर लाया, तीर्थ तट्ट किनारा अठसठ फेरी ना कोई पाईआ। वाहवा मार्ग सतिगुर लाया, मन्दर मस्जिद मठ शिवदवाला वेखण कोई ना जाईआ। वाहवा सतिगुर मार्ग लाया, दुरमत मैल कट्ट, एका अमृत जाम प्याईआ। वाहवा सतिगुर मार्ग लाया, इक्क वखाए साचा हट्ट, नाम वस्त आप विकाईआ । वाहवा सतिगुर मार्ग लाया, गुरमुख विरला लाहा लए खट्ट, मनमुख बैठा मुख भवाईआ। वाहवा सतिगुर मार्ग लाया, हरिजन अमृत आत्म रस लए चट्ट, मनमुख थुकां मुख भराईआ। वाहवा सतिगुर मार्ग लाया, गढ़ हँकारी जाए ढठ्ठ, सति सन्तोखी एका बुरज बणाईआ। वाहवा सतिगुर मार्ग लाया,

हरिजन जोत जगाए लट लट, अन्ध अन्धेर रहण ना पाईआ। वाहवा सतिगुर मार्ग लाया, दूई द्वैती मेटे फट, एका रूप सर्ब दरसाईआ । वाहवा सतिगुर मार्ग लाया, एका रूप वखाए घट घट, दूसर धार ना कोई जणाईआ। वाहवा सतिगुर मार्ग लाया, शब्द अगम्मी मारे सट, हरिजन सोए आप जगाईआ। वाहवा सतिगुर मार्ग लाया, गुरमुखां तन पहनाए नाम पट, जगत चीथड़ा पन्ध मुकाईआ। वाहवा सतिगुर मार्ग लाया, आपणा राह जाए दस्स, निहकलंक चरन सरन सच्ची सरनाईआ। वाहवा सतिगुर मार्ग लाया, हिरदे अन्दर जाए वस, वास्ताक रूप आपणा आप बुझाईआ । वाहवा सतिगुर मार्ग लाया, विष्न ब्रह्मा शिव चरन दवारे आइण नस, वेला वक्त आप समझाईआ। वाहवा सतिगुर मार्ग लाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग एका घर बणाईआ।

वाहवा सतिगुर मार्ग ला, लाशरीक दया कमाइंदा। वाहवा सतिगुर मार्ग ला , जगत तारीक अन्धेर मिटाइंदा। वाहवा सतिगुर मार्ग ला, जगत भगत भगवन्त रूप अनूप बारीक दिस किसे ना आइंदा। वाहवा सतिगुर मार्ग ला, हरि संगत दस्से इक्क तरीक, एका वक्त एका वेला गुरमुख गुरसिख हरिजन साचे पार कराइंदा । वाहवा सतिगुर मार्ग ला, अन्त ना देवे पीठ, मनमुख आपणा दरस दिखाइंदा। वाहवा सतिगुर मार्ग ला, मिट्ठा करे कौड़ा रीठ, जिस जन आपणा चरन छुहाइंदा। वाहवा सतिगुर मार्ग ला, काया करे ठंडी सीत, जिस जन आपणा इष्ट वखाइंदा। वाहवा सतिगुर मार्ग ला, इक्क सुणाए सुहागी गीत, सोहँ शब्द आप गाइंदा। वाहवा सतिगुर मार्ग ला, गुरसिखां करे आप प्रीत, परत आपणा रूप वटाइंदा। आपणी परखे आपे नीत, गुरसिख जौहरी मात प्रगटाइंदा। जगत अवल्लड़ी चलाई रीत, चार जुग गुर अवतार राह ना कोई वखाइंदा। छड्ड सिँघासण बणया मीत, गुरसिख भगत सुदामे चरनां हेठ रखाइंदा। कलिजुग काल रिहा बीत, पतित पुनीत ना कोई कराइंदा। रविदास चुमार करे प्यार लेखा लिखे इक्क अनडीठ, अनडीठ रूप आप लिखाइंदा। जुग जुग अभुल्ल जो करी बिप्रीत, आपणी भुल्ल गुरसिखां कोलों आप बख्शाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा मार्ग आपणा राह जन भगतां मात दए वखा, दूसर नैण ना कोई खुलायंदा। (१६ फगण २०१७ बिक्रमी)

सच्चा मार्ग भगत भगवान, आदि जुगादि जणाइंदा। जिस जन किरपा करे महान, तिस आपणी दया कमाइंदा। पूजा पाठ सिमरन सर्ब लुक जाण, जिस आपणा मेल मिलाइंदा। आत्म अन्तर सच सरोवर कराए इशनान, अठसठ तीर्थ पन्ध मुकाइंदा। मन्दर मस्जिद दस्से ना कोई मकान, जिस जन काया काअबा आप वखाइंदा। निर्मल दीआ दीपक जगे महान, तेल बाती ना कोई पाइंदा। धुन आत्मक राग सुणाए बिन कान, बत्ती दन्द ना कोई वडिआइंदा। सच भूमिका सोहे असथान, जिस गृह आपणा आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान साची रीत, नाता तुटे मन्दर मसीत, गृह इक्को इक्क वखाइंदा।

काया अन्दर हरि जू हरिमन्दर, निरगुण सरगुण आप जणाईआ। मेल मिलाए अन्दरे अन्दर, सुरती शब्द करे कुड़माईआ। बज़र कपाटी तोड़े जंदर, दूई द्वैती पर्दा दए उठाईआ। करे

प्रकाश अन्धेरी कंधर, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। मन वासना बंनै बन्दर, दह दिशा ना उठ उठ धाईआ। शब्द अगम्मी मारे ख़ंजर, खण्डा खड़ग इक्क चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान आपणा राह जणाईआ। (२० चेत २०२० बि)

कलिजुग अन्त हो प्रगट, पारब्रह्म प्रभ भेव चुकाईआ। साचा मार्ग साहिब दस्स, दह दिशा करे शनवाईआ। इक्को मन्नो पुरख समरथ, अकाल पुरख वड्डी वडयाईआ। नाता तोड़ो पंज तत्त, पंज तत्त गुरू ना कोई अखवाईआ। शब्द गुरू हर घट रिहा वस, घर खोजो सज्जण भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम हट्टी दए जणाईआ। नाम हट्ट काया अन्दर, सो पुरख निरञ्जण आप टिकाइंदा। जन भगतो खोलो आपणा जंदर, कुंजी निरगुण आप प्रगटाइंदा। चढ़ के वेखो साचे मन्दर, सतिगर साचा नज़री आइंदा। मन वासना बंनो बन्दर, दह दिशा ना उठ उठ धाइंदा। भाग लगाओ अन्धेरे खण्डर, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क उपाइंदा।
साचा नाम इक्क प्रकाश, प्रकाशवान अखवाईआ। हरि का नाम शब्द स्वास, स्वास स्वास समाईआ। हरि का नाम खेल तमाश, ख़ालक ख़लक वेखे चाईं चाईंआ। हरि का नाम हरि की शाख़, शनाख़त आपणे हत्थ जणाईआ। हरि का नाम सतिगुर रिहा भाख, भाख्या अगली दए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ।

हरि का नाम नाम सो, सो सतिगुर आप जणाइंदा। हरि का नाम हँ ब्रह्म कर आए मोह, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। हरि का नाम महाराज रूप हो, महिमा आपणी सिफ्त सालाहिंदा। हरि का नाम शेर कूड़ी क्रिया लवे खोह, सच सुच इक्क वरताइंदा। हरि का नाम सिँघ बब्बर रूप हो के सभ नूं लए जोह, लक्ख चुरासी फोल फुलाइंदा। विष्नूं सेवादार बण के घर घर रिज़क ढोआ रिहा ढो, श्री भगवान सेव लगाइंदा। भगवान आपणे वरगा आपे हो, निरगुण आपणी कल रखाइंदा। जै जैकार करन सर्ब लोअ, लोक परलोक इक्को नाअरा लाइंदा। बिन सतिगुर नानक होर ना जाणे को, कबीर जोलाहा आपणा ध्यान लगाइंदा। लक्ख चुरासी रही रो, हरि का नाम हत्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नाम इक्को इक्क उपाइंदा। (२५ चेत २०२० बि)

साध : सो गुरमुख गुरसिख सच्चा साध, जिस साधना हरि समझाईआ । (१७ अस्सू २०१६ बि) बिन सतिगुर पूरे कोई ना बणे सच्चा साध, सच्ची साधना हत्थ किसे ना आईआ। (२२ अस्सू २०२० बि)

साबण : दुरमत मैल जाए धोती, नाम साबण रिहा लगाई है। (१७ मध्घर २०१० बि) महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा साबण लाए, काया धोए झूठे दाग। (५ चेत २०११ बि)

साढे सत्त : वीह सौ इक्क बिक्रमी प्यारी। कीती असां खेल नयारी । जेठ पहली मंगलवारी। आपणी जोत आकाशों उतारी। दो जेठ नूं खेल रचाया। पूरन सिँघ विच्च परमेश्वर आया। होई संध्धया पाई फेरी। कलिजुग दी ढाही ढेरी। साढे सत्त दा होया वेला। सतिगुर ने पाया फेरा। ऐसी असां कला वरवाई । पूरन सिँघ दी नबज़ हटाई। घर दे सारे देण दुहाई। प्रीतम सिँघ नूं आवाज़ लगाई। छेती आ जा घर असाडे। भाणा वरतया सतिगुर डाहढे। भेत असाडा किनै ना पाया। हा हा कर के शोर मचाया। मैं आपणी जोत प्रगटा के। आप आपणी जोत जगा के। महाराज शेर सिँघ नाम रखा के। (१४ भादरों २००६ बि)

साढे सत्त खेल नयारा, सो साहिब आप कराइंदा। साढे सत्त वक्त अपारा, गुर गोबिन्द वेख वखाइंदा। साढे सत्त उह नज़ारा, जिस वेले पुरी अनन्द तजाइंदा। साढे सत्त उह सहारा, जिस वेले सत्थर सेज हंढाइंदा। साढे सत्त उह पुकारा, परम पुरख मेल मिलाइंदा। साढे सत्त उह नाअरा, उच्ची कूक कूक अलाइंदा। साढे सत्त उह विहारा, जिस दा भेव कोई ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कमाइंदा। साढे सत्त उह नाद, श्री भगवान रिहा वजाईआ। साढे सत्त उह दाद, जो गुर अवतारां पीर पैगम्बरां झोली पाईआ। साढे सत्त उह आवाज़, जिस सुणन नूं विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाईआ। साढे सत्त उह दात, निरगुण सरगुण जो वरताईआ। साढे सत्त उह जमात, भगत भगवान आप फड़ाईआ। साढे सत्त उह हिसाब, जो गोबिन्द सरसे गिआ डुबाईआ। साढे सत्त उह किताब, बिन अक्खरां दए कढ्ढाईआ। साढे सत्त उह रबाब, अहबाब दए वजाईआ । साढे सत्त उह नकाब, नकाबप्पोश मुख तों दए उठाईआ। साढे सत्त उह आदाब, जन भगतां सीस झुकाईआ। साढे सत्त उह रकाब, शाहसवारा चरन टिकाईआ। साढे सत्त उह महराब, हुजरा हक़ हक़ वडयाईआ। साढे सत्त उह नवाब, जो पीर पैगम्बरां रिहा प्रगटाईआ। साढे सत्त उह सवाब, जो रहमत गुरमुखां उत्ते कमाईआ। साढे सत्त उह राज, रय्यत वेखे लक्ख चुरासी थाउँ थाईंआ। साढे सत्त उह समाज, चार वरन करे कुड़माईआ। साढे सत्त उह आफ्ताब, नूरो नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार आप वडयाईआ।

साढे सत्त उह वेला, हरि वक्ती वक्त जणाइंदा। साढे सत्त उह वेला, जिस वेले गुर चेला धार बंधाइंदा। साढे सत्त उह वेला, जिस वेले श्री भगवान आपणा दरस कराइंदा। साढे सत्त उह वेला, जिस वेले दुष्ट दमन हेम कुण्ट पकड़ उठाइंदा। साढे सत्त उह वेला, जिस वेले निहकर्मी आपणा कर्म कमाइंदा। साढे सत्त उह वेला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार वखाइंदा।

साढे सत्त उह रात, जेहड़ी गोबिन्द इक्को नज़री आईआ। साढे सत्त उह बरात, जो गुरमुखां दी लए चढ़ाईआ। साढे सत्त उह दात, जो निरगुण निरवैर दए वरताईआ। साढे सत्त उह नात, बिधाता आपणे नाल जुड़ाईआ। साढे सत्त उह वाक, भविख्त लेखा दए लिखाईआ। साढे सत्त उह कमलापात, कँवल नैण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहनशाहीआ।

साढे सत्त उह दीद, दीदार हरि जणाइंदा। साढे सत्त उह शहीद, जो करबला भेट चढ़ाइंदा।

साढे सत्त उह बकरीद, जो मूसे मूंह दे भार सुटाइंदा। साढे सत्त उह रसीद, जो गोबिन्द पुरख अकाल हत्थ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेला वक्त आपणे हत्थ रखवाइंदा।

साढे सत्त उह धार, धरत धवल बैठी ध्यान लगाईआ। साढे सत्त उह कार, करता पुरख आप कमाईआ। साढे सत्त उह विहार, गुर जोड़ी जोड़ जुड़ाईआ। साढे सत्त उह विचार, जो सोच समझ विच्च किसे ना आईआ। साढे सत्त उह निरँकार, जो घट घट रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप समझाईआ।
साढे सत्त उह खेल, आदि जुगादी आप कराइंदा। साढे सत्त उह मेल, मिल्या मेल विछड़ कोई ना जाइंदा। साढे सत्त उह तेल, बिन डूंम नाई आप चढ़ाइंदा। साढे सत्त उह जेल, लक्ख चुरासी फंद कटाइंदा। साढे सत्त उह सज्जण सुहेल, जो नानक गोबिन्द अंग लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा उहला आप उठाइंदा।
साढे सत्त उह सुहञ्जणी रैण, साध सन्त जिस दी ओट तकाईआ। साढे सत्त उह भाईआं मिले भैण, जिहड़ी विच्च विछोड़े कीरने पाईआ। साढे सत्त उह वेखे आपणे नैण, जो बिन नैणां आपणी नज़र मिलाईआ। साढे सत्त उह आए कहण, कह कह आपणी कथा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बण बण सच्चा साक सज्जण सैण, आपणा फेरा पाईआ।
वेला साढे सत्त सुहाएगा। श्री पत दया कमाएगा। रघुपत वेख वखाएगा। तत्त नज़र किसे ना आएगा। सट्ट आपणे नाम लगाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार मेल मिलाएगा। (३० चेत २०२० बि)

ढाई गज़ दुपट्टा दस्से सच्च, सर्ब रिहा समझाईआ। पैहलों प्रभ ने बध्धा लक्क, आपणे अंग लगाईआ। फेर बदन लिआ ढक, ओढण रूप वटाईआ। मैनूं दे वड्डिआई पंज हत्थ, लंमा दिता वधाईआ। साढे सत्तां फ़ुट्टां अन्दर रक्ख , सोहणी खुशी जणाईआ। नाएं सिफ़रे कर इक्ठ, नब्बे इंचां वंड वंडाईआ। कर खेल पुरख समरथ, मेरी सोहणी सेव लगाईआ। पड़दे अन्दर ढक, आपणे घर सुहाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी कार कमाईआ। (२४ माघ २०२० बि)

झट्ट मनी सिँघ कीती अरदास, चक्कर चारों कुण्ट लगाईआ। तेरा खेल वेखणा ख़ास, साहिब तेरे विच्च समाईआ। मात गरभ जन्म लवां ना दस दस मास, अगनी अग्ग ना कोई तपाईआ। तेरे चरनां धूढ़ी लग्गे मेरे तन दी राख, बिआस किनारा दए गवाहीआ। इक्क संदेशा जावां आख, सीस जगदीश झुकाईआ। तेरे जोत दा तेरा होवे प्रकाश, प्रकाश तेरा नज़री आईआ। जन भगतां देवीं आप विश्वास, विशिआं तों बाहर कढ्ढाईआ। जे तैनूं पाहिन पत्थर कहण फेर वी रखीं साथ, सगला संग बणाईआ। एह समां फेर नहीं आउणा हाथ, जुग चौकड़ी रोवण मारन धाहींआ। मेरा संदेसा कमलापात, पतिपरमेश्वर तेरे अग्गे टिकाईआ। सत्तां गुरमुखां सत्त टके समुंद सागर दी झोली पाउणी दात, वक्त साढे सत्त सुहाईआ। मेरा काना

कलम रविदास कसीरा तिन्ने तेरे चरन पास, पासा सके ना कोई बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरी पूरी करनी आस, आशा तेरे चरनां विच्च रखाईआ। (३२ सावण श सं ८)

साची शरन : साचा प्रभ कल साची शरना । अवतार नर किसे विरले गुरमुख वरना । (१ माघ २००८ बि)
साची तरनी जाणा तर, चरन दवारा साचा तीर्थ ताटी। साची मरनी जाणा मर, सौदा लैणा साची हाटी। (२६ पोह २०१२ बि)

कलिजुग आया जोत प्रभ धर। भगत जन जामे बहत्तर प्रगट जावे कर। सतिजुग साचा सोहँ शब्द खुल्हावे दर। झूठी देह जीव पिण्ड है काचा अन्त जीए हर। कलिजुग प्रगटया सतिगुर साचा, चरनीं आए पर। एका नाउँ एका थाउँ एका आप एक सच घर। महाराज शेर सिँघ घर साचा दर, चरनीं लाग बेमुख जा तर। (२६ चेत २००८ बि)

सतिजुग साचा दर जाए खुल्ह, निहकलंक तेरी सरनाए। (१५ चेत २००६ बि)

साची सेवा : श्री भगवान कहे सुणो मेरे सच भगत, भगती धुर दिआं दृढ़ाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया माया ममता वधी जगत, चारों कुण्ट वेख नैण उठाईआ। प्रेम प्यार प्रीती मन्नणी साची सेवा उत्ते मात धरत, ग़रीबां अनाथां होणा सहाईआ। प्रभ ख़ालक मालक वाली दो जहान वेखणहारा उत्ते अर्श, अर्शी प्रीतम पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। कोझयां कमलयां उपर खाणा तरस, दीनां अनाथां संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां राह वखाईआ।
साचे भगत सुण प्रभ दे मीत, हरि मित्र प्यारा आप दृढ़ाईआ । चार वरनां अठारां बरनां सांझी कर प्रीत, गऊ गरीबां हो सहाईआ । अन्तर निरंतर सारे आपणी बदल लउ नीत, पत्तित पुनीत रूप बदलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म ब्रह्म पारब्रह्म साचा गावो गीत, मानस मानव मानुख जोड़ जुड़ाईआ। सति प्रेम दी पारब्रह्म सभ दे काया मन्दर अन्दर धुर दी झोली पावे भीख, वस्त अमोलक इक्क वरताईआ। हर हिरदे अन्दर सच स्वामी लैणा चीत, चितवित ठगोरी अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। झगड़ा रहे ना ऊँच नीच, जात पात एका घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां देवे वर, धुर दी सिख्या इक्क समझाईआ।
साचे भगतो सच प्यार दा करना दान, दाता दानी आप दृढ़ाईआ । जगत अभिमान मेटणा माण, निवण सु अक्खर इक्क पढ़ाईआ। हर हिरदे अन्दर उपजे ब्रह्म ज्ञान, अन्तश्करन देणा समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सांझा सभ दा होवे गान, गा गा प्रभ दा शुकर मनाईआ। सारे उठो होवो सवाधान, सेवा विच्च आपणा आप जगाईआ। साची सेवा सचखण्ड दवारे होए परवान, जो जीवां जंतां उपर दया कमाईआ। सभ लेखा वेखो धुर अगम्मी काहन,

हरि करता आप दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे भगतां आप सुणाईआ। (१२ अस्सू श सं ३)

हरि संगत सेवा साचा मूल, अनमुल आप जणाइंदा। प्रेम प्यार दे बरखो फूल, दूजी मंग ना कोई मंगाइंदा। कूड़ी क्रिया कांटा चुभौणी ना कोई त्रिसूल, त्रैगुण सूल आप जणाइंदा। गुरसिख गुरसिख दी चुग़ली निन्दया ना करनी भूल, सच सुच्च झोली पाइंदा । प्रभ मिलण दा इक्को असूल, गुरसिख असलीयत रूप वटाइंदा। जो सतिगुर बचन करे कबूल, सो गुरसिख हरि संगत सेव कमाइंदा । सतिगुर लहणा देणा चुकावे मूल, अगला पिछला लेखा झोली पाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि संगत दी सच प्रीती, प्रेम प्यार दी इक्को रीती, जीवण जुगत दी सच्ची नीती, इक्को रंग वेखणा हस्त कीटी, ऊँच नीच भेव ना कोई रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच प्रीती इक्क दरसाइंदा। (११ फग्गण २०१६ बि)

सेवक सेवा कर प्रभ दर आए। सेवक सेवा कर प्रभ जग वड्डिआए। सेवक सेवा कर, अन्त साची जोत मिल जाए। सेवक सेवा कर, साध संगत प्रभ निवास दवाए। सेवक सेवा कर, साचा प्रभ जन्म मरन दा गेड़ कटाए। सेवक सेवा कर, गरभ जून प्रभ फंद कटाए। सेवक सेवा कर, थिर घर वासी थिर घर पहुंचाए। सेवक सेवा कर, अनन्द मंगल प्रभ दर ते गाए। सेवक सेवा कर, सच ऊँचो ऊँच सच प्रभ दिखाए। सेवक सेवा कर, सर्ब जगत प्रभ माण रखाए। सेवक सेवा कर, साची लिखत प्रभ दे लिखाए। सेवक सेवा कर, जन भगतां विच्च प्रभ नाम धराए। सेवक सेवा कर, अन्तकाल अमरापद पाए। सेवक सेवा कर, सचखण्ड प्रभ निवास दवाए। सेवक सेवा कर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा होए सहाए। साचा सेवक गुरचरन सेव कमाए। तन मन धन वार, चरन प्रीती लाए। अन्त बेड़ा होया पार, प्रभ प्रगट दरस दिखाए। गिआ जन्म सुधार, लक्ख चुरासी गेड़ कटाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, चेत सिँघ तेरी लाज रखाए। (६ सावण २००८ बि)

बेपरवाह खेल खला, वेखे चाईं चाईंआ। रातीं सुत्यां गुरसिख लए जगा, जुगती आपणे हत्थ वखाईआ। आपणी प्रेम रत्त नाल दए नुहा, जगत नीर ना कोई रखाईआ। कर कर सेवा चढ़या साह, दिवस रैण सेव कमाईआ। लक्ख चुरासी कोई वेखे ना, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। आपणा खेड़ा आपे गिआ ढाह, गुरमुखां खेड़ा रिहा बणाईआ। एसे कारन सिँघ पूरन लिआ परना, पूरन परमेश्वर विच्च समाईआ। पुत्तर धीआं नाता लिआ तुड़ा, जगत मोह ना लिआ वधाईआ। गुरमुखां फड़ फड़ बांह, आपणे अग्गे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप कमाईआ। सेवा करन दा इक्को मौका, छत्ती दिन जणाया। बिन भगती तरना सौखा, मार्ग इक्क लगाया। गुरसिख जे इस नूं जाणे औखा, औखा घाट नज़री आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहणा देणा वेख वखाया।
सेवा करन दा साचा वक्त, छत्ती दिन वंड वंडाईआ। पाल सिँघ फसया मोह जगत, जुगत

गिआ भुलाईआ। प्रभ लेखे लाई रकत, पूरब लहणा झोली पाईआ। आप सुहाया उस दा वक्त, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त होए सहाईआ।
पाल सिँघ दी कर प्रितपाल, आपणी दया कमाइंदा। रातीं सुत्यां दए नुहाल, दुरमत मैल धवाइंदा। माया झूठी जगत जंजाल, जीव जंत कुरलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छत्ती दिवस दा साचा फल, गुरसिखां झोली पाइंदा।

सेवा करे जो आ दुआर, जुग छत्ती मिले वडयाईआ। पुरख अबिनाशी बणया रहे मित्र यार, यारड़ा सत्थर आप हंढाईआ। गुरसिख भुल्ले जो विच्च संसार, मूर्ख मुगध रूप वटाईआ। तिस करे आप प्रितपाल, होए संग सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा अंग बणाईआ।

पंज प्यारे हरि का अंग, अंगीकार बणाइंदा। करे खेल सूरा सर्बंग, सूरबीर वेस वटाइंदा। लेखा जाणे ब्रह्मण्ड खण्ड, लोकमात रचन रचाइंदा। जगत जुग प्रभ टुट्टी गंढ, साचा बंधन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम एका दर सुहाइंदा।
पंज प्यारे वक्त सुहौणा, वक्त वक्त रिहा विहाईआ। हरि जू विहार बिवहार दरसौणा, बिवहारी सेव कमाईआ। जिस दुआरे हरि आपणी कार कमौणा, सो कार सभ नूं भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेला आपे रिहा सुहाईआ।

सतिगुर पूरा इक्क गुलाम, जुग जुग सेव कमाईआ। जन भगतां अन्दर वड़ वड़ करे परनाम, आपणा सीस झुकाईआ। बिन जाणयां होवे जाणी जाण, बिन पुच्छयां लए बुलाईआ। जे गुरसिख ना करे पछाण, आप आपणा दरस वखाईआ। कदे धरे रूप बिरध कदे बाल जवान, कद आपणा आप छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेवा आप कमाईआ।
भगतन सेवा साची किरत, करता किरत कमाइंदा। कोई कहे सुरत निरत, निरगुण आपणा भेव छुपाइंदा। कोई कहे अकाल मूरत, मूरत अकाल आपणी धार जणाइंदा। भगवान कहे मैं भगतां मेटी हरस, हरस होर ना कोई वधाइंदा। जुग जुग करां तरस, आपणा दरस दिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रंग रंगाइंदा।

गुरसिख मालक सच घर दा, निरगुण झाड़ू बरदार अखवाईआ। घट्टा हूंझे आपणे दर दा, आपणी हत्थीं सेव कमाईआ। जुग जुग भगतां कोलों डरदा, भगत दुआरे फेरा पाईआ। भगतां पिच्छे लक्ख चुरासी नाल लड़दा, नाम खण्डा हत्थ उठाईआ। बिन सद्दिआ घर विच्च वड़दा, आपणा पन्ध मुकाईआ। गुरसिख आत्म पौड़े आपे चढ़दा, आपणा पन्ध मुकाईआ। अन्दर बह बह इक्को अक्खर पढ़दा, करे सच पढ़ाईआ। ना जन्मे ना कदे मरदा, भगतां संग रखाईआ। सदा सुहेला इक्क इकेला बणया रहे बरदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल कराईआ। (२१ मघ्घर २०१८ बि)

साची सिक्खी : साची सिक्खी शब्द विचार, हरि आपणी आप दृढ़ांइदा । (२१ मध्घर २०१३ बि)

साची सिक्खी साचा काहन, हरि शब्द अपारा। खेले खेल दो जहान, आवण जावण खेल नयारा। एका सईआ मंगल गान, एका राग अपारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां दर दर होए आप भिखारा। (१ चेत २०१५ बि)

हरि संगत तेरा सच प्यारा, हरि साचा आप निभाइंदा। एका इक्की कर त्यारा, साची सिक्खी नाउँ धराइंदा। धारों तिखी विच्च संसारा, निक्की निक्की दिस ना पाइंदा। लेख लिखी धुर दरबारा, ना कोई मेट मिटाइंदा। नेत्र पेखी हरि गिरधारा, आप आपणा रंग रंगाइंदा। मरे ना जन्मे विच्च संसारा, जल धारा ना कोई रुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि संगत देवणहारा वर, एका बेड़े पार कराइंदा। (२१ सावण २०१५ बि)

गोबिन्द गुर तिखी धार, लोकमात रखवाईआ। साची सिक्खी कर त्यार, चार वरनां इक्क समझाईआ। वालों निक्की अपर अपार, नेत्र नैण दिस ना आईआ। मुनी रिखी ना पाइण सार, पंडत पांधे भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा दर, दर घर साचा आप सुहाईआ। (१५ कत्तक २०१६ बि)

साची सिक्खी सिख विचार, सिख्या सिख विच्च ना आईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आपणी दृष्टी दए टिकाईआ। चरन दुआर साची भगती विच्च संसार इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोग अभिआस ना कोई कराईआ। (१ विसाख २०१७ बि)

इक सरनाई सरन गत, सो पुरख निरञ्जण आप रखवाइंदा। इक्को नाम इक्को तत्त, पंज तत्त इक्क समझाइंदा। इक्को मार्ग इक्को रथ, रथ रथवाही इक्को नज़री आइंदा। एका यार एका सत्थर बैठा घत्त, सत्थर यार इक्क हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दी साची सिक्खी आपे रक्खे खंडिउँ तिखी, वालों निक्की नज़र कोई ना पाइंदा।

जिस सिक्खी नूं गोबिन्द गाया, सो पुरख अकाल बणाईआ। सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाया, सतिगुर पूरे सच्चे माहीआ। आपणा मार्ग आपे लाया, आपे वेखे चाईं चाईंआ। जिस दवारिउँ वंड कराया, पैहलों ओथे डेरा ढाहीआ। जिस दवारिउँ गुर पीर अवतार घलाया, ओस दुआरे लए बहाईआ। जिस दवारिउँ वेद पुरान शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान खाणी बाणी गीता ज्ञान ढोला गाया, तिस दुआरे खाते पाईआ। जिस मन्दर अन्दर पर्दा उहला रिहा रखाया, तिस पर्दा दए चुकाईआ। जुग जुग विचोला शब्द बणाया, लोकमात फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिखी आप समझाईआ।

वालों निक्की कर त्यार, त्रैगुण अतीता वेख वखाइंदा। मुनी रिखी ना पावे कोई सार, पंडत पांधा मुलां शेख़ ग्रंथी पन्थी नैण ना कोई वखाइंदा। लोकमात ना दिसे कोई रेख, सचखण्ड

रेखा आप बणाइंदा । हरि का रूप मुछ दाड़ी ना कोई केस, ना कोई मूंड मुंडाइंदा। आत्म ब्रह्म हर घट रिहा वेख, पारब्रह्म फेरा पाइंदा। वसणहारा साचे देस, देस दसन्तर खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धार आप चलाइंदा। खन्डउँ तिक्खी हरि जू धार, सचखण्ड निवासी आप जणाईआ। बिन गुरू अवतार कोई ना उतरे पार, पार किनारा ना कोई कराईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपार, घर साचे आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका वस्त झोली पाईआ। (१ विसाख २०१६ बि)

साची सिक्खी साची मत, एका वार जणाईआ। सतिगुर पूरे चरन नत, नाता इक्क दृढ़ाईआ। कर किरपा जिस देवे ब्रह्म मत, ब्रह्म लए जणाईआ। नाड़ नाड़ ना उबले रत्त, पंज तत्त ना कोई हलकाईआ। जगत विकारा आपणे खाते लए घत्त, डूंघा खाता हरि रखाईआ। सति सन्तोख धीरज शब्द ज्ञान देवे मत, मनमत दए दुरकाईआ। सच वणजारा खोले हट्ट, घर एका नाम विकाईआ। चरन सरोवर तीर्थ तट्ट, तट्ट किनारा दए वखाईआ। इक्क चढ़ाए साचे रथ, अगम्म अगम्मड़ी कार कराईआ। वेखणहारा साढे तिन्न हत्थ, त्रैगुण अतीता फेरा पाईआ। आदि जुगादि सर्ब कला समरथ, सो पुरख निरञ्जण वड्डा शहनशाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जुग जुग मार्ग रिहा दस्स, दस्स दस्स मार्ग आप समझाईआ। त्रैगुण माया विच्च ना जाणा फस, पंचम बंधन ना कोई रखाईआ । प्रभ मिलण दी रक्खणी आस, एका आसा दए जणाईआ। जन्म जन्म दी मेटे प्यास, अमृत जाम इक्क प्याईआ। आवण जावण लक्ख चुरासी करे बन्द खलास, बन्दीखाना दए तुड़ाईआ। सन्त सुहेला सदा वसे पास, इक्क इकेला सच्चा माहीआ। मिल मिल सखी गोपी काहन पाए रास, मण्डल मंडप नाच नचाईआ। ढोला सोहला गाए शाहो शाबाश, रागी अनरागी आपणा राग अलाईआ। वेखणहारा खेल तमाश, खालक खलक रिहा समाईआ। आदि जुगादि ना होए नास, अबिनाशी आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा इक्क जणाईआ। (२० जेठ २०१६ बि)

सिख धर्म साची सिक्खी, नानक गोबिन्द वंड वंडाईआ। जिस दी धार सदा अनडिठी, जगत नेत्र नज़र ना आईआ। जिस आत्म परमात्म गोबिन्द पाए भिक्खी, वस्त अमोलक विच्च टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिक्खी दए समझाईआ। साची सिक्खी चार वरन, नानक निरगुण शब्द जणाया। नेत्र खोले हरन फरन, पर्दा दूई दए चुकाया। नज़री आए इक्को सरन, दूजा रंग ना कोई वखाया। नाता चुक्के मरन डरन, भय भयानक रूप ना कोई वखाया। सो गुरसिख साची तरनी तरन, जिन्नां नानक निरगुण सतिगुर नज़री आया। सिक्खी सो परवान, जिन्नां सिख्या सतिगुर भाईआ। सो सिक्खी कूड़ निशान, दुरमत मैल ना सके धुआईआ। रसना जिह्वा करन ज्ञान, हिरदे हरि ना कोई वसाईआ। जिन्नां अन्तर मिल्या आण, सो सिख रूप वडयाईआ । अनपढ़यां देवे ज्ञान, पढ़यां मत दए भुआईआ। गोबिन्द सूरबीर नौजवान, अमृत आत्म साचा जाम प्याईआ। साचा खण्डा देवे किरपान, लोहार तरखाण ना कोई घड़ाईआ। रक्खे काया विच्च मिआन,

अठ्ठे पहर बन्द वखाईआ। गोबिन्द गुण गाए वज्जे शब्द धुनकान, अनहद नादी नाद सुणाईआ। सो गुरमुख गुरसिख चतुर सुघड़ सुजान, जिस जन सतिगुर सिक्खी नज़री आईआ। सतिगुर सिक्खी डाहढी निक्की, नज़र किसे ना आईआ। जिनां देवे धुर दरगाहों चिठ्ठी, नाम परवाना हत्थ फड़ाईआ। तिनां आपणे नेत्र पेखी, सीस धड़ बन्द बन्द गए कटाईआ। कलिजुग अन्त धीआं पुत्तरां भैणां भाईआं नाल करन हेती, जगत कुटम्ब पालण माया ममता होई हलकाईआ। कूड़ी क्रिया रसना जिह्वा मारन शेखी, बाहरों चिन्न रहे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरू गोबिन्द सिँघ दी वड्डिआए साची सिक्खी, जिस दी धार किसे ना डिठी, धार आपणे विच्च गिआ छुपाईआ। (२२ विसाख २०२० बि)

साची सिक्खी दस्से आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। जिनां पुरख अकाल माई बाप, पिता पूत गोद उठाईआ। जिनां इक्को आत्म परमात्म दिता जाप, दूजी करी ना कोई पढ़ाईआ। जिनां नज़री आया साख्यात, नेत्र नैणां दरस कराईआ। तिनां पार कराए जगत जमात, साचा मेला सहज सुभाईआ। धुरदरगाही देवे दात, वस्त अगम्म आप वरताईआ। मिले वड्डिआई कायनात, नव नौं चार वज्जे वधाईआ। जुग जन्म दी पूरी आस, तृष्ना मेट मिटाईआ। समरथ हो के देवे साथ, महिमा अकथ्थ पढ़ाईआ। खेवट हो चलाए राथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान बेपरवाहीआ। (४ कत्तक २०२० बि)

गुरूआं विच्चों उठया गुरू, गोबिन्द लए अंगढ़ाईआ। पुरख अकाल दी सिखी होणी शुरु, शरअ पिछली दए बदलाईआ। जिस दा मंतर इक्को फुरू, फुरने सभ दे बन्द कराईआ। जिस दी तोर दसम दवारी तों अग्गे तुरू, थल्ले रहण कोई ना पाईआ। जो सतिगुर दवारे गिआ पिच्छे ना मुड़ू, घर आपणे जाए वाहो दाहीआ। आत्म परमात्म नाल जुड़ू, जोड़ी धुरदी दए वखाईआ। शौह दरया कदे ना रुड़ू, लक्ख चुरासी ना कोई भवाईआ। गुरमुख अणतारू आपे तरू, वंझ मुहाणा लोड़ रहे ना राईआ। राए धर्म दी मौत कदे ना मरू, सतिगुर शब्द शहीद कराईआ। अमृत धार एका वरू, कूड़ी क्रिया दए रुड़ाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों गुरमुख थोड़े आपे फड़ू, दर दर घर घर फेरीआं पाईआ। कलिजुग अन्तम चार कुण्ट दह दिशां आपे लड़ू, सन्त सुहेला लड़न कोई ना जाईआ। नाम डण्डा सभ दे सीस जड़ू, बल अग्गे ना कोई रखवाईआ। शाह सुलतान कोई ना अड़ू, सभ दीआं कंडां दए वढाईआ। राए धर्म नूं दे के हुक्म, हत्थां पैरां विच्च पवावे कड़ू, जगत दुहागण लक्ख चुरासी दए बणाईआ। जन सन्त सुहेले सभ दे साहमणे आपणे नाल खड़ू, पड़दा उहला ना कोई रखवाईआ। राती सुत्तयां अन्दर वड़ू, गफ़लत विच्च होए सहाईआ। आपणी करनी करके कदे ना हरू, हार जित्त विच्च वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वडयाईआ। (१३ पोह २०२१ बि)

मेहर हज़ूर दी बड़ी तिखी, चीर चीर पवाईआ। जिस दी धार गोबिन्द लिखी, लिख लिख लिखी कलम शाहीआ। बिन पुरख अकाल साची ना कोई बणाए सिक्खी, सिख्या सच ना

कोई जणाईआ। कोटन कोट तरसन मुनी रिखी, मुन सुन ध्यान लगाईआ। घर जा क प्रभ किसे ना पाई भिखी, दरस कर तरस ना कोई वखाईआ। कलिजुग अन्तम जन भगत दुआरे करे खेल अनडिठी, अनडिठड़ी कार कमाईआ। धुरदरगाही बण हलकारा, लै के आया चिठी, डाकीआ घर घर डाक पुचाईआ। आपणी हत्थीं प्रभ साचे लिखी, लिखणहारा होर ना कोई जणाईआ। जन भगतो तुहाढ़े पिच्छे घर आए खावण रुक्खी मिसी, टुक्कर हत्थां उत्ते रखाईआ। ना कोई वार ना कोई थिती, घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। आपणी धार रक्खे निक्की, निक्का वड्डा सच्चा माहीआ। जाणे खेल जीव जीअ की, सिर सिर रिज़क सबाईआ । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान करे खेल ख़ालक ख़लक महान, आदम हव्वा अन्दर हद्द, हुक्मे सद्द बहाईआ।
(१५ मध्घर २०१६ बि)

साची सिख्या : सच्चा सिख सच्चा प्रभ आप। साची सिख्या सच्चा गुर जाप। सच्चा शब्द लाहे तिन्न ताप। महाराज शेर सिँघ जपो दिन रात। (१७ मध्घर २००६ बि)

गुरसिख बेड़ा पार कर, गुर पार उतारा। गुरसिख साची भीख्या गुर दरबारा। आत्म रक्खया करे गिरधारा। साची सिख्या गुर चरन प्यारा। मदिरा मास तजण विकारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा सद दुत्तर तारा। (६ जेठ २००६ बि)

गुर दर आओ प्यास बुझाओ। आत्म तृखा गुरसिख मिटाओ। आत्म विखा सर्ब गवाओ। साची सिख्या हरि नाम धिआओ। साचे लेख प्रभ दर साचे आप लिखाओ। दर घर आए चुरासी गेड़ कटाओ। सोहँ देवे साची भिख्खया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी झोली पवाओ। (६ जेठ २००६ बि)

साची सिख्या सिक्खी दान। गुरमुख साचे सच निशान। मूर्ख मुगध ना बण अंञाण। वेला कलिजुग अन्त पछाण। बण गुरमुख साचा सन्त, हरि चरन कर ध्यान। आप बणाए तेरी बणत, जिस दीआ जीआ दान। हरि हरि महिंमा बड़ी अगणत, किआ कोई करे वखान। कलिजुग माया पाए बेअन्त, भरम भुलेखे आया पाण। गुरमुख साचा आप बणाया सन्त, जिस घर डेरा लाया आण। हरि पाया प्रभ अबिनाशी साचा कन्त, कल आया पुरख सुजान। मिले वड्डिआई विच्च जीव जंत, देवे हरि साचा वाली दो जहान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे सोहँ साचा नाम निशान। (८ जेठ २०१० बि)

साची सिख्या गुर शब्द वीचार, गुर गुर बूझ बुझाईआ। चरन कँवल कँवल चरन धरत धवल दए सहार, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। वरन गोत ज़ात पात ऊँच नीच दुःख दए निवार, आत्म परमात्म नाता जोड़ जुड़ाईआ। ब्रह्म रूप नज़र आए संसार, पारब्रह्म प्रभ आपणा भेव खुल्ह़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे एका नूर दए दरसाईआ।

एका नूर साचा दरस, गुर सतिगुर आप कराइंदा। जन्म जन्म दी मेटे हरस, सांतक सति सति वरताइंदा। अमृत मेघ इक्को बरस, त्रैगुण अगनी तत्त बुझाइंदा। एका राग सुणाए तर्ज़, साचा ढोला एका गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मेटे विछोड़ा दर्द, दर्दी आपणा दर्द वंडाइंदा।

दर्दी दर्द वंडाए दीनां नाथ, अनाथ अनाथां होए सहाईआ। हरि भगत चढ़ाए साचे राथ, महांसारथी बण रथवाही सेव कमाईआ। पार किनारे लाए घाट, पत्तण बैठा सच्चा माहीआ। जुग चौकड़ी अन्त भगवन्त जन भगतां पुच्छे वात, नित नवित्त कर कर हित्त, लोकमात फेरा पाईआ। कलिजुग अन्त एका अक्खर देवे दात, आत्म परमात्म करे सच पढ़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं पित मात, निरगुण सरगुण आपणी गोद उठाईआ। (२३ जेठ २०१६ बि)

हरि शब्द साची सिख्या। प्रभ देवे साची भिख्खया। साचा लेख धुरदरगाही लिखवया। प्रभ अबिनाशी किआ कोई करे तेरी प्रिख्या। भुल्ल रुल्ल दर साचे आए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे दए मिटाए बिधना लिखी रेख्या। (१३ मध्घर २०१० बि)

सतिगुर शब्द कहे मैनूं धुर दी बाण, बाणी खाणी खेल खिलाइंदा। सच संदेशा दे फ़रमाण, जुग जुग नाम प्रगटाइंदा। जीव जंत कर पहचान, सन्त सुहेले आप उठाइंदा। सच प्रीती दे ज्ञान, नाता आपणे नाल जुड़ाइंदा। घर विच्च घर वखा मकान, काया काअबा इक्क समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क वखाइंदा। (२४ जेठ २०२१ बि)

साची सिख्या साची विद्या साचा कर्म सच हदीस, सच भावना साची सभ दे नाल मिलाईआ। बिना कम्म काज मेरा रूप होए ना कोई चीज़, ख़ाली झोली ना कोई भराईआ। (७ विसाख श सं १)

गुरसिख साची सिख्या लैणी सिख, साख्यात हरि समझाईआ। दर दवार जो मंगे भिक्ख, भिखक भिच्छया झोली पाईआ। जन्म कर्म प्रभ देवे लिख, पिछला लेखा दए मुकाईआ। जगत द्वैती लाहे विख, अमृत आत्म जाम प्याईआ। हउमे ममता तोड़े तृष्ना तृिख, अगनी अग्ग ना कोई जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए समझाईआ। (१ सावण २०१८ बि)

साची दरगाह : सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे प्रभ दरस दिखावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे प्रभ जोत प्रगटावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे गुर नाम दवावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे इक्क रूप समावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे जुग उलटावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे संगत नूं दरस दिखावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे पारब्रह्म प्रभ आवे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे जोत रूप समावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे कलिजुग जीव भुलावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे आपणा आप छुपावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे बेमुखां नज़र ना आवे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे ज्ञान गोहझ खुल्ह़ावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे सरन पिआं दी लाज रखावे।

सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे गुर लक्ख इक्क अस्सी हज़ार भूत बंन्नावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे अठारां बीर सीस निवावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे अंचनी कंचनी पई शरमावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे हाकन डाकन सिर मुन्नवावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे सरदी काल बाल करावे। सच्ची एह दरगाह, उलट वाहू केसे पवावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे सभ भय रखावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे गुर सिख तरावे। सच्ची एह दरगाह, जिथ्थे महाराज शेर सिँघ शब्द लिखावे। (१६ विसाख २००७ बि) (करतार दा दरबार)

साची रीती : साध संगत तेरी साची रीती। एका बख्शे प्रभ चरन प्रीती। झूठी सृष्ट होई कुरीती। गुरमुख साचे प्रगट जोत प्रभ परखी नीती। बिरध बाल जुआन उधारे प्रभ आत्म सीतल कीती । जोत जगाए अगम्म अपारे गुरसिख आत्म रहे अतीती। विच्च झूठे महल्ल मुनारे महाराज शेर सिँघ सच चलाई रीती। (१ माघ २००८ बि)

चरन प्रीती साची रीती। प्रभ अबिनाशी परखे नीती। साची दात प्रभ साचे दीती। भुल करे ना सिख कुरीती। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, तेरी काया सीतल कीती। (१ माघ २००८ बि)

चरन प्यार साची रीती। गुरमुख बख्शे सच प्रीती। देवे दरस मिटाए हरस, काया सीतल कीती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भुल्ल बख्शाए चरन लगाए दया कमाए गुरमुख तराए पिच्छे जो जन कीती। (१ सावण २००८ बि)

सोहँ चीरा सच दस्तार। गुरचरन प्रीती साचा प्यार। एका एक साची रीती सोहँ रसन उच्चार। साची जोत जगाई, सच सच सति सति वरते विच्च संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सोहँ शब्द कराए जै जै जैकार। (१७ चेत २०१० बि)

पीवणा खावणा खावणा पीवणा। गुरचरन प्रीती साचा जीवणा। घर साचे दी साची रीती, सदा सदा विच्च मात नीवणा। बख्शे भुल्ल जो पिच्छे कीती, अग्गे मार्ग साचे प्रभ आप लगावणा। मानस जन्म जाणा जग जीती, साचा नाम ना मनों भुलावणा। नाउँ निरँकार सद रसना चीती, प्रभ करे वक्त सुहावणा। होए काया सीतल सीती, प्रभ अमृत मेघ बरसावणा। गुरसिख सिख होए पतित पुनीती, प्रभ साची रीत चलावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौथे गुरसिखां पूर कराए भावना। (७ मध्घर २०१० बि)

चरन प्रीती साची रीती, दो जहान मिले सच्ची सरदारी। (६ जेठ २०११ बि)

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन प्रीती साची रीती, साहिब सतिगुर आप समझाइंदा। (१८ भादरों २०१७ बि)

धुर संदेशा परवरदिगार, पुरख अबिनाशी आप जणाईआ। जगत सुआणी कर विचार, अकथ्थ

कहाणी रिहा दृढ़ाईआ। अंर्मित ठंडा पाणी सच दरबार, दूसर हत्थ ना किसे फड़ाईआ। निरगुण नूर नूर उजिआर, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। वसणहारा धाम नयार, ख़ालक ख़लक वड वडयाईआ। मेरे मिलण दा जिस प्यार, साची रीती दिआं समझाईआ। मस्जिद मसीती विच्चों होणा बाहर, लोक लाज मात तजाईआ। फेर चल के औणा भगतां दुआर, मेरे भगत देण समझाईआ। बाहों फड़ के कहण औह दिसे निरँकार, जिस नूं लभ्भे ख़लक ख़ुदाईआ। चौदां सदीआं दी विछड़ी मेले दुहागण नार, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। चरन कँवलां विच्च लए बहाल, सीस चुंनी इक्क वखाईआ। नेत्री आए मुहम्मद होया बेहाल, बेहबल हो हो दए दुहाईआ। चार यार दिसण कंगाल, ख़ाली हत्थ वखाईआ। सारे रल के पुरख अबिनाशी अग्गे करो सवाल, बण सवाली झोली डाहीआ। कर किरपा चरन प्रीत जे जोड़े आपणे नाल, नालश सभ दी दए गवाईआ। भगतां नाल लए बिठाल, बाहों फड़ गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेशा रिहा सुणाईआ। (१५ जेठ २०१६ बि)

साची मरनी : जगत वासना मरना जीव जग, धुर दी धार दृढ़ाईआ। त्रैगुण माया पोह ना सके अग्ग, अगनी अग्ग ना कोई जलाईआ। निज नेत्र दरस करना सूरे सर्बग्ग, सच स्वामी वेख वखाईआ। खेल खेलणा उपर शाह रग, नौ दवारे पन्ध मुकाईआ। जगत वाशना रहे ना कग, हँस गुरमुख रूप बणाईआ। घर घर विच्चों लैणा लभ्भ, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। सिर सतिगुर कदमां उत्ते देणा रक्ख, आपणी कीमत ना कोई जणाईआ। जीवत जी दीन दुनी नालों होणा वक्ख, ममता मोह विकार गवाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। बंस सरबंस सारा देणा छड्ड, हड्ड मास नाड़ी वज्जे वधाईआ। तिस दा सफल होवे मरना जग, जो जगजीवण दाते विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मर जीवत रूप जणाईआ।

जग मरना सतिगुर सरनाई, सच मिले वडयाईआ। राए धर्म ना दए सज़ाई, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। किरपा करे सहज सुखदाई, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो आदि अन्त दा माही, जुग जुग भगतां होए सहाईआ। कूड़ क्रिया दए तजाई, मान अभिमान रहे ना राईआ। इक्को ओट लए तकाई, प्रभ मिलणा चाईं चाईंआ । आत्म दर सच गृह मन्दर निज वज्जे वधाई, खुशीआं राग जणाईआ। सो गुरमुख बौहड़ मरे ना मिल्या हरि गोसाईं, मरजीवत रूप दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पड़दा आप चुकाईआ।

जीवत जीवत जगत संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी देण गवाहीआ । आवे जावे मरे वारो वारा, चुरासी गेड़ ना कोई मुकाईआ। कबीर जुलाहा करे पुकारा, सचखण्ड गढ़ उपर चढ़ के दए दुहाईआ। जन भगतो वेखो विगसो पावो सारा, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। जद मरो मरो हरि के दवारा, सतिगुर चरन सरन सरनाईआ। फिर मरना होए ना दूजी वारा, जन्म जन्म ना कोई भवाईआ। मर जीवत जीवत मर वेखो खेल

धुर दरबारा, दरगह साची वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दवार दए वडयाईआ।

गुरमुख सज्जण सन्त सुहेला कदे ना मरदा, मरजीवत रूप वटाईआ । जगत जहान चों तरदा, दुतर दा लहणा दए गवाईआ। गृह वेखे इक्को हरि दा, हरि मन्दर बह के खुशी मनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को राग पढ़दा, निरअक्खर अक्खर धार विच्चों समझाईआ। खेल वेख के आपणे घर दा, घर जावे चाईं चाईंआ। झगड़ा मुक्क जाए चेतन्न जड़ दा, मेला मिले सहज सुभाईआ। सतिगुर किरपा नाल गुरमुख सच दी मरनी मरदा, जो बौहड़ जन्म ना पाईआ। कबीर कूक कूक पुकार करदा, जुलाहा दए दुहाईआ। जिस दर्शन कीता नरायण नर दा, तिस नर हरि आपणे विच्च छुपाईआ। सो सन्त सुहेला भवजल पार करदा, मंझधार ना कोई रुड़ाईआ। पैंडा मुके डूंघी डल्ल दा, अन्ध अन्धेर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच मरनी आप जणाईआ।

साची मरनी सतिगुर हत्थ, गुरमुखां दए दृढ़ाईआ। जिस दी महिमां सदा अकथ्थ, कथनी कथ ना सके राईआ। जिस देवे नाम निधान दी वथ, वस्त अमोलक झोली पाईआ। सो सच सरनाई जाए ढठ्ठ, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। कूड़ कुड़िआरा नाता जावे छड्ड, प्रभ मेला मेले सहज सुभाईआ। ओस दा जन्म ना होवे वत, बेवतन वतन आपणे विच्च जावे चाईं चाईंआ। बिना सतिगुर शब्द तों रक्खे कोई ना पत, पतिपरमेश्वर संग ना कोई बठाईआ। कबीर जुलाहे किहा सच, संदेसा जगत विच्च सुणाईआ। एह खेल अकल बुद्धि दे नहीं वस, मनसा मन ना कोई वडयाईआ। जिस हिरदे हरिजू जाए वस, मेहर नज़र उठाईआ। उह मर जीवत जगत बणाए जस, सिफ्तां विच्च सालाहीआ। जिन्नां उपर किरपा करे पुरख समरथ, सो बौहड़ जन्म ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहारा धुर दा वर, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझा यार घट निवासी पुरख अबिनाशी जिस सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। (१८ मध्धर श सं ६)

साची भगती : जन भगत कहण साडे अन्तर अगम्म विचार, बुद्धि समझ कोई ना पाईआ। पिच्छे बीते जुग चार, कलिजुग चौथा दए दुहाईआ। की भगतां खेल करदा रिहा करतार, कुदरत दा करता आपणी कार कमाईआ। जगत तसीहे दे विच्च संसार, मार्ग भगती वाला जणाईआ। कलिजुग अन्तम किरपा कर अपार, अपरम्पर आपणी दया कमाईआ। फड़ फड़ बाहों दए तार, तारनहार इक्क अखवाईआ। साची भगती सतिगुर हुक्म दी कार, जगत माला दी लोड़ रहे ना राईआ। गुरमुख सूरबीर बणा हुशिआर, जोधा आपणा मेला लए मिलाईआ। सन्त सुहेले बणा बरखुरदार, बरखुरदारी विच्च वेख वखाईआ। पूरब जन्म दा लहणा दए उधार, कज़ा मकरूज़ आप चुकाईआ। सेवा विच्च सेवा करन सेवादार, सेवा सतिगुर सतिगुर साचे भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्क अखवाईआ। (१८ विसाख श सं ८)

साची भगती जोग अभिआस दस्से चरन ध्यान, बख्शिश रहमत आप कराईआ। आत्म परमात्म कर परवान, नाता जोड़े सहज सुभाईआ। (२० सावण २०२१ बि)

तुसीं मेरे मैनूं आपणा लउ बणा, एहो तुहाढ्ढी भगती नज़री आईआ। (२२ फग्गण २०२१ बि)

सतिजुग तेरे विच्च प्रगट होवे साचा भगत, साची भगती प्रभ दी सेव कमाईआ। नाता कूड़ा तोड़े सृष्टी जगत, प्रीत परम पुरख नाल वधाईआ। नाम निधान मिले अगम्मी शक्त, संसा रोग दए चुकाईआ। दर्शन कर के वाली अर्श, फर्श उत्ते सोभा पाईआ। जन्म जन्म दी मेटे भटक, कूड़ी तृष्ना दए मिटाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क वखाईआ।
सति धर्म सतिजुग तेरे विच्च उपजण साचे सन्त, सतिगुर इक्को इक्क मनाईआ। परमात्म मन्न के धुर दा कन्त, बण सवाणी सेव कमाईआ। चरन दवारे करदे रहण मिन्नत, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जगत माया मोह ना विआपे चिन्त, हरस हवस ना कोई वधाईआ। मिले मेल ना किसे निन्दक, दुष्ट दुराचार संग ना कोई बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे मिलण दी देणी साची हिंमत, हिरदे वस के लैणा उठाईआ। (१३ सावण श सं २)

सिँघासण : वेखे सुणे परखे वेखे परखे। बिन नाड़ी एह पिंजर खड़के। आपणा सहिंसा सारे लाहो। पूरन सिँघ दी नबज़ नूं हत्थ है लाउ। ऐसी एह चली चाल। नबज़ ना चले आपणी चाल। भेत ना आपणा गुरू रखाया। प्रगट हो के दर्शन दिखाया। सच्चा तख़त गुर सच्चे बणाया। सिँघासण प्रभ नाम रखाया। सिँघासण उपर प्रभ बैठा आए। कलिजुग ताईं दए उलटाए। (१८ मध्घर २००६ बि)

सच सिँघासण : सच सिँघासण गुरमुख आत्म गृह, दूजा नज़र कोई ना आईआ। जिस घर स्वामी ठाकर हो के बहे, निरगुण जोती जाता डगमगाईआ। जो जुगादि जुग चौकड़ी कदे ना होवे लै, मरन जन्म विच्च गेड़ ना कोई भवाईआ। आपणा भाणा आपे सहे, साहिब सतिगुर बेपरवाहीआ। शब्दी हुक्म गुरमुखां सच कहे, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द आप सुणाईआ। धन्न सुभाग जिस काया मन्दर अन्दर जगया चिराग पुरख अकाला दीन दयाला तिस दवारे वसे गृह, घट भीतर सोभा पाईआ। जिस दा भेव जाणे ना कोई शक्ती दवै, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सच घराना श्री भगवाना इक्को इक्क सुहाईआ। (६ मध्घर श सं २)
सच सिँघासण पावा चार। झूठा दाअवा जीव गवार। (२६ पोह २०११ बि)

जगत सिँघासण : शब्द सिँघासण हरि सुहाया, करे खेल अपारया। लोकमात किसे दिस ना आया, भुले जीव गवारया । महल्ल अट्टल इक्क अपारया। दर घर साचे आपे डाहया, शब्द कराया पहिरेदारया। जोत सरूपी आसण लाया, पृथ्मी आकाशन वेखण आया।

शब्द स्वासन लए बचाया। सति सरूपी सति समाया। जोती जोत सरूप हरि, एका मंगे शब्द वर, जगत सिँघासण मूल ना भाया। (६ चेत २०१३ बि)

साल बवंजा सेज हंढाई, लोकमात अवतारा। बाल जवानी खेल खिलाई, बुड़ेपा वेख विचारा। मात पित भईआ भैणा साक सज्जण सैण अखवाई, नारी कन्त कीआ प्यारा। सेवक सेवा गुरसिख लगाई, चरन कँवल दए अधारा। दुःख भुक्ख सुख इक्क रंग समाई, चिन्ता सोग वस्सया बाहरा। मुन सुन इक्क जोग हंढाई, जोती नूर प्यारा। पारब्रह्म भोग इक्क रखवाई, अठ्ठे पहर अधारा। आप आपणा मुख छुपाई, जीव जंत ना पाए सारा। दिस ना आए धी जवाई, खेले खेल अपर अपारा। पिता पूत भेव ना राई, सेवक सेव ना करे बण भिखारा। दोए जोड़ ना सीस झुकाई, दर दवार ना कर निमस्कारा। आप आपणा खेल खिलाई, आपे खेले विच्च संसारा। जगत सिँघासण इक्क बणाई, उपर आसण लाए पारब्रह्म निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण अवतारा। पंज तत्त हरि जोत छुपाई, काया मन्दर इक्क वखाई, हड्ड मास नाड़ी रत्त लाया इट्टां गारा। काली छत इक्क टिकाई, घास फूस रिहा उगाई, पड़दा पाए सीस दस्तारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अपर अपारा। आप आपणा खेल खिलाया, पारब्रह्म बेअन्ता। सन्त मनी सिँघ संग रलाया, सेवा लाई साचे सन्तां। कलम लेखणी हत्थ फड़ाया, लेखा लिखे जीवां जंतां। दो जहानां मेख रिहा लगाया, शब्द जणाए साचे कन्ता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए बेअन्त बेअन्ता।

सन्त मनी सिँघ शब्द जैकारा, एका धुन उपजाईआ। अठ्ठे पहर बण लिखारा, दिवस रैण सेव कमाईआ। दोए जोड़ करे निमस्कारा, कागज़ कलम दोवें रहे मुसकराईआ। गुर सतिगुर वेखे इक्क दवारा, दर दरवाज़ा खोल्ह वखाईआ। प्रगट होए गरीब निवाजा, सृष्ट सबाई अनभोल रखवाईआ। जगे जोत देस साझा, दिस किसे ना आईआ। अन्तम रच्या कलिजुग काजा, सति पुरख निरञ्जण रिहा साह सुधाईआ। जन भगतां मारे मात आवाजा, साची बणत रिहा बणाईआ। वेले अन्त रक्खे लाजा, लाजावन्त आप अखवाईआ। इक्क चलाए नाम जहाज़ा, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सरगुण काया विच्च समाईआ।

सरगुण काया पंज तत्त, आपणी आप हंढाइंदा। आपे बणया कमलापत, पतिपरमेश्वर आप अखवाइंदा। आपे रंगण रंगा रत्त, एका रंगण रंग चढ़ाइंदा। आपे चढ़या शब्दी रथ, रथ रथवाही आप हो जाइंदा। आपे सुत्ता अन्तम सथ्थ, लोकमाती सेज विछाइंदा । आपे वंड वंडाई सीआं साढे तिन्न हत्थ, समरथ आसण लाइंदा। आपे महिंमा रखवाए अकथ्थना अकथ्थ, भेव कोई ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत सिँघासण इक्क रखवाइंदा।

जगत सिँघासण हरि निरँकार, एका एक रखवाया। अठ्ठे पहर ख़बरदार, आलस निंदरा विच्च ना आया। सेवक सेवा करे अपार, चारों कुण्ट वेख वखाया। देवी देवत आइण दवार, दर दवारिउँ दए दुरकाया। ब्रह्मा शिव रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर रहे वहाया। गुरमुखां करे

इक्क प्यार, आप आपणा दरस दिखाया । मनमुखां मारे अन्तम मार, मदिरा जाम इक्क प्याया। खेले खेल अपर अपार, लक्ख चुरासी ताम बणाया। भरमे भुल्ले जीव गवार, हड्ड मास नाड़ी चम्म किसे हत्थ ना आया। कलिजुग रैण अन्धेरी शाम, अन्ध अन्धेरा रिहा छाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा मुख छुपाया।
आप आपणा मुख छुपाए, नेत्र नैण मुधाईआ। दुःख सुख विच ना कदे आए, तृष्ना भुक्ख ना कोई रखाईआ। मानस देही मनुक्ख अखवाए, मात कुख सुफल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दवारे बैठा आसण लाईआ।
दर दवारा सिँघ जवंद, तेरा आप सुहाया। चार दीवारी होया बन्द, दिस किसे ना आया। माया पड़दा पाया कंध, अन्ध अन्धेर रखवाया। गुरमुखां वखाए साचा चन्द, एका नूर दरसाया । खुशी कराए बन्द बन्द, जिस जन आपणी दया कमाया। दिवस रैण गाइण बत्ती दन्द, सेवक सेवा आप लगाया। अन्तम मुकाए कलिजुग पन्ध, लहणा देणा रिहा चुकाया। इक्क सुणाया सुहागी छन्द, अक्खर वक्खर नाम धराया। गुरमुख समाया परमानंद, निज घर आसण डेरा लाया। मदिरा मास तजाया रसना गंद, गोबिन्द रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया लेखा रिहा मुकाया। (५ जेठ २०१४ बि)

आपणा पसारा आप कराए, आपे मेट मिटाइंदा। लोकमात जन्म धर, पंज तत्त हंढाइंदा। अन्तम अगनी गिआ सड़, एका हवन वखाइंदा। काया कोट ढठ्ठा किला गढ़, त्रैगुण मूल चुकाइंदा। साचे पौड़े आपे चढ़, सच सिँघासण वेख वखाइंदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई बणत बणाइंदा। आपणे अन्दर आपे बैठा वड़, पुरख अबिनाशी पुरख मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत सिँघासण साल बवंजा, लोकमात हंढाइंदा। (५ जेठ २०१५ बि)

साल बवंजा जगत सिँघासण, पंज तत्त हंढाया। अन्तम तजया पुरख अबिनाशन, ब्रह्मण्ड पार कराया। चरना हेठ दबाए पृथ्मी अकाशन, रव सस रहे शरमाया। आपणे घर करया वासन, घर साचे होए रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप वटाया। (१८ हाढ़ २०१५ बि)

जगत सिँघासण पावा चार, चौखट रूप वखाईआ । भगत सिँघासण खेल अपार, साढे तिन्न हत्थ वंड वंडाईआ । कलिजुग सिँघासण पए भार, बलहीण दए दुहाईआ। भगत सिँघासण करे प्यार, घर खुशी इक्क वखाईआ। जगत सिँघासण जाए हार, आपणा माण गवाईआ। भगत सिँघासण होए उजिआर, दो जहान वज्जे वधाईआ । जगत सिँघासण जगत खवार, जगत कूक कूक सुणाईआ। भगत सिँघासण सुहाए आप निरँकार, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल आपणा रिहा जणाईआ।

जगत सिँघासण रिहा चीक, रो रो नैणां नीर वहाइंदा। भगत सिँघासण रिहा उडीक, प्रभ चरन ध्यान लगाइंदा। जगत सिँघासण जगत शरीक, शिरकत घर घर आप बणाइंदा। भगत

सिँघासण मेटे अन्धेरा तारीक, निरगुण नूर चन्द चमकाइंदा। जगत सिँघासण धोखा देवे हस्त कीट, ग़रीब निमाणयां धक्का लाइंदा। भगत सिँघासण सच कराए प्रीत, निमाण निमाणयां आप उठाइंदा। जगत सिँघासण जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे खेल आप लगाइंदा।

जगत सिँघासण नेत्र रोवे, नैणां छहबर लाईआ। भगत सिँघासण दुरमत मैल धोवे, बण सेवक सेव कमाईआ। जगत सिँघासण सीस वाल खोहवे, खुली मींढी रिहा वखाईआ। भगत सिँघासण लै के आए साचा ढोए, सोहँ ढोला इक्क सुणाईआ। जगत सिँघासण अन्तम मोए, जीवण नज़र कोई ना आईआ। भगत सिँघासण लेखा जाणे जहान दोए, निरगुण सरगुण आपणे अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार माण वडयाईआ। जगत सिँघासण गिआ थक्क, आपणा बल गवाईआ। भगत सिँघासण राह रिहा तक्क, जगत ध्यान लगाईआ। जगत सिँघासण गिआ अक्क, कूड़े राजे बैठे आसण लाईआ। भगत सिँघासण रिहा नट्ठ, कवण वेला प्रभ मेरे उत्ते चरन टिकाईआ। जगत सिँघासण उलटी होई मत, साची सिख्या ना कोई दृढ़ाईआ। भगत सिँघासण चरन कँवल बंधाए नत, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। जगत सिँघासण ख़ाली वखाए हत्थ, भंडार नज़र कोई ना आईआ। भगत सिँघासण सेवा करे पुरख समरथ, बण चाकर सेव कमाईआ । जगत सिँघासण तुटा हठ, धीरज धीर ना कोई रखाईआ। भगत सिँघासण हो प्रगट, पारब्रह्म वेखे चाईं चाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण इक्को इक्क जणाईआ।

जगत सिँघासण मारे धाह, संगी नज़र कोई ना आइंदा। भगत सिँघासण बण मलाह, लोकमात फेरा पाइंदा। जगत सिँघासण करे ना, मैथों भार झल्लया ना जाइंदा। भगत सिँघासण करे हां, निउँ निउँ खुशी नाल सीस झुकाइंदा । जगत सिँघासण भुल्ले आपणा थां, थान थनंतर नज़र कोई ना आइंदा। भगत सिँघासण पकड़े बांह, फड़ बांहों आप उठाइंदा। जगत सिँघासण बुद्धि होई कां, काग वांग कुरलाइंदा। भगत सिँघासण कहे पारब्रह्म आया सभ दा पिता मां, मेरे उपर आसण लाइंदा। भगत जन वेखो नेत्र नैण करो चा, चाउ घनेरा इक्क रखाइंदा। भुल्लयां भटकयां पावे राह, रहबर इक्को नज़री आइंदा। जग उजड़यां दए वसा, सच दुआरे आप बहाइंदा। गुरमुख मुकरयां लए मना, मोह मुहब्बत आपणे नाल बंधाइंदा। साचा दर दए खुल्ला, खुल्ला वेहड़ा आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सिँघासण इक्क वडिआइंदा।

भगत सिँघासण उच्चा वड्डा, हरि वड्डा आप वडयाईआ। जगत सिँघासण जावे नस्सा, थां नज़र कोई ना आईआ। भगत सिँघासण भगत दुआरे देवे सद्दा, जन भगतां रिहा जगाईआ। जगत सिँघासण जाए भज्जा, अग्गे हो ना कोई बचाईआ। भगत सिँघासण घर घर देवे सद्दा, उच्ची कूक कूक अलाईआ। जगत सिँघासण टप्पदा जाए आपणी हद्दा, दूर दुराडा वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ।

भगत सिँघासण करे अरदास, प्रभ चरन ध्यान लगाईआ। कर किरपा शहनशाह शाबाश, तेरे हत्थ मेरी वडयाईआ। नित नित रक्खदा रहां तेरी आस, जुग जुग ध्यान लगाईआ। कवण

वेला करे जोत प्रकाश, जोती जाता बेपरवाहीआ। मेरी पूरी करे पूरब आस, मेहरवान हो सहाईआ। मेरी तृष्ना होए तृप्ताप, भुक्ख ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन कँवल इक्क टिकाईआ।

भगत सिँघासण मंगे चरन धूड़, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। साहिब सतिगुर आसा पूर, मनसा मन ही माहे खपाया। जुग चौकड़ी वसदा रिहों दूर, कलिजुग अन्तम नेड़े आया। तूं सर्ब कला भरपूर, बेअन्त तेरी शहिनशाहिआ। मैं तेरा हुक्म मन्नां ज़रूर, ज़रूरत आपणी पूर कराया। कर किरपा बख्श नूर, नूर नूराना नूर दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ओट तकाया।

चरन कँवल रक्ख भगवान, मैं इक्को ओट तकाईआ। उपर बैठ हो निगाहबान, जन भगतां दे वडयाईआ। मैं वेखां तेरा खेल महान, ख़ालक तेरी की चतुराईआ। हुक्म दे बण हुक्मरान, धुर फ़रमाना आप जणाईआ। दो जहानां दे ज्ञान, निशअक्खर कर पढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मैं वेखां तेरे महमान, दर बैठण सीस झुकाईआ। मैं तेरा संदेसा देवां घर घर बण अञाण, बाली बाला वड सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन कँवल उपर धर, मेरी पूरी आस कराईआ।

चरन रक्ख प्रभ मेरे सीस, तेरे चरनां सीस निवाया। तूं साहिब सच्चा जगदीस, जगदीशर तेरा अन्त किसे ना आया। तेरे छत्तर झुल्ले सीस, दो जहान तेरे हुक्मे अन्दर हुक्म मनाया। तेरी कोई ना करे रीस, सानी नज़र कोई ना आया। तेरी इक्को इक्क हदीस, साचा कलमा लएं पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाया। आपणा चरन रक्ख कंधे, दोए चरन ध्यान लगाया। भगत भगवान तेरे बन्दे, बैठे तेरा राह तकाया। लक्ख चुरासी जीव अन्धे, तेरा नूर नज़र ना आया। कूड़ी क्रिया लग्गे धंदे, धन्दा जगत ना किसे मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाया।

आपणा चरन रक्ख मेरी पिठ, मैं बैठा माण गवाईआ। तेरा खेल सदा अनडिठ, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मैं हारया तूं गिआ जित, तेरी जित मेरी वडयाईआ। मैं साची सिख्या लवां सिख, सिखां इक्को नाम पढ़ाईआ। सेवा करन दा रक्खां हित, नित नवित्त सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन कँवल मेरे उपर टिकाईआ।

चरन कँवल रक्ख मेरे पट्ट, बेपरवाह तेरी वडयाईआ। मैं तेरा वेखां खेल समरथ, निरगुण धार चलाईआ। किस बिध लहणा देणा चुकाए चौदां हट्ट, चौदां तबक पन्ध मुकाईआ। निरगुण नूर कर प्रगट, प्रतक्ख आपणी खेल वखाईआ। भगत भगवान लए रक्ख, भगवन आपणी दया कमाईआ। सच्चा मार्ग इक्को दस्स, साची सिख्या सिख समझाईआ। आत्म परमात्म होए वस, पारब्रह्म ब्रह्म मेला सहज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरे उपर आसण लाईआ।

ला आसण मेरे प्रभ, परम पुरख तेरी वडयाईआ। आपणे चरन नाल मैनूं दब्ब, मेरा दुखड़ा रहे ना राईआ। मेरा नैण खुल्ला झब्ब, नित तेरा दरसन पाईआ। तेरे चरनी बहवां फब, मुख वेखां चाईं चाईआ। दरसन करां रज्ज, जुग चौकड़ी आपणी भुक्ख मिटाईआ। मेरा

पड़दा सतिगुर कज्ज, उपर आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी पत मात रखाईआ।

तेरे उत्ते चढ़ांगा। सज्जा चरन पैहलों धरांगा। भगत भगवान बण के फड़ांगा। शाह सुलतान बण के लड़ांगा। राज राजान बण के अड़ांगा। मूर्ख मुग्ध अज्ञाण बण के चढ़ांगा। चतुर सुघड़ सुजान बण के सच्चा ढोला पढ़ांगा। गहर गम्भीर गुण निधान बण के हुक्म हाकम करांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आपे करांगा।

तेरे उपर आसण लग्गेगा। पुरख अकाल दीपक जगेगा। भगत भगवान प्रेम अन्दर मघेगा। लक्ख चुरासी जीव जंत अगनी तत्त दगेगा। परम पुरख सुलतान मेहरवान सेवादार गज्जेगा। शब्द धुर निशान सज्जे हत्थ विच्च सजेगा। चौथी मंज़ल चढ़ निगहबान, ग़रीब निमाणयां पड़दे कजेगा। कर ख़ालक खेल महान, आपणी करनी कर कर कदे ना रज्जेगा। गुरमुखां दे दान, सदा संग रखेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, चरन कँवल कँवल चरन मेरा पड़दा ढकेगा।
प्रभ तेरे चरन दी इक्क आस, आसा सर्ब तजाईआ। तेरे मिलण दी इक्क प्यास, प्यास रिहा वधाईआ। तेरे दरस दी इक्क ख़ास, ख़ाहश रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर मेला लए मिलाईआ।
मेल मिलावांगा। निरगुण हो के आवांगा। भगत दुआर सुहावांगा । ढाडी हो के गावांगा। रागी हो के अलावांगा। बाग़ी हो के सभ नूं ढावांगा। सवांगी हो के जगत भुलावांगा। विस्मादी हो के गुरमुखां अन्दर डेरा लावांगा। ब्रह्मादी हो के ब्रह्म ज्ञान जणावांगा। धुर दी वादी पिछली मेट मिटावांगा। बण के गाडी नवां राह चलावांगा। सृष्ट सबाई थक्की मांदी, राए धर्म दे हत्थ फड़ावांगा। गुरसिक्खी सच्ची औंदी जांदी, यद आपणी फेर प्रगटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सिँघासण तेरे उत्ते आपणा आसण लावांगा।
तेरे उपर आसण लाएगा। मेहरवान दया कमाएगा। चरन कँवल उपर टिकाएगा। धरत धवल सर्ब हिलाएगा। ज़िमीं असमान सर्ब कुरलाएगा। जंगल जूह उजाड़ बीआबान धीरज धीर ना कोई धराएगा। समुंद सागर हाहाकार, नेत्र नैणां नीर वहाएगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर दोए जोड़ सीस झुकाएगा। भगत भगवन्त कर निमस्कार, सजदा इक्को इक्क जणाएगा। कुदरत वेखे कायनात, कादर कलमा नबी इक्क पढ़ाएगा। पिछला सभ दा जाए इतबार, मुजरम सभ नूं आप वखाएगा। सृष्टी भुल्ली भुल्ले जीव गवार, गुरू पीर अवतार पैगम्बर अग्गे हो ना कोई छुडाएगा । वेखो पैंदी मार, मारनहार हुक्म चलाएगा। सृष्ट सबाई सुट्टे डूंघी गार, फड़ के बाहर ना कोई कढाएगा। अग्गे पिच्छे सज्जे खब्बे नज़र ना आए कोई यार, चौथी यारी चौथे जुग मेट मिटाएगा। नार कन्त ना करे प्यार, पुत्तर धी गोद ना कोई सुहाएगा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी गोद उठाल, अंग लगाएगा। इक्को घर सुहाए आप आपणे लाल, दूसरयां मुख ना कदे दरसाएगा। आप फिर बण कंगाल, भगतां उच्चे

तख़त बहाएगा। जल्वा नूरी दे जलाल, जोबन आपणे रंग रंगाएगा। प्रगट हो दीन दयाल, दीनन आपणी गोद बहाएगा। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी युग दा हल्ल करे आप सवाल, फिकरा अग्गे हो समझाएगा। वेखो औंदा ज़िवाल, ज़ेर ज़बर मेट मिटाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण आपणा आसण लाएगा।
सिँघासण कहे प्रभ मेरे उत्ते सज, तेरा ध्यान लगाया। वेखीं धोखा दे ना जाईं भज्ज, वेला वक्त दे सुहाया। शेर हो के शब्द गज्ज, क्यों बैठा मुख छुपाया। पीर पैगम्बर गुर अवतार सारे कहन्दे साडी मुक्की हद्द, अग्गे राह ना कोई वखाया। मेहरवान हो के पड़दा कज्ज, दोशाला आपणे हत्थ उठाया। तेरी किरपा बिन कोई ना सके बच, कलिजुग बाज़ी रिहा उलटाया। दीन दयाल तेरे अग्गे बोलया सच, सच्चा गुरमुख बिन तेरी किरपा नज़र कोई ना आया। जिध्धर वेखां भाण्डे कच्च, दर दर घर घर काम क्रोध लोभ मोह हँकार हलकाया। जो तेरे अन्दर गिआ रच, तूं आपणी छाती लगाया। तेरा खेल पुरख समरथ, नज़र किसे ना आया । श्री भगवान हो के डट, डंका आपणा नाम वजाया। की होया पज्ज तत्त काया गवार जट्ट, अन्दर समरथ पुरख बैठा आसण लाया। इक्को खोल्ह भगत हट्ट, बिन भगती सभ दी झोली दए भराया । रातीं सुत्तयां दे दे मत, दिने उठदयां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नज़री आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सिँघासण भगत आपणी झोली रिहा डाहिआ।

भगत सिँघासण उठ वेख मार ध्यान, प्रभ की की खेल रचाइंदा । सारे मंगण दर ते दान, नेत्र अक्ख ना कोई उठाइंदा। पुरख अबिनाशी बड़ा शैतान, शरअ सबद दी अगली शब्द फड़ाइंदा। किसे हत्थ अञ्जील किसे हत्थ बाईबल शास्त्र सिमरत वेद पुरान किसे पढ़ा गीता ज्ञान, त्रलोकी नाथ वंड वंडाइंदा। किसे मार बाणी नाम बाण, अणियाला तीर चलाइंदा। आप बैठा हो बेपछाण, बेख़बर ख़बर आपणी आप समझाइंदा। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग देंदा रिहा दान, सरगुण आपणा हुक्म मनाइंदा। कलिजुग अन्त प्रगट होया आण, प्रभ आपणा वेस वटाइंदा। साचे तख़त बहे नौजवान, तख़ता सर्ब उलटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जगत तख़त दए गवा, भगत सिँघासण दए बिठा, आसण अबिनाशन आप लगाइंदा।

सत्त नाल लग्गे वीह, बीस बीस ध्यान लगाईआ। सिँघासण कहे प्रभ मैं तेरे चरन लग्ग जावां जी, जीवण मेरी झोली पाईआ। जन भगतां घर खुशी वखावीं तीं, त्रिंजण इक्को वार लगाईआ। सृष्ट सबाई पुट्ट दे नींह, जड़ रहण किसे ना पाईआ। वख वख करदे बक्करी शींह, शेर आपणा रूप वटाईआ। जन भगतां उपर थीं, थापड़ थापड़ गोद सुलाईआ। मनमुख दोंह हत्थां दे धरींह, शौह दरयाए आप रुड़ाईआ। अग्गे बीज सच्चा बी, फुलवाड़ी भगत इक्क महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्त वीह सति सतिवाद दूआ निरगुण सरगुण दाद सिफ़रा मेटे सर्ब सुआद, सिफ़र सिफ़र सिफ़र सर्ब लोकाईआ। (१३ फग्गण २०१६ बि)

सिकल : महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रेम प्यार प्रीती नाल अन्दरों बाहरों करके सिकल, सोहणा रंग दए चमकाईआ। (२५ पोह २०२१ बि) (साफ करन दी क्रिया)

सोहँ : सोहँ शब्द मैं आप लिखाऊं। जुग चार इस दा जाप कराऊं। (१४ भादरों २००६ बि)
सोहँ शब्द हरि भगत भंडारा। आत्म प्रकाश मिटे देह अन्धयारा। (१३ माघ २००७ बि)

सोहँ शब्द हरि का रूप आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद लोक परलोक ब्रह्मा विष्न शिव करोड़ ततीस सुरपत राजा इन्द गण गंधरब लक्ख चुरासी भूत प्रेत सभ ने कहणा, हरि साचा दए जणाईआ। (१ पोह २०१७ बि)

तूं मेरा मैं तेरा सोहँ शब्द सच ज्ञान, आदि जुगादी प्रभ दी धार चलाईआ। (१३ सावण श सं २)
तूं मेरा मैं तेरा दस्से ढोला, सोहँ शब्द इक्क समझाईआ। (४ हाढ़ श सं ६)

सोहँ शब्द गोबिन्द धार, पिता पूत वडयाईआ। दसम ग्रन्थ करो विचार, अन्तम अंक लेखा गिआ लिखाईआ। चिला तीर कमान भथ्था होए मेरी कटार, सोहँ शब्द वड्डी वडयाईआ। सृष्ट सबाई मारे मार, कलिजुग अन्तम वेस धराईआ। हँ ब्रह्म पावे सार, पारब्रह्म सच्चा शहनशाहीआ। मेल मिलाए पुरख अकाल, दीन दयाल इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ रूप रूप दरसाईआ ।
सोहँ रूप सच समाया, हरि साचा खेल खलाईआ। आदि अन्त आपणे विच्च समाया, आपणा वेस वटाईआ। निरगुण सरगुण हो हो नानक गाया, सोहँ शब्द एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकारा कर पसारा, सोहँ धारा आप चलाईआ। सोहँ धार खेल संसारा, पुरख अकाल आप चलाइंदा। आपे होए वेखणहारा, अजूनी रहित वेस वटाइंदा। वसणहारा सच दुआरा, दर घर साचे सोभा पाइंदा। कलिजुग करे पार किनारा, चार जुग मूल चुकाइंदा। सतिजुग साचा करे वरतारा, सृष्ट सबाई आप समझाइंदा। सोहँ शब्द वरते वरतारा, लक्ख चुरासी झोली पाइंदा। लक्ख चुरासी बोले इक्क जैकारा, निशअक्खर आप पढ़ाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोहँ लोकमात आप प्रगटाइंदा। सोहँ शब्द मात प्रगटाया, सतिजुग साचे दए वडयाईआ। चारे वरनां दए समझाया, एका मंत्र दए वडयाईआ। पुरख अकाल अतुट इक्क रखाया, हँ रूप सर्ब लोकाईआ। सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण इक्क मरदंग वजाया, वजावणहार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोहँ शब्द सचखण्ड हरि पाई वंड, सतिजुग साचे झोली रिहा भराईआ। (६ माघ २०१७ बि)

आपणा नाउँ हरि समझाए, वेला अन्तम आप दरसाइंदा। सोहँ शब्द हरि साचा उपजाए, ना कोई मेट मिटाइंदा। सोहँ रूप निरगुण सरगुण खेल खलाए, आदि जुगादि आपणी रचना

आप रचाइंदा। महाराज निरगुण आपणा ख़ताब वड्डिआए, शेर सिँघ सरगुण वेस वटाइंदा। अन्तम ख़ाकी ख़ाक समाए, विष्नूं तेरा मेला मेल मिलाए, आपणी धारा आप चलाइंदा। विष्नूं रूप साकार हरि रघुराए, भगवन भगवान जोती जोत रुशनाए, रूप रेख ना कोई वखाइंदा। (१ पोह २०१७ बि)

गुरमुखो सोहँ ढोला पढ़ोगे। प्रभ सच्चे दा लड़ फड़ोगे। पुरख अगम्म दुआरे वड़ोगे। ना जीओगे ना मरोगे। ना रोवोगे ना डरोगे। ना डिगोगे ना मुड़ोगे। प्रभ सच्चे दा दर्शन करोगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआरे साचे खड़ोगे।
सच दुआरे जावांगे। सो पुरख निरञ्जण धिआवांगा। अलक्ख अलक्ख ढोला इक्क सुणावांगे। लक्ख चुरासी नालों हो के वक्ख, भगतां विच्च मिल जावांगे। एथे आपणी लज्जया रक्ख, अग्गे आत्म परमात्म नाल परनावांगे। परमात्मा नाल मिल के नहीं करनी बस, उहदी छाती उत्ते डेरा लावांगे। जिंनां चिर फड़े ना बोल के हस्स, आपणी अक्ख ना कोई बदलावांगे। जा के कहीए इक्क घर रहीए ढोला गाईए इक्क दूजे दा जस, सोहँ रूप फेर वखावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचे सोभा पावांगे। (२२ वसाख २०२० बि)

रिख मुन कहण नाम सोहँ चंगा, सुण सुण खुशी मनाईआ। जिस वेले भीलणी कोलों सरोवर कराया चंगा, राम एहो नाम पढ़ाईआ। जिस वेले दरोपत पड़दा होण लगा सी नंगा, ओस वेले कृष्न एहो आवाज़ सुणाईआ। जिस वेले कबीर डुब्बण लग्गा सी गंगा, ओस वेले एहो राग अलाईआ। जिस वेले रविदास टुट्टे पाहन लावे गंढां, ओस वेले एहो नाम धिआईआ। जिस वेले नानक निरगुण सरगुण बण के आया बन्दा, बन्दगी एहो नाम धिआईआ । जिस वेले गोबिन्द पुरख अकाल लाया अंगा, ओस वेले गोबिन्द एहो नाम धिआईआ। जिस वेले भगत जहान होण लग्गे रंडा, ओस वेले एहो नाम आस रखाईआ। एसे कारन रिखी मुनी कहण श्री भगवान होया बख्शंदा, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। सिध्धा आपणा जपा के छन्दा, मुशंदगी सभ दी दिती मिटाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेख चुका के जेरज अंडा, उत्भुज सेतज चारे खाणी पन्ध दिता मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा आत्म अनन्दा, अनन्द अन्तर आत्म आपणा आप जणाईआ। (६ मध्घर २०२१ बि)

सोहँ रूप : सोहँ रूप आदि अन्त, निरगुण निरगुण खेल वखाईआ। सोहँ रूप जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी नेंह रखाईआ। सोहँ रूप नार कन्त, जोती जाता वड वडयाईआ। सोहँ रूप विष्न ब्रह्मा शिव बणाए बणत, घड़न भन्नणहार रिहा दरसाईआ। सोहँ रूप लक्ख चुरासी जीव जंत, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। सोहँ रूप भगत भगवन्त, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ । सोहँ रूप साचे सन्त, पारब्रह्म प्रभ एका रंग वखाईआ । सोहँ रूप खेल बेअन्त, भेव कोई ना पाईआ । सोहँ रूप गुर अवतार पीर पैगम्बर मंत, मंत्र नाम दृढ़ाईआ।

सोहँ रूप इक्क इकल्ला साचा पंडत, दो जहानां करे पढ़ाईआ। सोहँ रूप सदा अखण्डत, खण्ड खण्ड ना कोई कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप समझाईआ।

सोहँ रूप हरि का रंग, सो पुरख निरञ्जण आप चढ़ाइंदा। सोहँ रूप हरि का मरदंग, सो पुरख निरञ्जण आप वजाइंदा। सोहँ रूप हरि का सेज पलँघ, सो पुरख निरञ्जण आप सुहाइंदा। सोहँ रूप हरि का अनन्द, सो पुरख निरञ्जण आप हंढाइंदा। सोहँ रूप हरि का चन्द, सो पुरख निरञ्जण आप चमकाइंदा। सोहँ रूप हरि का छन्द, सो पुरख निरञ्जण आप गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कमाइंदा। सोहँ रूप सतिगुर धार, देवे वड वडयाईआ। सोहँ रूप गुर गुर प्यार, गुर गुर दे जणाईआ। सोहँ रूप शब्द आधार, शब्दी शब्द शब्द शनवाईआ। सोहँ रूप भगत भंडार, श्री भगवान झोली पाईआ। सोहँ रूप निरगुण सरगुण लै अवतार, लोकमात वेस वटाईआ। सोहँ रूप पंज तत्त करे पसार, काया मन्दर अन्दर डेरा लाईआ। सोहँ रूप रसना जिह्वा करे गुफ़तार, अक्खर वक्खर नाल मिलाईआ। सोहँ रूप रहे जुग चार, जुग चौकड़ी ना मरे ना जाईआ। सोहँ रूप, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ प्रगटाईआ। सोहँ रूप सदा सुहेला, सद सद आपणी खेल कराईआ। सोहँ रूप साचा मेला, तेरा मेरा भेव मिटाईआ। सोहँ रूप गुरू गुर चेला, चेला गुर वेख वखाईआ। सोहँ रूप सद वसे नवेला, नज़र किसे ना आईआ। सोहँ रूप राए धर्म दी कट्टे जेला, जिस जन आपणे नेत्र नैण वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या दए समझाईआ।

सोहँ रूप सदा अनोखा, अव्वलड़ी कार कमाइंदा। सोहँ रूप आदि अन्त ना कोई धोखा, निरगुण निरगुण आपणी वंड वंडाइंदा। सोहँ रूप लेखा जाणे कोटन कोट ब्रह्मण्ड खण्ड निर्मल जोता, जोती जाता वेस वटाइंदा। सोहँ रूप आलस निंदरा विच्च कदे ना सोता, सोया लोकमात उठाइंदा। सोहँ रूप, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप धराइंदा।

सोहँ रूप सति स्वच्छ, सति सरूपी आप जणाईआ। सोहँ रूप सदा अभक्ख, भाख्या करे सर्ब लोकाईआ। सोहँ रूप सदा अलक्ख, अलक्ख निरञ्जण ढोला गाईआ। सोहँ रूप सदा वक्ख, पुरख अबिनाशी आपणे हत्थ रखाईआ। सोहँ रूप हरि भगतां देवे दस्स, दूजे समझ कोई ना आईआ। सोहँ रूप श्री भगवान निरगुण हो के अन्दर जाए वस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप समझाईआ।

सोहँ रूप सदा अनमोला, अनमुलड़ी कार आप कराइंदा। कलिजुग बणे भगत वचोला, बण वचोला आपणी सेवा लाइंदा। जन्म कर्म जो बणया रिहा गोला, तिस आपणा भेव खुल्ह़ाइंदा। वेखणहारा काया चोला, कूड़ा कण्पड़ परे हटाइंदा। अन्दर वड़ के गाए ढोला, सोहँ साचा राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा एका खोल्ह़ा, जन भगतां वेख वखाइंदा।

सोहँ कहे मैं भगतां दास, दासी आपणा रूप वटाईआ। नित नवित्त वसां पास, सगला संग रखाईआ। किरपन करां अरदास, बेनन्ती दोए जोड़ सुणाईआ। गुरमुख मिलण दी

सदा प्यास, प्रीतम हो के ध्यान लगाईआ। कलिजुग अन्तम कर प्रकाश, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग अन्तम वेखण आया आपणी शाख़, शनाख़त आपणे हत्थ रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ आपणा नाद वजाईआ। सोहँ रूप सच्चा हरि, नाद अनादी आप वजाइंदा। कलिजुग अन्त सुणन ब्रह्माद, ब्रह्मांड ध्यान लगाइंदा। पुरख अबिनाशी जुग जुग दास, जन भगतां करे सदा विस्माद, विस्मादी आपणी खेल कराइंदा। निरगुण हो के देवे दाद, सरगुण झोली आप भराइंदा । गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पिछला लेखा कराए याद, याददाशत भुल्ल कदे ना जाइंदा। जिस लक्ख चुरासी खेड़ा कीता आबाद, सो अन्तम वेखण आइंदा। जन भगतां सुण फरयाद, बेपरवाह वेस वटाइंदा। अन्दर वड़ के करे लाड, बाहरों नज़र किसे ना आइंदा । एका राग सुणाए बिन रसना जिह्वा सवाद, आत्म परमात्म परमात्म आत्म नाद वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ ढोला आपे गाइंदा।
सोहँ ढोला हरि हरि गा, गोबिन्द देवे वडयाईआ। भगतां बणे मात मलाह, जगत जुगत सरनाईआ। साचे मार्ग दए लगा, दर दरवाज़ा इक्को इक्क खुलाईआ। रहबर हो के मिले आ, रहमत सच कमाईआ। साहिब हो के करे सच निआं, सच अदालत इक्क लगाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों जन भगतां फड़े आपे बांह, फड़ बांहों लए उठाईआ। सच जणाए आपणा नां, नाउँ निरँकारा आप समझाईआ। जो जन सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ढोला रहे गा, तिन्नां जै जैकार दो जहान रहे कराईआ। (२२ जेठ २०२० बि)

पुरख अकाल किहा मेरा गोबिन्द नाल कौला, जिस वेले आवां उपर धौला, तेरा मेला सहज सुभाईआ। उह भगतो तुहाढ्ढा विचोला, सेवक सेवा वाला गोला, मौला वाला मौला, हरि करता नाल रखवाईआ। बिन गोबिन्द बिन मेरे कोई रूप बणे ना सोहँ शब्द ढोला, अक्खरां वाला शब्द कम्म किसे ना आईआ। गुरमुखो, बिना गोबिन्द सच प्यार दा खेले कोई ना होला, हुलीआ बदल के कुल्लीआं विच्च डेरा कोई ना लाईआ। (२१ पोह २०२१ बि)

दोए जिह्वा धुर फ़रमाना, हरि साचा सच जणाईआ। इक्क सुणावा साचा गाणा, भुल्ल कदे ना जाईआ। सोहँ रूप विष्नूं भगवाना, बाशक हरि हरि आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वस्त अमोलक झोली पाईआ। (२३ जेठ २०१८ बि)

धुर फ़रमाणा श्री भगवन्त, एका एक जणाईआ। नारी मिले साचा कन्त, साचा रंग आप रंगाईआ। पंज तत्त चोली चढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। सोहँ रूप श्री भगवन्त, ब्रह्म पारब्रह्म दए समझाईआ। (१ हाढ़ २०१८ बि)

साचा नाम वड्डा वड, हरि जू आप बणाया। आपणे विच्चों आपा कढ्ढ, सोहँ रूप प्रगटाया। निरगुण सरगुण आपे सद्द, आपणे कोल बहाया। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्म आपणा रूप धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आप उपजाया। (७ माघ २०१८ बि)

सन्त : हरि सन्त : सन्त रूप जो जाणे सति। सन्त की कोई विरला जाणे गत। सन्त सहाई आप प्रभ रक्खे पति। सन्त उपजाई प्रभ आत्म साची मत। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, एका जोत जगाई तत्त। सन्त सो जो सत विच्च रिहा। सन्त सो जो थिर घर बह रहा। सन्त सो जिस प्रभ दरस दे रिहा। सन्त सो जिस महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा दिस रिहा।

सन्त प्रभ एका जोत। सन्तन प्रभ चरन प्रीती साची गोत। एक अधार धरे सन्त आत्म जोत। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब खुल्ह़ाए सन्तन सोत।

भेख भिखारी जो होए सन्त। दुष्ट दुराचारी सो महंत। प्रभ करे खुआरी वार अन्त। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, मिटावे भेख विच्च जीव जंत। माया लोभी रसना हलकाए। सन्त भेख कल रहे वटाए। साची भिख्खया प्रभ दर कोई विरला मंगण जाए। करे डण्डौवत साचे घर, प्रभ साचा नाम दवाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, दर आए आस पुजाए। बाणा धार सन्त जन जीव धरो कमाए। नाम कहाए भगत जन, कलिजुग भरम भुलेखे पाए। लाए भबूती बणे सन्त जन, ना दीसे हरि राए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग झूठा भेख मिटाए। भेखाधारी भेख वटाइण। सन्त जनां कलंक लगाइण । विषे विकार विच्च कल फस जाइण। बुध सुध तन सभ भुलाइण । महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, दुष्टां आया नशट कराइण। (६ सावण २००८ बि)

हरि सन्त इक्क जान। हरि सन्त इक्क अस्थान। हरि सन्त इक्क ज्ञान। हरि सन्त इक्क ध्यान। हरि सन्त इक्क इशनान । हरि सन्त एका इक्क मान। हरि सन्त एका एक रक्ख टेक हरि भगवान। हरि सन्त हरि का दास। हरि का दास सदा अबिनाश । हरि का दास हरि आप आपे रक्खे वास। हरि का दास अन्त एका नित रसना गाए, आप बणाए बणत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना गाण मिले साचा कन्त। सन्त रंग सद रंगीला। आपे रंग कर कर हीला। साचा नाम प्रभ दर मंगे देवे हरि भर प्याले पी ला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ घोड़ा देवे छैल छबीला।

हरि सन्त हरि वेख विचार। हरि सन्त हरि शब्द अधार। हरि सन्त कर हरि प्यार। हरि सन्त हरि आप खुल्ह़ाए दसम दवार। हरि सन्त हरि आप उपजावे एका शब्द धुनकार। हरि सन्त सच धाम रहाए, पूरन ब्रह्म कर्म विचार। हरि सन्त हरि का दास। जन सन्तां हरि वसे पास। आदि अन्त आदि अन्त आदिन अन्ता प्रभ अबिनाशी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्तां करे बन्द खलास। (१२ जेठ २०१० बि)

हरि सन्त हरि हरि जाणे। हरि सन्त हरि आप पछाणे। हरि सन्त हरि आप चलाए आपणे भाणे। हरि सन्त हरि पहनाए शब्द बाणे। हरि सन्त हरि आप बणाए विच्च मात सुघड़ सिआणे। हरि सन्त हरि आप उठाए, अन्तम कल बाल अंञाणे। हरि सन्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे चरन ध्याने।

हरि सन्त हरि रंग वेख। हरि सन्त प्रभ अबिनाशी धारे भेख। हरि सन्त मिल साचे कन्त चल आओ माझे देस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे विच्च प्रवेश।

हरि सन्त वेखो जाणो। हरि सन्त प्रभ अबिनाशी रंग पछाणो। हरि सन्त ना जाणा भुल्ल, गुरमुख साचे बण निधानो। हरि सन्त बणाए बणत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानो। हरि सन्त हरि का रूप। हरि सन्त सन्त हरि एका दर एका घर दिसे सति सरूप। हरि सन्त आदि अन्त जुगा जुगन्त महिंमा जगत अनूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दात झोली पाए साचा शब्द बणाए दूत। (१७ मध्घर २०१० बि)

हरि सन्त हरि शब्द अधार। (१२ जेठ २०१० बि)

हरि सन्त हरि का रूप। हरि सन्त सन्त हरि एका दर एका घर दिसे सति सरूप। हरि सन्त आदि अन्त जुगा जुगन्त महिंमा जगत अनूप। (१ मध्घर २०१० बि)

हरि सन्त सतिगुर रूप है, सतिगुर विच समाए। सतिगुर वड्डा शाहो भूप है, देवणहार सबाए। ना कोई रंग ना कोई रूप है, महिंमा अनूप गणी ना जाए। (६ चेत २०१३ बि)

हरि सन्त हरि नाउँ है, पंज तत्त ना मूल। किसे नगर ना वसे शहिर गराउँ है, गुरसिख ना जाणा भूल। (२७ पोह २०१३ बि)

जो गुर अवतार पीर पैगम्बर दी चरनी रिहा डिगदा, उहनूं इशारे नाल समझाईआ। ओन्नां चिर श्री भगवान कदे ना रीझदा, जब तक्क जन भगत साचा सन्त ना रूप वटाईआ। उह किसे दे उत्ते नहीं पतीजदा, हुक्म सणौन वाले सारे ओसे दा राह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सुलतान वडी वडयाईआ। (१४ पोह २०२१ बि)

सम्मत शहनशाही : पीर पैगम्बर कहण दस्स की अग्गे होणा, शास्त्र सिमरत बैठे पन्ध मुकाईआ। चार कुण्ट पिआ रोणा, हौकयां विच्च लोकाईआ। परवरदिगार तैनूं किधरों सुझे सौणा, खुशीआं सिँघासण आसण डेरा लाईआ। लक्ख चुरासी जीव जंतां दुरमत मैल दाग़ किन्न धोणा, पत्तत्त पुनीत पवित कराईआ। पवण रूप तेरा सुत धारे सोहणा, सोहणा रंग रंगाईआ। पुरख अकाल कहे उह मेरे वरगा होणा, ना कोई पिता ना कोई माईआ। जिस ने सतिजुग साचा बीज बोणा, गुरमुख बूटे घर घर लए उपजाईआ। धुर दा ढोला इक्को गाउणा, जीव जंत करे पढ़ाईआ। आत्म सेजा सभ दी सौणा, सोहणा आसण हंढाईआ। भेव अभेदा आप खुल्ह़ाउँदा, अगला लेखा दए जणाईआ। पिछली इक्की इक्कीआं विच्च रलाउँणा, अगली सिक्खी सिख्या विच्च प्रगटाईआ। अन्तम सदी आपणी प्रगट करे उह चिठी, जिहड़ी पुरख अकाल हत्थ फड़ाईआ। उह अक्खरां नालों बारीक धार नालों निक्की, निक्कयां विच्चों निक्की नज़री आईआ। जिस दे उत्ते प्रभ सम्मत दी लिखी लिपी, सतरां नाल कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां देवे मती, मतलब आपणा हल कराईआ।

प्रभ सम्मत सोहणा संन, बिक्रमी ईसवी हिजरी सारे देणे मिटाईआ । जिस विच्च हिंदू मुसलम सिख ईसाई सारे इके नूं कहण धन्न, धन्न धन्न तेरी वडयाईआ। आत्म परमात्म ज़ाहर बातन दोवें लैण मन्न, ज़ाहर करन रुशनाईआ। सच संदेशा सुणन आपणे कन्न, धुर दा नाद करे शनवाईआ। सति धर्म दा उपजे चन्न, अन्ध अन्धेर गवाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां बेड़ा देवे बंनू, पत्तण बह के वेख वखाईआ। हरि का सम्मत दो जहान लैण मन्न, दर ठांडे बैठण सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवादी लए प्रगटाईआ।

हरि का सम्मत हरि ही जाणे, जानणहार अखवाइंदा। अक्खरां विच्च ना कोई परवाने, सृष्टी विच्च ना कोई समझाइंदा। सतिजुग साची खेल महाने, हरि करता कार कमाइंदा। जिस वेले साचयां भगतां गुरमुखां गुरसिखां धर्म सिखी दे आपणे हत्थीं बंनू गाने, मौली तन्द नज़र कोई ना आईआ। सति धर्म दा झुल्ले निशाने, नव सत्त सोभा पाईआ। ओस सम्मत नूं सारे करन परनामे, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जिस दा लेख लिखे सभ तों पैहले विष्नूं भगवाने, विश्व शांत कराईआ। किसे माण ना देवे काई काने, अपणीआं उंगलां नाल बणत लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां हत्थ फड़ा के उह परवाने, जिनूं परवानिआं दा मालक आप अखवाईआ।

प्रभ दा सम्मत जिस वेले आया, लोकमात वज्जे वधाईआ। मुख छुपाए त्रैगुण माया, पंज तत्त ना करे लड़ाईआ। वरनां बरनां डेरा ढाया, ज़ात पात ना कोई रखाईआ। सारे कहण पुरख अकाल पिता माया, लक्ख चुरासी ओसे दा नूर नज़री आईआ। जिस ने गोबिन्द सुत दुलार शब्द जाया, आपणी गोद उठाईआ । जो आदि जुगादि बण के दाई दाया, सो आपणा खेल खिलाईआ । जिस सति धर्म दा सम्मत चलाया, ओसे दी वज्जी वधाईआ। उह ठाकर उह पीर उह सतिगुर अखवाया, ख़ालक बेपरवाहीआ। बेनज़ीर नज़र किसे ना आया, तस्वीरां विच्चों तस्वीर ना कोई घड़ाईआ। जागीरां विच्चों जागीर आपणे नाम ना कोई बणाया, सभ दे हिरदयां विच्च बह बह खुशी वखाईआ। जिस दा अदल अदालत विच्चों सभ नूं भाया, भरम भुलेखा सभ दा दूर कराईआ । जिस तरा परम पुरख बिना तत्तां आपणा चोला बदल के आया, एसे तरा आपणा सम्मत दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणा मार्ग लाईआ।

सम्मत कहे की मेरा समां, प्रभ सच नेड़े आईआ। मैं वेखी रोंदी हवा अंमा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। आदम नूं की कुझ कहवां, कह की सुणाईआ। किस दे दवारे ढवां, किस दे लागाँ पाईआ । किस दीआं पकड़ां बाहवां, किस दे कंधे आपणा भार सुटाईआ। किस दी चरन धूड़ नहावां, किस दा अमृत रस पी पी खुशी मनाईआ। किस दे विहड़े चल के आवां, आपणा पन्ध मुकाईआ। ओस वेले वक्त दा राह तकावां, जिस वेले प्रभ आपणा सम्मत दए लगाईआ। मैं जा के समझावां सर्ब मावां, नारी हो के नारी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। (२४ भादरों २०२१ बि)

सम्बल : गुर गोबिन्द एह बचन लिखवाया। सम्बल देस वास रखवाया। ज्ञानी ध्यानी वड विदवानी भाल थक्के, तेरा किसे भेव ना पाया। सम्बल देस केहड़ा वेस केहड़ा भेस, ना भेव किसे खुल्ह़ाया। जोती जोत सरूप हरि, पंचम जेठ माझे देस, गुर गोबिन्द तेरा पिछला लेखवा दए चुकाया।

सभना पाए सार, निहकलंक लै अवतार, गौड़ ब्रह्मण जो अखवाया । वेद व्यास, सर अमृत तेरे वस्से आस पास, पंचम जेठ गुर नानक तेरा लग्गा खेत, गुरसिखां पूरी करे आस, सम्बल देस सूरबीर। उठे जोधा इक्क चलाए शब्द तीर। सृष्ट सबाई अगाध बोधा, आप मिटाए पीर फ़कीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे सन्तां देवे शब्द धीर।

सम्बल देस सार समाले। गलों लाहे सूसे काले। पैहलों पहने चिट्टे बाणे। गुरमुख बणाए साचे राणे। शब्द फड़ाए तीर कमाने। खिच्चे रसना वाली दो जहाने। गुर गोबिन्द तेरे लिखे बचन, हरि पूरे पूर कराने। जोत सरूपी जामा धार, अचरज खेल मात करे, बेमुखां मारे बेमुहाने। सम्बल देस सिधा राह। राहे देवे पा। अग्गे हरि जी नरायण नर खलोता, नेत्र खोल्ह़ दए दिखा। कलिजुग जीव जो गूड़ी नींद रिहा सोता, ना मिले कोई थां। आदि अन्त जुगा जुगन्त एका जोत हरि पुरख निरञ्जण होता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लाल अनमुलड़े संसार सागर डूंघर विच्चों लभ्भे, मारया एका गोता। (१२ चेत २०११ बि)

माझा देस गुर गोबिन्द लिखवाया। कलिजुग भेव किसे ना पाया । सम्बल देस हरि दरवेश, जोत सरूपी खेल रचाया। भुल्ले फिरदे नर नरेश, वड मरगेश, भरम भुलेखे जगत भुलाया। जन भगतां देवे शब्द संदेश, संग रलाया। गुरमुख साचे विच प्रवेश, खुल्ल्ह़े रक्खे सदा केस, सतिजुग साचा राह वखाया। भुल्ले फिरदे ब्रह्मा विष्न महेश, तिन्नां लोकां दिस ना आया। निहकलंकी अन्तम कलिजुग कर कर वेखे वेस, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राओ राजान शाह सुलतान किसे हत्थ ना आया। (१६ हाढ़ २०११ बि)

सस्सा सुरती सुरत ज्ञाना। अठ्ठे पहिर रक्खे वास, चतुरभुज श्री भगवाना। गुरमुख विरले मात लाधा, किरपा करे जिस महाना। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर दस्मेश सम्बल देस आप आपणा वास रखवाना।

सम्बल देस नगर अपार, ना कोई जाणे दीप लो। खण्ड मण्डल पताल, हरि बिन अवर ना जाणे को। ज्ञानी ध्यानी वड विद्वानी पढ़ पढ़ थक्के भाल, सम्बल देस प्रभ निरञ्जण सो। जोती रक्खे साचे थाल, बब्बा बसतर पहरे, ना सके कोई धो। ना कोई जाणे नीला सूहा पीला भूशन लाल, लक्ख चुरासी अन्तम कल रही रो। किसे ना दिसे धुर दरगाही सच दलाल, गुरमुखां दुरमत मैल रिहा धो। अमृत नुहाए साचे ताल, सोहँ रस रिहा चो। दसम दुआरी मार उछाल, सुन अगम्म ना जाणे को। कवण सु वेला वज्जे ताल, तुरीआ देस वेस प्रभ आए हो। निशअक्खर वखर ओअंकारा, आपणी धारा आपे रिहा परो। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड दवारा सति पुरख अनादा, लक्ख चुरासी एका बीज रिहा बो। (१० जेठ २०१२ बि)

सच संदेसा दो जहान, दो जहानां वाली आप जणाइंदा। निहकलंक हो नौजवान, नौबत आपणे नाम वजाइंदा। सम्बल वसे सच मकान, छप्पर छन्न ना कोई छुहाइंदा। समुंद सागर विरोले आण, नाम मधाणा इक्को पाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव होए हैरान, हरि का भेव कोई ना पाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुरान ढोले गाण, सिफ्त विच्च कदे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा।

साची करनी करे करतार, सो पुरख निरञ्जण वेस वटाईआ। निरवैर पुरख लै अवतार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। साढे तिन्न हत्थ मन्दर मनार, महल्ल अट्टल दए वडयाईआ। सम्बल इक्को घर बार, गोबिन्द शब्दी रूप वटाईआ। परम पुरख मीत मुरार, मित्र प्यारा इक्को नज़री आईआ। सत्थर वेखे हंढाया यार, लग्गी यारी तोड़ निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरे रिहा मंगाईआ। (२७ फग्गण २०१६ बि)

सम्बल नगर हरि का मकान, इट्ट गारा पत्थर ना कोई लगाइंदा । जिस गृह वसे श्री भगवान, सो सम्बल नाउँ धराइंदा। बिन गुर गोबिन्द कोई ना सके पहचाण, लक्ख चुरासी खोज खुजाइंदा। जिस हरिमन्दर हरि का झुल्ले निशान, सो सम्बल नाउँ धराइंदा। ना ज़िमी ना असमान, चौदां तबक ना वंड वंडाइंदा। चौदां लोक होए हैरान, वेद व्यासा मुख शरमाइंदा। ईसा मूसा राह तकाण, नेत्र नैण सर्ब उठाइंदा। मुहम्मद वेखे मेरा अमाम, किस मन्दर डेरा लाइंदा । नानक निरगुण दस्स के गिआ ज्ञान, सच संदेसा इक्क सुणाइंदा । निहकलंक महांबली उतरे आपे आण, मात पित ना कोई बणाइंदा । गोबिन्द कहे कल कलकी जोधा सूरबीर बली बलवान, जिस दा अन्त कोई ना आइंदा। सो सम्बल वसे आण, जिस घर गोबिन्द आसण लाइंदा। गोबिन्द शब्द रूप महान, जगत नेत्र वेख कोई ना पाइंदा। साढे तिन्न हत्थ देवे दान, लेखा जाण दो जहान, कोटन कोट ब्रह्मण्ड चरनां हेठ दबाइंदा। सो सम्बल होए परवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्बल नगर गोबिन्द खेड़ा, जिथ्थे करे ना कोई झेड़ा, वेहड़ा नज़र किसे ना आइंदा।

सम्बल नगर उच्च मनारा, हरि सतिगुर आप बणाईआ। निरगुण दीपक बाती जोती कर उजिआरा, इक्को डगमगाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, जै जैकार सुणाईआ। तख़त निवासी शाह सिकदारा, भूपत भूप आसण लाईआ। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतारा, सच संदेसा दए सुणाईआ। कलिजुग अन्तम पार किनारा, लोकमात रहण ना पाईआ। सतिजुग लग्गे विच्च संसारा, साहिब सतिगुर होए सहाईआ। चार वरन दा इक्क विहारा, एका सरन तकाईआ। एका मन्दर एका मस्जिद एका मट्ठ शिवदुआला इक्को गुरूदुआरा, जिस घर गुर गोबिन्द आपणा चरन छुहाईआ। हरि मन्दर खेले खेल नयारा, डूंघी कंदर फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि मन्दर बहे आपे वड़, सम्बल आपणा डेरा लाईआ।

अनन्द अन्दर मिले अनन्द, अनन्द अमरदास गुरू समझाईआ । जिस जन सतिगुर गाया छन्द, शंका कोई रहण ना पाईआ। कूड़ी क्रिया मुक्के झूठा गंद, सच सुच्च मिले वडयाईआ। जुग जन्म दी टुट्टी गंढ, सुरती सतिगुर सरन परनाईआ। लहणा देणा चुक्के बत्ती दन्द,

आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए साचा घर, सो गुरमुख अनन्द विच्च समाईआ।
अनन्द विच्च मिले अनन्द, अनन्द सतिगुर हत्थ रखाया। गुरमुख घर गुरसिख चन्द, गुर सतिगुर आप चढ़ाया। हरिजन नाम इक्को वंड, वस्त अमोलक झोली पाया। गृह मन्दर घर निज आत्म मिले परमानंद, सुख आत्म अनन्द रूप वटाया। (४ माघ २०१६ बि)

गोबिन्द कहे प्रभ जिस वेले आवेंगा। की मेरा मेल मिलावेंगा। किस बिध साचा तेल चढ़ावेंगा। बण सज्जण सुहेल, अंग लगावेंगा। धाम नवेल डेरा लावेंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण साची खेल खलावेंगा।
जोत सरूप हो के आऊंगा। निहकलंक अखवाऊंगा। गोबिन्द तेरा शब्द रूप वटाऊंगा। सस्सा बब्बा लल्ला वेख वखाऊंगा। तिन्नां विचोला आप बण जाऊंगा। पर्दा उहला जगत रखाऊंगा। पंज तत्त काया माण दवाऊंगा। पप्पा रारा नंना परन निभाऊंगा। दो दुलैंकड़े दो जहानां वंड वंडाऊंगा। पूरन हो के पतिपरमेश्वर पारब्रह्म अखवाऊंगा। त्रबैणी साक सज्जण सैणी सभ दा लेखा अन्त मुकाऊंगा । जन भगतां दस्सां साची बहणी, काया मन्दर डेरा लाऊंगा। रसना जिह्वा हरि की कथा ना किसे कहणी, आपणी कहाणी आप सुणाऊंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा चुक्के पिछला बैणी, साची करनी आप कराऊंगा।
सम्बल नहीं मकान कोठा, छप्पर छन्न ना कोई वडयाईआ। पंज तत्त होया परमात्मा जोगा, पूरन रंग रंग विच्च रमाईआ। निर्मल जोत जगी जोता, जोत जोत रुशनाईआ। शब्द अनाद वज्जे नाल शौका, सतिगुर इक्को नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

गोबिन्द कहे मेरी इक्को नगरी, दूजी नज़र कोई ना आईआ। जिस विच्च रक्खे हरि जू आप समग्री, वस्त अमोलक इक्क टिकाईआ। जोती जोत जगे इकगरी, इकांत वसे सच्चा माहीआ। नित नवित्त आपणी कथा सुणावे सज्जरी, पिछली कहाणी ना कोई पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी वेखणहारा सभ दी सत्ता करे पधरी, ऊँच नीच ना कोई जणाईआ। मेरी पूरी होवे सधरी, सध्धर आपणे नाल मिलाईआ। सम्बल नगर दी होवे कदरी, जिस दर आपणा डेरा लाईआ। दो जहानां विच्चों नज़र आए वक्खरी, प्रभ वक्खरी दए वखाईआ। कोई बणाए ना इट्टां गारा नाल बजरी, उपर छत ना कोई छुहाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्बल देवे माण वडयाईआ।
सम्बल बणाया आप, नगर खेड़ा आप वसाइंदा। जिस विच्च गोबिन्द करे जाप, ढोला इक्को इक्क गाइंदा। पुरख अकाल बण के माई बाप, साची गोद आप सुहाइंदा। तिस मन्दर विच्च ना दिवस ना रात, सूरज चन्द नज़र ना आइंदा। ना पूजा ना पाठ, हवन आहूती ना कोई वखाइंदा। ना भिखारी ना कोई देवणहारा दात, झोली अड्ड ना कोई जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्बल इक्को इक्क वखाइंदा।
इक्को सम्बल इक्को सतिगुर, इक्को खेड़ा रिहा वखाईआ। इक्को लेखा वखाए धुर, लेखा

आपणे हत्थ रखवाईआ। जोती शब्दी आपे जुड़, मेल मिलावा बेपरवाहीआ। आपे वढ़या साढे तिन्न हत्थ निक्की जेही कुड़, जगत नेत्र नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

गोबिन्द कहे सम्बल अन्दर किस तरां वड़ेंगा। साचे पौड़े किस बिध चढ़ेंगा। मेरा पल्लू किस तरां फड़ेंगा। साचा ढोला किवें पढ़ेंगा। ना जीवेंगा ना मरेंगा। किस आपणी तरनी तरेंगा। भय विच्च कदे ना डरेंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी किवें करेंगा।

पैहलों गोबिन्द लेख लिखावांगा। जोती नूर धरावांगा। शब्दी डंक वजावांगा। सम्बल नगर फेर वसावांगा। काया माटी पोच पोचावांगा। सोच सोच के थान सुहावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कर वखावांगा।

सम्बल नगर जिस वेले बणेगा। सुत दुलारा गुर शब्द प्रभ जणेगा। पुरख अकाल आपणा ताणा तणेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, इक्क दो इक्क तिन्न तिन्न दो इक्क आपे आप बणेगा।

सतिगुर प्यार सदा अनमुल, अनमुलड़ी वस्त जणाइंदा। प्रेम भेटा साचे फुल्ल, हरि सतिगुर इक्को मंग मंगाइंदा। दूजी वस्त ना एहदे तुल, अतोल अतुल आप जणाइंदा। जो जन चरन प्रीती गिआ घुल, तिस आपणा आप सर्ब वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान दी इक्क दस्तार, गुरसिख सिर बंन्नाए कर प्यार, प्यार बंधन इक्को पाइंदा। (२३ चेत २०२० बि)

समुंद कहे जन भगतो तुसीं मेरे भरा ते मेरे वीर, भैणां भईए नज़री आईआ। पर तुहानूं पता मेरा अजे लेखा मेरे विच्च ना अजे कमान सुट्टी ते ना सुटया तीर, सीता रोवे मारे धाहीआ। एह इशारा दे के गिआ सी भगत कबीर, कबीर जुलाहा पाटे जुले विच्च आपणा आसण लाईआ। जिस वेले मेरे महबूब ने नहीं कीती ताअमीर, तरतीब आपणे हत्थ रखवाईआ। ते मनी सिँघ ने लेखा लिख दित्ता उस ने छड्ड जाणा सरीर, जोती जाता हो के आपणा रूप बदलाईआ। सम्बल बैठणा जिस दी मंज़ल उस दी अख़ीर, पूरन विच्च पूरन रूप समाईआ। जिस ने दीन दुनी बदल देणी तकदीर, मुक्कदर सभ दा खोज खुजाईआ। जिस दी दो जहान जगत मिलख जगीर, जगत दा मालक नज़री आईआ। उस दा लेखा बेनज़ीर, नज़ीर ज़हिर दे बूटे वाला सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर मालक वड वडयाईआ। (१३ कत्तक श सं ८)

धर्म कहे नारदा कुछ मैनूं दस्स संदेसा, की साहिब दिता समझाईआ । नारद कहे धर्म जी तूं तक्क अगम्मा देशा, जिस नूं सम्बल सारे गए गाईआ। ओथे बैठा नर नरेशा, नर नरायण नूर अलाहीआ। शब्दी गोबिन्द दस्मेशा, जोती जाता डगमगाईआ। जो सद रहे हमेशा, जन्म मरन विच्च ना आईआ। ओस दे अग्गे सारे हो रहे पेशा, पेशीनगोईआं आपणे हत्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी खेल की खलाईआ।

नारद कहे धर्म जी की दस्सां उस दी कहाणी, कहावत विच्च कदे ना आईआ। की संदेशा देवे शब्द अगम्मी बाणी, जो बन टिल्ले प्रबतां हत्थ किसे ना आईआ। की मंज़ल दस्सां शाह सुलतानी, शहनशाह धुरदरगाहीआ। जो आदि जुगादी सभ दी जाण जाणी, जानणहार वड वडयाईआ। सो भगतां उत्ते करे मेहरवानी, मेहर नज़र उठाईआ। भाग लगा के उन्हां दी पेशानी, पेशतर उन्हां दा भेव खुल्हाईआ। सच प्रीती बख्श महानी, महिंमा कथ कथ दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। (१४ फग्गण श सं ८)

नारद कहे जन भगतो मैं नौवां खण्डां विच्च आया भौं, भरावो दिआं जणाईआ। मैनूं इक्क छोटा जिहा तुहाढ्डे नाल गौं, आपणी आसा दिआं सुणाईआ। जे सच पुछो ते सारयां दा इक्को पिता ते इक्को माउँ, दूजा नज़र कोई ना आईआ। इक्क दूजे नूं सारे फड़ लउ बाहों, विछड़या रहण कोई ना पाईआ। तुसीं आत्मा परमात्मा दी धाार ते इक्को तुहाढ्डा रूप ते इक्को तुहाढ्डा नाउँ, दूजी रेख ना कोई वखाईआ। जगत वासना कर के कोई ना बणयो काउँ, हँस गुरमुख नज़री आईआ। वेखयो प्रभू दे प्यार दा भुल्लयो कदी ना राहों रहबर सतिगुर शब्द लैणा बणाईआ। धुर दे राम नूं मिलणा नाल चाओ, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां दा पन्ध मुकाईआ। बेशक उह मालक अगम्म अथाहो, बेअन्त इक्क अखवाईआ। उह भगतां नूं ज़रूर मिलदा जेहड़ा चले उहदे भाओ, भगती विच्च शक्ती आपणी दए टिकाईआ। पूरन सतिगुर ते पूरन बण जाए शाहो, शहनशाह पूरन रूप बदलाईआ। जिस नूं सारयां कहणा वाहो वाहो, वाहवा तेरी वड वडयाईआ। जे तुहाढ्डा तहाडे प्रभ ने ला दित्ता दाओ, ते दाअ ला के आपणा कारज लउ बणाईआ। दीन दुनी विच्च धक्के मूल ना खाओ, चुरासी विच्च कदे ना आईआ। राए धर्म ना देवे फाहो, फ़ासी जम ना कोई लटकाईआ। मनुशा जन्म पा के जगत नेत्र शरमाओ, भगत नेत्र अन्दरों लउ खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आपणे हत्थ रखाईआ।
नारद कहे भगतो समें दी करो विचार, जुग जुग समें विच्च वडयाईआ। समें विच्च आए पैगम्बर गुर अवतार, समें ने सभ नूं समें विच्च दित्ता भवाईआ। समें दे मालक ने आपणे नाम कलमे दित्ते उच्चार, ढोले जेहवा शब्द नाल जणाईआ। उस समें तों जाओ बलिहार, जिस समें विच्च भगत भगवान होए कुड़माईआ। अज्ज उह समां सतारां हाढ़, जिस नूं हाढ़े कढ्ढुण विष्न ब्रह्मा देवत सुर सारे थाउँ थाईंआ। तुसीं सच पुछो ते तुहाढ्डा आत्मा रूप करतार, करता पुरख तुहाढ्डा रूप समाईआ। तुसीं कदी उस दी जोत तों नहीं बाहर, जो जोती जाता इक्क अखवाईआ। प्रण कर लउ साडा सभ दा इक्को इक्क भतार, नारी रूप सर्ब अखवाईआ। सारयां दा सांझा यार, हिस्से वंड ना कोई वंडाईआ। फेर सच पुच्छो तुहाढ्डा दिवस रैण खिदमतगार, तुहानूं सुत्तयां नूं दर्शन देवे थाउँ थाईंआ। भावें तुसीं उस नूं ठग्ग कहो चोर कहो बदमाश कहो ते कहो कुड़यां दा यार, फेर वी यराना तुहाढ्डे नालों ना कदे तुड़ाईआ। एह पूरन कोई भाण्डा घड़या नहीं घुमिआर, सम्बल नगरी एसे दा नां गोबिन्द गिआ गाईआ। याद रखिओ शाह सुलतानां हिरदे चरनां दी धूढ़ी लभ्भणी शार, लभ्भयां हत्थ किसे ना आईआ। पर इक्क गल्ल याद रक्खयो सम्मत शहनशाही दस विच्च तहाडे घरां दे भाण्डे मांजेगा आप

बण के खिदमतगार, घर घर विच्च पंज बरतन आप करे सफ़ाईआ। तुसां कहणा एह बड़ी चंगी सुचज्जी नार, गुरमुखां ने विआह के लिआंदी चाईं चाईंआ। मुख ते घुंड कढ्ढे किसे नूं पता ना लग्गे बुढ्ढी कि मुटिआर, कि जोबनवन्ती रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा सच इक्को माहीआ।

नारद कहे जन भगतो प्रभू नूं माही कहोगे कि बाप, कि अब्बा अम्मीजान कह के खुशी बणाईआ। जन भगत कहण नारदा सानूं नहीं पता उह साडा केहड़ा साक, ते सज्जण कवण अखवाईआ। जे उहनूं लोड़ आ ते साडे अन्दर दा खोल्ह के ताक, आत्म सेजा उत्ते सोवें चाईं चाईंआ। उहदी कदी भगत दी दुहागण वाली ना होवे रात, कन्त कन्तूहल मिल के वज्जे वधाईआ। शेख़ फरीद ने एनी कही सी बात, शरअ वालयां फतवे दित्ते सी लाईआ। क्यों उस ने आपणे आप नूं किहा सी नार कमज़ात, कुलक्खणी नाउँ धराईआ। कबीर ने किहा मैं ओसे महबूब पिच्छे जे पा जावां वफात, तत्तां ना करां जुदाईआ। मैं मर के वी ओसे दी ज़ात, ज़ात हीण ना कदे अखवाईआ। जन भगतो तुहानूं ते बिनां भगती तों मिल गई दात, पैसा धेला लग्गया नहीं राईआ। बेशक तुहानूं आउण जाण दा खुशीआं विच्च मिल्या इतफ़ाक, आए चाईं चाईंआ। तुहाढ्ढे पिछले जन्म दा लहणा देणा अज्ज कर दित्ता बिबाक, अग्गे लेखा रिहा ना राईआ। सुत्तयां जागदयां शब्द विच्च करांगा बात, संदेसे दिआं सुणाईआ। जे जीअ करया करेगा ते तुहाढ्ढे अन्दर जोत दी दिआं करांगा लाट, लाटां वाली तुहाढ्ढे नाल फिरे चाईं चाईंआ। जे तुसीं आ नहीं सकदे ते मैं पुजया करांगा मार के वाट, आपणा पन्ध मुकाईआ। सतिगुर शब्द कदी बुढ्ढा नहीं हुंदा ते ना कदी एहदा पन्ध हुंदा सटाप, टाप ते बह के सभ नूं वेख विखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ। (१७ हाढ़ श सं ६)

सतिगुर शब्द कहे मैं जावां दिल्ली दवार, धुर फरमाणा इक्क सुणाईआ। शाह सुलतानो आया कल कलकी अवतार, निहकलंका वेस वटाईआ। अमाम अमामा रूप अपार, नूर नुराना नूर अलाहीआ। आपदे वसे सम्बल घर बाहर, साची नगरी डेरा लाईआ। जो सभ दे लहणे देणे रिहा विचार, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। जो भविख्त दस्सया पैगम्बर गुर अवतार, पेशीनगोईआं विच्च दृढ़ाईआ। सो वेखे विगसे पावे सार, महांसारथी आपणा हुक्म वरताईआ। उह खेले खेल कमाल, बुद्धि समझ कोई ना पाईआ। उहदा पता जगत धार जेठूवाल, डाकखाना एहो गाईआ। अमृतसर ज़िले दे नाल, तहिसील एहनां अक्खरां सिफ्त सलाहीआ। उह सम्बल बैठा सुरत संभाल, धुर दा हुक्म इक्क जणाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर वेखे सभ दा हाल, तत्तव तत्त खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक बेपरवाहीआ।

सतिगुर शब्द कहे राष्ट्रपत वाचणी लिखत, प्रधान मंतरी नाल मिलाईआ। जिस दे कोल सति दा भविख्त, भविश जगजीवण राम सुणाईआ। इस ने सति दा सांझा करना इष्ट, इष्ट दृष्ट दृढ़ाईआ। राओ रंकां खोल्हे दृष्ट, अन्दरों पर्दा आप चुकाईआ। जो इशारा दित्ता राम

वशिष्ट, सो पूरा दए कराईआ। तुसां आपणा पक्का करना निसच, निसचा लैणा बणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सिँघ पूरन दे वड़या विच, विचला भेव घर सद्द लउ खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग साची कार कमाईआ। (१७ हाढ़ श सं ६)

कारतक कहे धरनीए मेरी तैनूं वधाई, खुशहाले खुशीआं ढोले गाईआ। तेरे उत्ते नूर नुराना आया धुर दा माही, महबूब अगम्म अथाहीआ। जिस दा नूर ज़हूर करे रुशनाई, दो जहानां डगमगाईआ। उह तक्क लै अवतार पैगम्बर गुर बण के आ गए पान्धी राही, आपणा पन्ध मुकाईआ। इक्ठे होए एका थाईं, हरि भगत दवार वज्जे वधाईआ। तूं आपणा बिन अक्खां नैण उठाई, चारे कुण्ट फिराईआ। बिन रसना ढोले गाईं, आया धुर दा माहीआ। झट धरनी अवाज़ सुणी चाईं चाईं, बिन सरवणां होई शनवाईआ। नव सत सुत्ती पई लई अंगढ़ाई, आप आपणा लिआ जगाईआ। नाले हस्स के किहा मेरे बेपरवाही, तेरी बेपरवाहीआ ।
मैं कद दा राह तकाई, चारे कुण्ट वेख वखाईआ। मैं संदेसा दिता आपणे थल अस्गाही, समुंद सागराँ समझाईआ। टिल्ले परबतां आख्या चाईं चाईं, सोया रहण कोई ना पाईआ। उतर पूरब पच्छिम दक्खण दिता उठाई, आलस निंदरा विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। तुसां निगाह रक्खणी जिस वेले जोती जाता आवे धुर दा राही, बिन कदमां कदम उठाईआ। नारदा मैं उस प्रभू दे शगन रही मनाई, सोहणी खुशी बणाईआ। आपणी मेंढी सीस गुंदाई, सोहणा रंग रंगाईआ। दुरमत मैल धो के शाही, पापां करी सफाईआ। सोहणया नारदा मैं सभ तों वक्खरी चार जुग दी अगम्मी सेज विछाई, जिस नूं सम्बल कह के गोबिन्द गिआ गाईआ। मेरे धन्न भाग जे उस दी होई आवाजाई, आया पन्ध मुकाईआ। मेरा इक्क सुनेहड़ा उस नूं देणा सुणाए, बिन अक्खरां अक्खर दृढ़ाईआ। मैं निमाणी धरनी धरत धवल धौल तेरी धार दी जाई, जिस दा मात पित नज़र कोई ना आईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मेरी अन्तम पकड़ी बाहीं, बिन हत्थां हत्थ छुहाईआ। नारद किहा धरनीए मैं वास्ता देवां पाई, निव निव लागाँ पाईआ। नी उह जल्वागर नूर नुराना खुदाई, खुद मालक इक्क अखवाईआ। सदा आपणी चले रज़ाई, राज़क रिज़क रहीम बेपरवाहीआ। जिस दे हुक्म विच्च दो जहान खुदाई, खुद मालक इक्क अखवाईआ। नी जिंन गोबिन्द नाल कीती सी जुदाई, अन्त मिलावा होया सहज सुभाईआ। हुण पिछला झगड़ा रिहा नहीं ढईआ ढाई, ढौंका ला के गिआ वाहो दाहीआ। उस अगली नवीं खेल रचाई, रचना समझ किसे ना आईआ। निरगुण जोत रिहा चमकाई, जोती जाता बणया धुर दा माहीआ। शब्द संदेशा रिहा सुणाए, अणसुणत रहण कोई ना पाईआ। झट धरनी दोवें उठा के बाहीं, बिन हत्थां ताली लाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ। (पहली कत्तक श सं ११)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪